UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182594

UNIVERSAL
LIBRARY

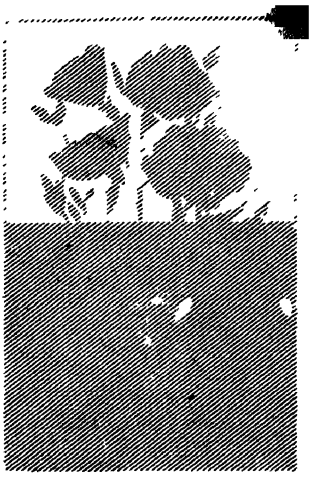
OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 891.08 K94A Accession No. OUGH 2813

Author

Title आधुनिक हिंदी कवयित्रियाँ के प्रेमगीत

This book should be returned on or before the date last marked below.



आधुनिक हिन्दी कवयित्रियों के प्रेम गीत

सम्पादक
क्षेमचन्द्र 'सुमन'

राजपाल
एण्ड
सन्ज़
दिल्ली

प्रथम संस्करण
अगस्त, १९६२

प्रकाशक :
राजपाल एण्ड सन्ज़
पोस्ट बाक्स १०६४, दिल्ली

कार्यालय और प्रेस :
जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२

मूल्य
सात रुपये

बिक्री-केन्द्र :
कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

●

मुद्रक :
शोभा प्रिंटर्स,
१०८९३, ईस्ट पार्क रोड, दिल्ली

ADHUNIK HINDI KAVYITRIYON KE PREM GEET:
KSHEM CHANDRA 'SUMAN' : POETRY

'सखि, वे मुझसे कहकर जाते !
कह, तो क्या मुझको वे अपनी
पथ-बाधा ही पाते !'

और

'मुझे फूल मत मारो !
मैं बाला अबला वियोगिनी,
कुछ तो दया विचारो !'

जैसे अनेक अमर प्रणय-गीतों के स्रष्टा

श्रद्धेय राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

को सादर

यह संकलन

इस संकलन की भी एक कहानी है। 'हिन्द पॉकेट बुक्स' के अन्तर्गत प्रकाशित 'हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ प्रेम-गीत' नामक पुस्तक के सम्पादन के दिनों में ही यह विचार मेरे मन में आया था कि हिन्दी की आधुनिक कवयित्रियों द्वारा लिखित प्रेम-गीतों का भी एक संकलन अलग से प्रकाशित होना चाहिए। परिणामस्वरूप उक्त पुस्तक को प्रेस में मुद्रणार्थ दे देने के उपरान्त मैं जून, १९६१ में इस कार्य में संलग्न हो गया। जब मैंने हिन्दी की आधुनिक कवयित्रियों को इस आशय का एक परिपत्र भेजकर उनसे अपने इस कार्य में सहयोग देने की प्रार्थना की, तो सब ओर से मेरे इस प्रस्ताव का स्वागत ही नहीं हुआ, प्रत्युत सामग्री भी आनी प्रारम्भ हो गई। जुलाई के अन्त में जब मैं अपने पास आई हुई उस सामग्री को कुछ व्यवस्था देने बैठा तो मैंने यह अनुभव किया कि अभी इस कार्य में पर्याप्त परिश्रम और खोज अपेक्षित है। जब सहज भाव से मेरे मानस में इस संकलन का संकल्प उठा था, तब मैंने स्वप्न में भी न सोचा था कि यह इतना गुरुतर और दुरूह कार्य निकलेगा।

मेरा यह विचार था कि इस संकलन में खड़ी बोली-काव्य के क्षेत्र में अवतरित सभी प्रसिद्ध-अप्रसिद्ध आधुनिक कवयित्रियों के प्रेम-गीत ही समाविष्ट न हों, प्रत्युत यह अपनी विशेषताओं के कारण हिन्दी-साहित्य का एक प्रतिनिधि 'आकर ग्रन्थ' भी बन सके। मेरी यह भी भावना थी कि इस संकलन में हिन्दी-काव्य की समृद्धि में योग देने वाली सभी प्रतिष्ठित कवयित्रियों के गीतों का समावेश होने के साथ-साथ उन कवयित्रियों की रचनाएँ भी रहें जो अपने साहित्यिक जीवन में पदार्पण करते समय कभी कविताएँ लिखा करती थीं, और आज किसी कारण-

वश साहित्य की अन्य विधाओं में रचना करके हिन्दी की अभिवृद्धि अपना योग दे रही हैं, या इस क्षेत्र से सर्वथा उपराम ही हो गई हैं।

अपने उक्त विचार को कार्य रूप में परिणत करने के पवित्र उद्देश्य प्रेरित होकर मैं सर्वात्मना इसमें जुट गया और देश के विभिन्न सर पुस्तकालयों में जाकर हिन्दी की नई-पुरानी पत्र-पत्रिकाओं की फा तक छानीं। पहले मैंने उन सभी कवयित्रियों की तालिका तैयार जो पहले से अब तक बराबर खड़ी बोली-काव्य की अभिवृद्धि में अपन सहयोग दे रही हैं, और बाद में उन बहनों की भी सूची बनाई, जो अब विस्मृति की गहन गुहा मे विलीन हो गई है। मेरी इस ऊहापोह से मेरा यह कार्य सरलता से जटिलता की ओर बढ गया और मैं अपने द्वार ही फैलाए गए इस जाल में इतना उलझ गया कि न तो काम समा होने मे आता था, और न इससे पार पाने का ही कोई मार्ग दिखा देता था।

इस छान-बीन में मैंने रचनाएँ तो प्रायः एकत्रित कर ली, परन्तु उनके जीवन-परिचय तथा चित्र आदि कहाँ से उपलब्ध किये जायें, यह समस्या अत्यन्त भीषण रूप में मेरे सामने आ खड़ी हुई। कुछ स्वर्गीया कवयित्रियों के चित्र तथा जीवन-परिचय-सम्बन्धी सामग्री जुटाने में मुझे जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, उनकी कहानी बहुत लम्बी है। इस सम्बन्ध में जहाँ मैंने उनके पतियों, सगे-सम्बन्धियों और पारिवारिकजनों का पता लगाकर उन्हें अनेक पत्र लिखे वहाँ उनसे सम्बन्धित नगरों व स्थानों की यात्राएँ भी की। खेद है कि ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्य में भी हिन्दी की कुछ उल्लेखनीय स्वर्गीय कवयित्रियों के पतियों ने अपना सहयोग देना तो दूर, मेरे पत्रों का उत्तर देने की आवश्यकता भी नही समझी। यहाँ तक ही नही, जब मैं उनसे मिलकर कुछ सामग्री प्राप्त करने के उद्देश्य से उनके नगर में गया तो वहाँ भी उन्होंने मुझे मिलने का समय देने तक का सौजन्य नहीं बरता।

इस संकलन से सम्बन्ध सामग्री संजोते समय जो प्रमुख

कठिनाई मेरे सामने आई, वह थी कुछ कवयित्रियों द्वारा अपने चित्र और जीवन-सम्बन्धी सामग्री भेजने में आनाकानी करना । मैने भी हिम्मत न हारी, और अपने उद्देश्य की पवित्रता जताकर उनसे संकलन की 'एकरूपता' बनाए रखने में सहयोग देने की फिर याचना की । मेरी इस अभ्यर्थना का अधिकांश बहनों पर बड़ा सौम्य प्रभाव पडा और उन्होंने अपने चित्र भेजकर जहाँ मुझसे सहयोग किया वहाँ 'हिन्दी साहित्य' के ऐसे महत्त्वपूर्ण 'आकर ग्रन्थ' की भी शोभा बढ़ाई । मेरे निरन्तर अनुरोध एवं अविरत आग्रह करने पर भी कुछ ऐसी बहनें इस संकलन में समाविष्ट होने से रह ही गई, जिन्होंने किन्ही कारणों से अपने चित्र भेजने में असमर्थता प्रकट की । संकलन की 'एकरूपता' बनाये रखने की दृष्टि से मुझे ऐसा 'घनघोर' निश्चय करना पड़ा । इसके लिए मैं अपने पाठकों के निकट क्षमा-प्रार्थी हूँ ।

एक और बात यदि मैं अपने पाठको के सामने स्पष्टतः न रखूँ, तो मैं अपने कर्तव्य से विमुख समझा जाऊँगा । मैंने इस पत्र-व्यवहार तथा यात्रा में भी प्रत्यक्षतः यह अनुभव किया कि हमारी अधिकांश बहने इस जागरण के युग में भी अपने पारिवारिक वातावरण और पतियों अथवा अभिभावकों द्वारा अनावश्यक रूप से थोपे गए बन्धनों से भी विवश हैं। मैं इच्छा रहते हुए भी कुछ ऐसी बहनों की रचनाएँ इस संकलन में समाविष्ट न कर सका जो वास्तव में मेरे उद्देश्य की पवित्रता के प्रति पूरी सहानुभूति रखते हुए भी हिन्दी-साहित्य की अभिवृद्धि के लिए संयोजित मेरे इस यज्ञ में अपने सहयोग की समिधाएँ न दे सकीं । अपने पास आए हुए अनेक पत्रों में से कुछेक पत्रों के अंश मैं पाठकों की जानकारी के लिए दे देना अपना नैतिक कर्तव्य समझता हूँ। इससे जहाँ हमारे पाठक यह अनुमान लगा सकेंगे कि बीसवीं शताब्दी के इस पूर्णतः प्रबुद्ध और स्वतन्त्र भारत में ऐसी महिलाएँ भी हैं जो अपने पतियों की इच्छा-पूर्ति के लिए अपने साहित्यिक जीवन की आहुति देने तक को तत्पर हैं, वहाँ वे यह भी जान सकेंगे कि पुरु[illegible]स निष्ठुरतापूर्ण व्यवहार से

साहित्य की कितनी क्षति हो रही है।

जब मेरे कई पत्र एक बहन के पास गए तो उन्होने कदाचित् सहृदयतावश उत्तर देना ही अधिक उचित समझा। अपने पत्र में उन्होने जो कुछ लिखा, उसे मैं अक्षरश: यहाँ दे रहा हूँ। उन्होने लिखा था—

"आपके कई पत्र मुझे मिले। उत्तर न देने की अपराधी अवश्य हूँ, किन्तु मेरे पतिदेव को कविता और कल्पना-लोक पसन्द नही। इस कारण मै इस क्षेत्र से बहुत पीछे हट आई हूँ। अपनी रचनाएं मैने नष्ट कर दी है और यह भूल गई हूँ कि कभी मैंने भी कुछ लिखा था। इस तरह से भावनाओ का गला घोटकर मैने अपने पति का मन तो जीत लिया, किन्तु आत्म-समर्पण मे वेदना बहुत हुई।

अपनी भव्य पुस्तक के प्रकाशन के शुभ अवसर पर आपने मुझे याद किया, बहन समझकर लिखा—इसके लिए मै किन शब्दो मे आपको धन्यवाद दूं? केवल आभारी होने के अतिरिक्त मै लिख ही क्या सकती हूँ। अच्छा है आपकी यह व्यापकता किसी के सन्देह का कारण न बने। मेरे पति देवता-तुल्य है, उनकी इच्छा के विरुद्ध मेरी इच्छा नही हो सकती। अतः मै हाथ जोड़कर आपसे क्षमा माँगती हूँ। आवेश मे मै जो कुछ भी भला-बुरा लिख गई हूँ, उसके लिए भी क्षमा-प्रार्थी हूँ। आशा है आप मेरी इस उदासीनता को विवशता समझकर क्षमा करेंगे और कवयित्रियो की सूची से मेरा नाम काट देंगे। (वैसे तो मै एक पाठिका भी नही हूँ।)"

ऐसे एक नहीं अनेक पत्र मेरे पास आए है, जिनका उल्लेख मैं अपनी पिछली पक्तियो में कर चुका हूँ। ऐसी ही एक दूसरी बहन ने जब मेरे पत्रो का कोई उत्तर देने का कष्ट न उठाया तो मैने उसी नगर के अपने एक साहित्यिक बन्धु को उनकी रचनाएँ, चित्र और परिचय आदि भिजवाने के सम्बन्ध मे पत्र लिखा। मेरे पत्र के उत्तर मे उन साहित्यिक मित्र ने जो पंक्तियाँ मुझे लिखी, उनसे भी हमारी आज की अधिकांश

बहनो की स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है—

"मैंने·····से कह दिया था, पर मुझे लगता है कि उनके पति-देवता नही चाहते कि कविता के क्षेत्र मे उनकी ख्याति बढे और कवयित्री के रूप मे लोग उन्हे जाने। अतएव यदि वे सामग्री भेज दें तब ठीक है, नही तो उनके बगैर ही आप अपना संग्रह प्रकाशित करें।"

कुछ ऐसी कवयित्रियाँ भी निकली, जो प्रचार और विज्ञापन से दूर रहकर अपने अभीष्ट की साधना मे तल्लीन है और वे शान्ति मे ही अपनी साधना की इयत्ता समझती है। अपने एक पत्र मे ऐसी ही एक बहन ने मुझे यह लिखा—

"मैंने आपसे स्वयं ही सविनय स्थिति साफ कर दी थी कि आप कृपया मेरी कविता की प्रतीक्षा न करें तथा अपना बहुमूल्य ग्रन्थ निश्चित समय पर प्रकाशित करें। आपने अपने बहुमूल्य संकलन के लिए मेरे गीतो को मांगकर जो आदर मुझे प्रदान किया, उसके लिए आपको कोटिशः धन्यवाद।

गीत न भेज सकने के लिए क्षमा करिएगा। परमात्मा आपको अपने ध्येय मे सफलता प्रदान करे। कभी-कभी खामोशी का भी कुछ कारण होता है।···जिगर साहब की ये लाइने आपने देखी ही होंगी :

आसूद ए साहिल तो है मगर
शायद यह तुझे मालूम नही
साहिल से भी लहरे उठती है
खामोश भी तूफाँ होते है

जिसने अपने सम्पूर्ण जीवन को ही भगवान् मे समर्पित करके अपने को ही भगवान् का गीत बना दिया है, उसको यश या नाम की लिप्सा कहाँ रही? जैसी भगवान् की इच्छा है, वही होता है तथा हो रहा है। भगवान् जो तात्कालिक कर्त्तव्य सामने

ला देते है, उसीको पूर्ण करने में शान्ति है। प्रभु के प्रेम में शब्दों की गुंजाइश कहाँ ? तारों मे गीत और राग छिपे है ? खैर यह तो बहुत गूढ विषय है।"

इसी प्रकार एक बहन से जब मैंने बार-बार चित्र भेजने का आग्रह किया तो उन्होने अत्यन्त स्पष्टतापूर्वक यह लिखकर छुट्टी पा ली—

"प्रकाशन के उपयुक्त चित्र न होने के कारण ही चित्र के लिए क्षमा चाही थी, और फिर चाह रही हूँ। चित्र होता तो आपको फिर लिखने का कष्ट न देती। फिर आप तो काव्य-संग्रह प्रकाशित कर रहे है, चित्र-संग्रह तो नही। फिर चित्र को इतना महत्त्व क्यो ? मुझे तो परिचय देना भी पसन्द नही है। लेकिन आप चाहते है तो लिख रही हूँ।"

एक और बहन को जब मै पत्र लिखते-लिखते थक गया तो अन्त में मैंने उन्हे एक पत्र में 'अत्यावश्यक' और 'अन्तिम' यह दो शब्द भी लिख दिए थे। इसके सम्बन्ध में व्यंग्य करते हुए उन्होंने जो पत्र मुझे लिखा, उसे भी यहाँ प्रस्तुत करने का लोभ मैं संवरण नहीं कर सकता। उन्होंने लिखा था—

"आपका 'अत्यावश्यक' तथा 'अन्तिम' (भगवान् न करे) पत्र आज मुझे मिला। आपने अपने पत्रों की संख्या का अंकन करने मे 'अतिशयोक्ति' अलंकार का अच्छा खासा सदुपयोग किया है। वाह ! सम्भवतः मेरा मौन आपको अपनी बात बताने में असमर्थ रहा। वस्तुतः क्या करूँ, खेद है कि मेरे गीतों को प्रेम-ग्रन्थ की उस विशाल नगरी में अपनी झोंपड़ी बनाना स्वीकार नहीं। मैंने तो बहुत समझाया, पर क्या करूँ, नही मानते। कहते हैं कि हमे आवरण प्रिय है।"

ऐसी ही एक और बहन को उनसे प्रेम-गीत की माँग करना कदाचित् अशोभनीय प्रतीत हुआ। कुछ नाराज़गी और कुछ उपालम्भ-भरे पत्र मे उन्होंने मुझे यह परामर्श दिया—

"आपके भेजे हुए सभी पत्र प्राप्त हुए। मेरे सुयश-वर्द्धन को आपने मुझे सुन्दर और गौरवपूर्ण अवसर प्रदान किया, पर मैं उसे ग्रहण न कर सकी। क्षमा कीजिये। कई कारण थे। पर वह आज-कल सामान्य रूप में बहुत प्रचलित हो चुके हैं, अतः उन्हें ही दुहरा-कर असमर्थता प्रकट करना ठीक नही। एक छोटा-सा कारण स्पष्ट किये देती हूँ कि मैंने प्रेम-गीत नहीं लिखे, काव्य अवश्य लिखे है, जिनमें शृगार रस भी अधिक अवसरों पर आया है, पर वह गीत नही हैं। बाजार में प्रेम-गीतों की भरपूर पुकार है और वह पुरुषों के मुख से ही शोभा देती है। अतः उन्ही के लिए समझकर छोड़ दिया है। यदि कभी राष्ट्र की वेदी पर शील और संयम की क्यारी में सिंची कविता-कलिकाओं का स्तबक तैयार करे तब मै यथासम्भव प्रथम सहयोगिनी बनने को प्रस्तुत हूँ। यदि मेरे पास प्रेम-गीत होते, या मैं उसे रचना अच्छा समझती तो इस समय प्रथम बार ही भेज चुकी होती।"

इस संकलन में महादेवी वर्मा से लेकर आज तक की १७५ कवयित्रियों के प्रेम-गीत सम्मिलित किये गए है। गीतों का चयन मैने इस आधार पर किया है कि इनसे आप नारी के मृदुल मानस की विभिन्न अनुभूतियों, कल्पनाओं, सीमाओं, और विवशताओं का सहज ही मे अनुभव कर सकेंगे। इन प्रेम-गीतों में जहाँ आपको नारी-हृदय की अनुरक्ति, विरक्ति, समर्पण और उत्सर्ग की झाँकी देखने को मिलेगी, वहाँ आप मिलन और बिछोह, रुदन और हास, पीड़ा और कराह का अद्भुत आनन्द भी ले सकेंगे। गीतों के साथ प्रत्येक कवयित्री का संक्षिप्त जीवन-परिचय और चित्र भी दे दिया गया है; जिससे पुस्तक की उपादेयता और भी बढ़ गई है। इस संकलन की एक विशेषता यह भी है कि इसमें सुभद्राकुमारी चौहान, तोरनदेवी शुक्ल 'लली', रामेश्वरी 'चकोरी', रामेश्वरी गोयल, पुरुषार्थवती, विष्णुकुमारी श्रीवास्तव 'मजु', राजरानी चौहान, होमवती देवी, सुशीला त्रिपाठी, लीलावती झँवर 'सत्य', रामवली 'प्रभा', पुष्पा

भारती, सरला सेवक और विद्यावती वर्मा जैसी हिन्दी की चौदह प्रमुख स्वर्गीया कवयित्रियों की ऐसी जीवन-सामग्री, चित्र और गीत समाविष्ट हैं, जो कदाचित् अन्यत्र दुर्लभ है। इस संकलन को देखकर पाठकों के सामने यह भी भली भाँति प्रकट हो जायगा कि हिन्दी अब किसी विशेष प्रदेश या जनपद की भाषा न रहकर समग्र भारत देश की अभिव्यक्ति का मूल स्रोत है। इस संकलन की कवयित्रियों में से अनेक ऐसी है, जिनकी मातृभाषा हिन्दी न होकर गुजराती, मराठी, तेलुगु, बंगला या पंजाबी है। सांस्कृतिक उन्नयन और वैचारिक संगम की दृष्टि से भी यह संकलन हमारे लिए एक नई प्रेरणा देने वाला है। हिन्दी आज भारत के सभी जनपदों और प्रदेशों के परिवारों के पारस्परिक सम्मिलन का ऐसा साधन बन गई है कि सब उसे अपनी अभिव्यक्ति का सहज माध्यम समझने लगे है। इस प्रकार के संकलनों का सभी भाषाओं के पाठकों को हिन्दी की ओर आकृष्ट करने में बड़ा योग हो सकता है। वह दिन दूर नहीं जब सारे देश के लोग हिन्दी को बोलने, समझने तथा अपने दैनिक कार्य व्यापार में व्यवहृत करने के साथ-साथ उसमें साहित्य-रचना भी उसी उत्साह से करने लगेंगे, जिस उत्साह से वे अपनी-अपनी मातृ-भाषाओं में करते है।

मुझे इस बात की हार्दिक प्रसन्नता है कि लगभग १०-११ महीने के अथक परिश्रम और अविरत पत्र-व्यवहार के बाद मैं यह संकलन पूर्ण कर सका। इसे सर्वांगीण और सफल ग्रन्थ कहने की धृष्टता तो मैं नहीं कर सकता, किन्तु इतना तो मुझे सन्तोष है ही कि मेरा यह संकलन हिन्दी के आधुनिक प्रेम-काव्य की अभिवृद्धि के लिए किये गए हमारी बहनों के कृतित्व को सामने रखने की दिशा में एक अत्यन्त विनम्र किन्तु ठोस प्रयास है। मैं यह भी जानता हूँ कि देश के विभिन्न कोनों में बिखरी हुई बहुत-सी बहनों की रचनाओं का समावेश इसमें न हो सका होगा; किन्तु इतना तो मैं अवश्य ही विश्वास दिलाता हूँ कि मेरी कमियों के सम्बन्ध में जो भी संकेत या सुझाव दिये जायँगे, उन्हें मैं विनीत मन

और उदार हृदय से स्वीकार करूँगा, जिससे इस संकलन के आगामी संस्करणों को मैं और भी अधिक उपादेय एवं संग्रहणीय बना सकूँ। इस कार्य में मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में जिन-जिन व्यक्तियों का सहयोग-साहाय्य मिला है, उनके प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। विशेष रूप से उन बहनों का आभारी हूँ, जिनके सक्रिय सहयोग और सौजन्य-मय आशीषों के बल पर मैं इस गुरुतर कार्य को सम्पन्न कर सका।

यदि हिन्दी-जगत् ने मेरे इस प्रयास का तनिक-सा भी स्वागत किया तो मैं अपने को धन्य समझूँगा।

अजय निवास, दिलशाद कॉलोनी **क्षेमचन्द्र 'सुमन'**
शाहदरा, दिल्ली–३२

तालिका

१. अमृता भारती	जब तुम्हारी ओर देखा !	१
२. अर्चना	पलकों से ढक लूँ !	३
३. अविनाश	तुम मुसकुरा दो !	५
४. आशारानी व्होरा	जानूँ क्या मनुहार प्यार की !	८
५. इन्दिरा 'नूपुर'	पथ का साथी कौन रहेगा ?	१०
६. इन्दिरादेवी शास्त्रिणी	ले चल उनकी ओर !	१२
७. इन्दु जैन	मेघ-भरा आकाश सखी री !	१४
८. इन्दुबाला देवी	यह मिलन-रात !	१६
९. उर्मिला 'कुसुम'	प्राण विकल हैं !	१८
१०. उर्मिला निरखे	मैं अनजानी-सी लौट गई !	२०
११. उर्मिला वाष्र्णेय	भुलाया कब तुम्हे उर से !	२३
१२. उर्मिला सिनहा	मै कैसे मन्दिर मे आऊं ?	२५
१३. ओम्वती अग्रवाल	विकल पीडा होती लाचार !	२७
१४. कंचनलता सब्बरवाल	प्रियतम तुमको भेट करूँ क्या ?	२९
१५. कमल पुरी	ये नैन बरस जाते है !	३२
१६. कमला ओबराय	वेदना से छटपटाते प्राण !	३४
१७. कमलाकुमारी	मैं कब से यहाँ खड़ी हूँ ?	३६
१८. कमला चौधरी	मेरी याद तुम्हें आ जाए !	३८
१९. कमला जैन 'जीजी'	एक चितवन ही बहुत है प्यार की !	४१
२०. कमला दीक्षित	सखि वे आए थे एक बार !	४४
२१. कमलेश 'कमल'	जलन से प्रीत मुझे है मीत !	४६
२२. कमलेश सक्सेना	'नही निर्दयी तुम, नहीं बे-रहम तुम'!	४९

२३. कान्ति त्रिपाठी	प्राण ! अनजाने निकटतर आ रहे हो !	५२
२४. कीर्ति चौधरी	मन की मूर्ति स्वयं गढ़ लूंगी !	५४
२५. कुन्थकुमारी जैन	मानस मे कौन छिपा जाता ?	५६
२६. कुमारी कुमुद	सिसकता प्यार ले लूंगी !	५८
२७. कुमारी कुमुद	गायन बनकर आए हो !	६०
२८. कुमारी मधु	प्राणों के समीप तू आया क्यों ?	६२
२९. कुमारी राधा	तुम्हारी याद सताती है !	६५
३०. कुसुमकुमारी सिनहा	सखि, उनको पाषाण न कहना !	६७
३१. गिरीश रस्तोगी	तुमको पाकर सब-कुछ पाया !	६९
३२. गीता श्रीवास्तव	सुमन समझकर रौंद न देना !	७१
३३. चन्द्रकान्ता	क्या तेरा संसार यही है ?	७३
३४. चन्द्रकान्ता वर्मा	पर करूँ क्या ?	७५
३५. चन्द्रकिरण सौनरेक्सा	प्यार सदा पागल क्यों होता ?	७८
३६. चन्द्रमुखी ओझा 'सुधा'	प्रीत बन जाओ !	८०
३७. चन्द्ररेखा वर्मा	अरे, ये किसने बीने शूल ?	८२
३८. चन्द्रवती ऋषभसेन जैन	मैं न तुमको भूल पाती !	८५
३९. तारा पाण्डे	गीत गाऊँ मैं मधुर-सा !	८७
४०. स्व० तोरनदेवी शुक्ल 'लली'	वे अचेतन क्यों समझते ?	८९
४१. दिनेशनन्दिनी डालमिया	प्रिय कब अवगुण्ठन खोलोगे ?	९१
४२. दीप्ति खण्डेलवाल	बहुत तुम याद आते हो !	९३
४३. दुर्गावती सिंह	न जाना प्राण, तुम्हारा प्यार !	९५
४४. देववती शर्मा	चंचल प्रेमी जान न पाया !	९७
४५. धारा मिश्र	कथा रुक गई, आज भी चलते-चलते !	१००
४६. नलिनी श्याम	आज मेरे गान रोते !	१०२
४७. निर्मला माथुर	गीत किसी का, स्नेह किसी का !	१०४
४८. प्रकाशवती	विचलित होता हृदय !	१०६
४९. प्रतिभा गर्ग	तुम्हारी याद के बन्धन !	१०९

५०. प्रेमकुमारी गुप्ता	कौन तुम सूने गगन में ?	११२
५१. प्रेमलता वर्मा	आज कम्पित पात-सा मन !	११४
५२. स्व० पुरुषार्थवती	इनमें कितने भाव भरे हैं ?	११६
५३. पुष्पलता श्रीवास्तव 'नीलिमा'	करुणा से भरी मेरी कहानी !	११८
५४. पुष्पा अवस्थी	रहते हो सपने-से !	१२०
५५. पुष्पा पुरी	मुझे तुम मत ठुकराओ !	१२२
५६ स्व० पुष्पा भारती	मिले दो हृदय, खिले दो सुमन !	१२५
५७. पुष्पा सक्सेना	वह बात न मेरे मुख से कहलाओ !	१२७
५८. पुष्पा सक्सेना	मैं स्वयं में खो गई !	१३०
५९. भगवतीदेवी 'विह्वला'	हैं अमर मधुगान मेरे !	१३३
६०. मणिका मोहिनी	केवल अर्पण ही अर्पण है !	१३५
६१. मधु अग्रवाल	तुम हँस लो मेरे जीवन पर !	१३७
६२. मधु पाण्डेय	मेरे जीवन दीप !	१३९
६३. मधुमालती चौकसी	कुछ कह न पाई !	१४२
६४. मधुछन्दा दास गुप्ता	बस, केवल सपनों में आना !	१४५
६५. मधु शुक्ला	प्राण ! आकर थाम लो बहियाँ !	१४८
६६. मनमोहिनी	रातें आँखों में बीतीं !	१५०
६७. ममता अग्रवाल	भावना के दीप मेरे !	१५२
६८. महादेवी वर्मा	यह सपना सुकुमार किसी का !	१५४
६९. माधवी रानी 'छाया'	मुसकराता हुआ दीप मै बन सकूँ !	१५७
७०. मालती जोशी	धूप-छाँह है प्यार तुम्हारा !	१६०
७१. मालती श्रीवास्तव	मेरी लाज रखना !	१६३
७२. मालती सिरसीकर	पहचानते है प्राण तुम्हें !	१६६
७३. मोहिनी गौतम	कलि, तुमने खिलकर क्या पाया ?	१६८
७४. रजनी मिश्र	मन के मीत न आए !	१७०
७५. रत्नकुमारी काव्यतीर्थ	रे मन ! आँसू पी ले !	१७२
७६. रमा सिंह	मेरे पास कुछ उत्तर नहीं !	१७४

७७. राजकुमारी कौल	प्राण तुमको दे रही हूँ !	१७६
७८. राजकुमारी श्रीवास्तव	मेरे प्रियतम साकार अमर !	१८०
७९. राजराजेश्वरी त्रिवेदी 'नलिनी'	कब किसकी साध हुई पूरी ?	१८३
८०. स्व० राजरानी चौहान	न पूरी हुई आज तक चाह !	१८६
८१. स्व० रामकली 'प्रभा'	समझूंगी इसको भी प्यार !	१८८
८२. रामकुमारी चौहान	गीत कोई गा रहा है ?	१९०
८३. स्व० रामेश्वरी गोयल	गायक यहाँ न छेड़ो तान !	१९३
८४. स्व० रामेश्वरी देवी 'चकोरी'	भग्न हृदय के किस कोने मे !	१९६
८५. रामेश्वरी शर्मा	दूर मेरा मीत है !	१९९
८६. रूपकुमारी तिवारी	समर्पण का अमिट अभिसार तो दो !	२०१
८७. रेखा रामानन्द	निगोड़े नैन को क्या हो गया है ?	२०४
८८. लक्ष्मी त्रिपाठी	एक स्वर लगता भला !	२०७
८९. लीला अवस्थी	कैसा प्यार तुम्हारा ?	२०९
९०. स्व० लीलावती भँवर 'सत्य'	हमारे प्रियतम प्राणाधार !	२११
९१. विजयकान्ता श्रीवास्तव	मुझको तुम न सताओ !	२१३
९२. विद्या मिश्र	जान सकोगे क्या ?	२१५
९३. विद्या वसन्त मानेकर	तेरा ऋण आज चुका दूंगी !	२१७
९४. विद्या 'विभा'	गान लेकर क्या करूँगी ?	२१९
९५. विद्या सक्सेना	याद मेरी भूल जाना !	२२१
९६. विद्यावती 'कोकिल'	मुझको मेरी मुक्ति मिल गई है !	२२४
९७. विद्यावती कौशल	मुसकान देने ही चली हूँ !	२२७
९८. विद्यावती 'मालविका'	विरह-गीत ही गाया !	२२९
९९. विद्यावती मिश्र	प्रिय मन्दिर की राह न बदले !	२३१
१००. स्व० विद्यावती वर्मा	आज जीवन-प्राण आए !	२३४
१०१. विमला देवी 'रमा'	प्रिय धीरे से तू आना !	२३७
१०२. विमला राजेन्द्र	मौन तोड़ो पिया !	२३९
१०३. विमला श्रीवास्तव	सपना कब साकार हुआ रे !	२४१

१०४. स्व० विष्णुकुमारी श्रीवास्तव 'मंजु'	सूनेपन में तुम आए !	२४३
१०५. वीणा मिश्र	प्रिय तुम्हें कैसे मनाऊँ ?	२४५
१०६. वीणा त्रिवेदी	आज भेजती तुमको पाती !	२४७
१०७. वीरा	मेरे आँगन श्वेत कबूतर !	२५०
१०८. श्यामा सलिल	मैं छन्दों की रानी हूँ !	२५३
१०९. शकुन्त माथुर	डर लगता है !	२५६
११०. शकुन्तला खरे	मैं तो उन पर बलिहार गई !	२५८
१११. शकुन्तला शर्मा	कौन वह पुकार गई ?	२६१
११२. शकुन्तलाकुमारी 'रेणु'	इतनी कृपा कर दो !	२६४
११३. शकुन्तला श्रीवास्तव	कितना लम्बा पथ जीवन का ?	२६६
११४. शकुन्तला सिरोठिया	मुझे प्राण, तब तुम बहुत याद आते !	२६९
११५. शान्ता त्यागी	करो स्वीकार मेरी आरती !	२७१
११६. शान्ता सिनहा	द्वार एक, अनेक मैं !	२७४
११७. शान्ता सिनहा	भला मुझसे दूर कब थे ?	२७७
११८. शान्ति अग्रवाल	डगर मिल गई !	२७९
११९. शान्ति मेहरोत्रा	आराध्य न अब साकार बनो !	२८२
१२०. शान्ति रमण	मुसकुराने को न कहना !	२८४
१२१. शान्ति सिंहल	जब तुम्हीं अनजान बनकर रह गए !	२८६
१२२. शान्तिकुमारी सुमन	पुण्यतम क्षण है !	२८९
१२३. शारदा गुप्ता	द्वार तुम मेरे आओगे !	२९२
१२४. शारदा वेदालंकार	तुम मुझको पहचान न पाए !	२९५
१२५. शीला	मेरी आँखों से देखो तुम !	२९७
१२६. शीला अग्निहोत्री	और तुम जाने कहाँ हो ?	२९९
१२७. शीला गुप्ता	जाने क्या बात हुई ?	३०१
१२८. शुभा वर्मा	याद करती हूँ तुम्हें !	३०४
१२९. शैल कली	पीर बन आए हो !	३०६
१३०. शैलकुमारी चतुर्वेदी	प्रेममय अभिसार भूली !	३०८

१३१. शैलबाला	गीत अपने गा रही हूँ !	३१०
१३२. शैल रस्तौगी	तुम न आए पर !	३१२
१३३. स्नेहमयी चौधरी	मन मेरे, उनकी बात कहो !	३१४
१३४. स्नेहलता प्रसाद	भूल गए क्यों निर्मम मेरे !	३१६
१३५. स्नेहलता 'स्नेह'	तुम मिलोगे ही कभी !	३१८
१३६. स्वरूपकुमारी बक्शी	रूप एक मीनार है !	३२१
१३७. संयुक्ता	अब तो नाव लहर में आई !	३२४
१३८. सत्यवती शर्मा	प्यास बढ़ती क्यो हृदय की ?	३२७
१३९. सन्तोष अग्रवाल	हास्य भी तो रूठ जाता !	३२९
१४०. सन्तोष बालूपुरी	तुमसे मीठी याद तुम्हारी !	३३१
१४१. सन्तोष सक्सेना	अभी से मन घबराया !	३३३
१४२. सरला गुप्ता	जीवन-भरी गुंजार दो !	३३६
१४३. सरला तिवारी	मैं उनकी ही होती !	३३८
१४४. सरला भारती	मुझे रीत जग की, निभाना न आया !	३४०
१४५. सरला श्रीवास्तव	वह न मिला !	३४३
१४६. स्व० सरला सेवक	क्यों मुझको जीवन भार न हो !	३४६
१४७. सरस्वती चौधरी	ज़िन्दगी फिर साथ लाओ !	३४८
१४८. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ	अपने द्वार मुझे आने दो !	३५०
१४९. सावित्री जायसवाल	मुझे मिले थे प्रियतम रात !	३५२
१५०. सावित्री डागा	तुम आशा बनकर आते हो !	३५५
१५१. सावित्री रस्तौगी	तुम न जाओ !	३५८
१५२. सावित्री शुक्ल	मीत तुम्हारी सुधि आती है !	३६०
१५३. सीता भटनागर	आया कौन रिझाने ?	३६२
१५४. सुदर्शन बाहरी	बेसुध प्रीत-कहानी चलती !	३६४
१५५. सुदेश प्रतिमा	कौन मन की पीर जाने ?	३६६
१५६. सुधा जैन	साँसों का यह रथ चलता है !	३६९
१५७. सुधा बलबीर	मुसकाने को इन्सान बना !	३७१

१५८. सुधा शर्मा	नैन छलक जाया करते हैं !	३७४
१५९. सुधारानी शर्मा	मृदु प्यार लुटा बैठी हूँ !	३७६
१६०. सुप्रभा व्यास	अपना संसार लुटा बैठी हूँ !	३७९
१६१. स्व० सुभद्राकुमारी चौहान	हठीली आँखें अड ही गई !	३८१
१६२. सुमंगलाकुमारी मिश्र 'प्रभा'	मधुर गीत मेरे मुखर हो गए !	३८३
१६३. सुमित्राकुमारी सिनहा	भगवान् एक पर मेरा है !	३८५
१६४. सुलोचना पँवार	प्रिय ! कैसी यह मेरी उलझन ?	३८८
१६५. सुशीला 'कंचन'	थकी जा रही तुम्हें बुलाते !	३९०
१६६. सुशीला सरीन	सावन गीला है !	३९३
१६७. स्व० सुशीला त्रिपाठी	क्या याद हमारी आती ?	३९५
१६८. सूर्यदेवी दीक्षित 'उषा'	और कस दो प्रेम का बन्धन !	३९७
१६९. सूर्यबाला श्रीवास्तव	अर्चना का एक यह अधिकार !	४००
१७०. हर्षनन्दिनी भाटिया	आ भी जा ओ मीत !	४०३
१७१. हीरादेवी चतुर्वेदी	जाने कैसा उनका प्यार ?	४०५
१७२. स्व० होमवती देवी	कैसे गीली पलकें खोलूँ ?	४०७
१७३. ज्ञान अस्थाना	तुम दृगों में छा रहे हो !	४०९
१७४. ज्ञानवती सकसेना	खाली गागर भर जाती है !	४११
१७५. ज्ञानवती सकसेना 'किरण'	मुझसे मेरे गान न छीनो !	४१४

जन्म-स्थान—नजीबाबाद (बिजनौर); उत्तर प्रदेश । **जन्म-तिथि**—१२ जनवरी, सन् १९३८ । **शिक्षा**—एम. ए. । 'भवभूति' के नाटकों पर हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी से अभी पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है । **विशेष**—



अमृता भारती

साहित्य और कला में विशेष रुचि है । कुछ ही दिनों से लिखना प्रारम्भ किया है । भविष्य में नियमित रूप से लिखने का संकल्प है । कुछ दिन निर्मल आर्य नाम से भी लिखा है । **वर्तमान पता**—श्याम निवास, १२५ आर्यनगर, चार बाग, लखनऊ।

जब तुम्हारी ओर देखा !

जब तुम्हारी ओर देखा, खिंच गई मन में सुरेखा !

स्वप्न सब साकार पल में हो गए,
गा उठे सब तार मन के, जो कभी थे सो गए ;
ढल गए शबनम के मोती फूल-से,
उठ गईं नज़रें अचानक भूल से;
लाज की तब आ गई, रक्तिम सुरेखा !
जब तुम्हारी ओर देखा, खिंच गई मन में सुरेखा !

मुक्त सरिताएँ मिलन को चल पड़ीं,
यामिनी भी चाँद से मिल हँस पड़ी ;
दीप सब निस्सार उस पल हो गए,
लाज के बन्धन तभी सब खो गए ;
मिट गई मध्यस्थ की, मर्याद-रेखा
जब तुम्हारी ओर देखा, खिंच गई मन में सुरेखा !

जन्म-स्थान — अलवर (राजस्थान)। **जन्म-तिथि**—६ जून १९२५। **शिक्षा**—एम. ए. (हिन्दी), एल. टी। **प्रकाशित रचनाएँ**—'हिन्दी काव्य में यमुना-वर्णन' (आलोचना) ; 'यवनिका', 'सन् सत्तावन की



अर्चना

छाया में' (कविता-संग्रह) ; 'बन्धन' (खण्डकाव्य)। **विशेष**—वास्तविक नाम शकुन्तला भार्गव। **वर्तमान पता**—हिन्दी--प्राध्यापिका गवर्नमेण्ट गर्ल्स कालिज श्रीगंगानगर (राजस्थान)।

पलकों से ढक लूँ !

अञ्जलि-जल झरता है,
रोक सको—रोक लो !

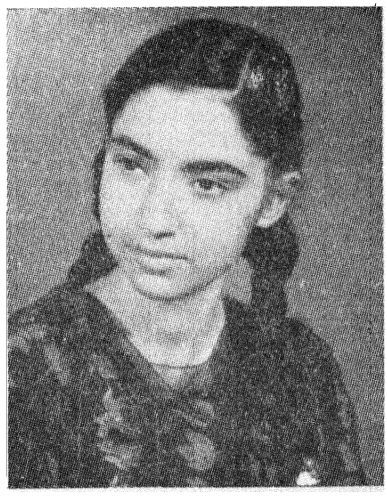
चाहा था—तुमको प्रिय ! प्राणों में रख लूँ,
अन्तर-पट में लपेट, पलकों से ढक लूँ
तुम संग रह जीवन में,—प्रेमामृत चख लूँ
काल-चक्र चलता है,
रोक सको—रोक लो !

सूना है पन्थ, सजन ! कुछ कहो, कहो
बिछुड़ गए साथी सब, बाँह अब गहो
हो न मौन, मुँह न फेर, रुको, रुक रहो
पल-पल दिन ढलता है,
रोक सको—रोक लो !

हाय, विवश अश्रु-उत्स झरता ही जाता है
उर का यह हा-हा रव बढ़ता ही जाता है
प्राण विरह-दुःख-दलित जलता हो जाता है
प्रति पल उर गलता है,
रोक सको—रोक लो !

अञ्जलि-जल झरता है, रोक सको—रोक लो !

जन्म-स्थान—भवन(झेलम) पश्चिमी पाकिस्तान। **जन्म-तिथि**— ३ जून १९३७। **विशेष**—पाकिस्तान बनने से २ मास पूर्व ही इनके पिता का स्थानान्तरण आगरा हो गया था। तब ही से आगरा में थी।



अविनाश

अब इनका विवाह हो गया है। इनकी कुछ रचनाएँ 'ताज की छाया में' नामक एक काव्य-संकलन में प्रकाशित भी हुई हैं। **वर्तमान पता**— द्वारा ज्ञानी ड्राई क्लीनर्स, अदालत बाजार, पटियाला।

तुम मुसकुरा दो !

मैं तुम्हारी लेखनी से लिख रही हूँ,
बीन मेरी तुम बजाकर गुनगुना दो !

आज मैं रचने चली पदचिन्ह स्वर के
राह की रज ले तुम्हारी
अनकही-सी बात जो अब तक रही थी
बोल में मैंने सँवारी

मैं तुम्हारी पीर लेकर गा रही हूँ,
स्पर्श कर तुम तार मेरे झनझना दो !
मैं तुम्हारी लेखनी से लिख रही हूँ,
बीन मेरी तुम बजाकर गुनगुना दो !

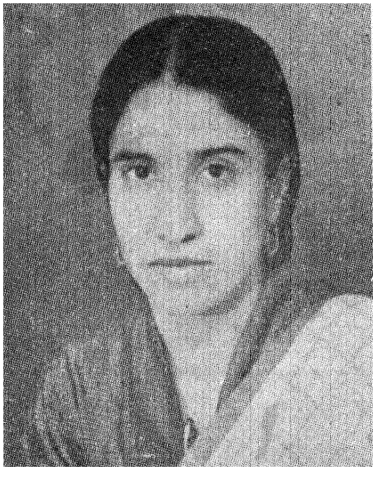
है तुम्हारी ज्योति अम्बर से झरी जो,
किन्तु उसमें दिख रही मैं
बोल गा-गाकर तुम्हारे बन गई 'तुम'
ज्यों स्वयं सब लिख रही मैं

मैं तुम्हारा चाँद लेकर जग रही हूँ,
तुम जलाकर दीप मेरा झिलमिला दो !
मैं तुम्हारी लेखनी से लिख रही हूँ,
बीन मेरी तुम बजाकर गुन गुना दो !

गीत का वह दूर पर मंदिर-शिखर है
दीप की बेला हुई है

ज्योति-अंचल-ओट कब से जल रही पर—
अर्चना यह अनछुई है
मैं तुम्हारा ही भजन तो गा रही हूँ,
आरती स्वीकार कर तुम मुसकुरा दो !
मैं तुम्हारी लेखनी से लिख रही हूँ,
बीन मेरी तुम बजाकर गुनगुना दो !

जन्म-स्थान — भेलम, पश्चिमी पंजाब (पाकिस्तान)। **जन्म-तिथि**—७ अप्रैल, १९२१। **शिक्षा**—हिन्दी प्रभाकर, बी. ए.। **रचनाएँ**—अभी तक विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में ५० के लगभग



आशारानी व्होरा

गीत तथा १५० के लगभग लेख प्रकाशित। 'आँसू का आभार' नामक एक गीत-संग्रह और महिलोपयोगी कुछ पुस्तकें प्रेस में हैं। **वर्तमान पता**—फ़्लैट नम्बर १०, न्यू मार्केट वैस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली-१२।

जानूँ क्या मनुहार प्यार की !

जानूँ क्या मनुहार प्यार की, प्रिय अम्बर से कभी न उतरे !

महा शून्य का मौन इशारा—
पाकर सौ-सौ बार निहारा,
खुली - खुली अँखियाँ पथराईं—
खुला नही अम्बर का द्वारा ;

चाँद न निकला, किरण न फूटी,काले बादल कभी न छितरे !
जानूँ क्या मनुहार प्यार की, प्रिय अम्बर से कभी न उतरे !

प्रिय की छवि, नित नई अदाएँ
(निरख कल्पना जिन्हें लजाए)
अंकित करतीं सहज भाव से-
सपनों की सुरमई घटाएँ,

चित्र बने पर धुँधले-धुँधले, चेतन-पट पर कभी न निखरे !
जानूँ क्या मनुहार प्यार की, प्रिय अम्बर से कभी न उतरे !

लुटी प्रतीक्षा की सब घड़ियाँ
टूट चुकीं सपनों की कड़ियाँ,
प्रिय का हार पिरोते टूटा—
बिखर गईं मानस की लड़ियाँ ;

उस निष्ठुर से प्यार कहाँ का, जो अन्तर में कभी न उतरे !
जानूँ क्या मनुहार प्यार की, प्रिय अम्बर से कभी न उतरे !



इन्दिरा 'नूपुर'

जन्म-स्थान— नागपुर। **जन्म-तिथि**— ३ सितम्बर, १९३२। **शिक्षा**—एम. ए. (अंग्रेजी), एल. टी.। **प्रकाशित रचनाएँ**—'सपने, मान और हठ',' वह कौन थी', 'विष-पान' (उपन्यास); 'शैव्या के आँसू' (कहानी-संग्रह)। 'नया बसेरा' (एकांकी-संग्रह) **प्रेस में**— 'मंज़िल और मौत' (उपन्यास); 'सुबह के भूले' (कहानी-संग्रह), 'एक साँझ ! एक मीत' (कविता-संग्रह)। **वर्तमान कार्य**— अंग्रेजी - प्राध्यापिका राजकीय महिला इण्टर कालिज प्रतापगढ़। **स्थायी पता**—चन्द्र-लोक, ६३, लाउदर रोड, इलाहाबाद।

पथ का साथी कौन रहेगा ?

झोली के सब फूल छीन लो, पर ये काँटे मत बीनो तुम,
काँटे ले लोगे तो बोलो, पथ का साथी कौन रहेगा ?

चार दिनों की अरे चाँदनी,
दीप मगर जलता रहता है ;
सुख के मीत न साथ निभाते,
पर अभाव खलता रहता है ;
सुख की सारी घड़ियाँ ले लो, पर दुख के क्षण मत छीनो तुम,
दुख ले लोगे तो फिर बोलो, इन गीतों को कौन रचेगा ?

जब-जब भोर सुहानी आती,
निशि का आँसू गल जाता है ;
साँझ साँवली फिर आए तो,
दिन का सूरज ढल जाता है ;
तुम मेरी मुसकान छीन लो, पर बदनाम पीर मत लेना,
पीड़ा ले लोगे तो बोलो, दुख का चन्दन कौन बनेगा ?

दिनकर ताप असह देता है,
चन्दा शीतलता भर देता ;
आँख कभी रो देती है तो,
गीत वही आँसू हर लेता ;
मुझसे तुम वरदान छीन लो, पर शापों का कोष न लेना,
शाप अगर तुम ले लोगे तो, यह जीवन कैसे बीतेगा ?



इन्दिरादेवी शास्त्रिणी

जन्म-स्थान — सीतापुर (उत्तर प्रदेश) । **जन्म-तिथि**— सन् १९१० । **विशेष**—आपका विवाह सन् १९२५ में श्री गयाप्रसादजी शास्त्री के साथ हुआ । श्री शास्त्रीजी के सम्पर्क में आकर आपने संस्कृत व्याकरण तथा साहित्य का अध्ययन किया और आयुर्वेद की जानकारी प्राप्त की । आजकल हैदराबाद में अपने पतिदेव के साथ 'नारी आरोग्य मन्दिर' नामक संस्था का संचालन कर रही है । हिन्दी की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रहती है । **वर्तमान पता**—द्वारा डॉ० गयाप्रसाद आयुर्वेद शास्त्री, आन्ध्र प्रदेश आयुर्वेदिक अकादेमी, मुरलीधर बाग, हैदराबाद (आन्ध्र) ।

ले चल उनकी ओर !

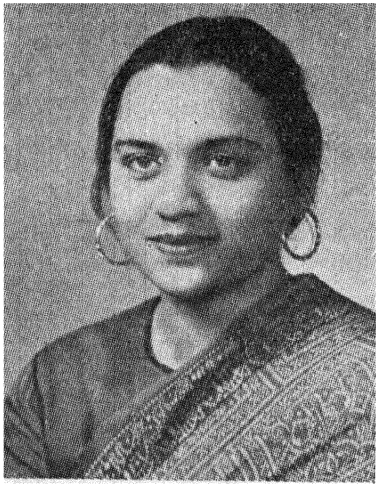
नाविक ! ले चल उनकी ओर !
छोटी-सी यह जीवन-नौका, कब पाएगी छोर ?

प्रेम-सिन्धु में विरह-भँवर है, आँधी चिन्ता घोर
घन बन नयन बरसते पल-पल, कैसी विपति कठोर ?
नाविक ! ले चल उनकी ओर !

यश-अपयश, सुख-दुख सब भूली, जग का नाता तोर
मैं जाती हूँ उसी देश को, जहाँ बसें चित-चोर !
नाविक ! ले चल उनकी ओर !

तुम हँसते हो, मै रोती हूँ, क्यों न तरणि दो बोर
मरकर ही फिर जीवन-धन की, लखूँ दया दृग-कोर
नाविक ! ले चल उनकी ओर !

छोटी-सी यह जीवन-नौका, कब पाएगी छोर ?



इन्दु जैन

जन्म-स्थान—नई दिल्ली। **जन्म-तिथि**— ५ अगस्त, सन् १९३५ । **शिक्षा**— हिन्दी साहित्य में एम.ए. प्रथम श्रेणी में (नई हिन्दी कविता के विशेष अध्ययन के साथ)। **विशेष**—कविता तथा उपन्यास के अतिरिक्त कभी-कभी कहानियाँ भी लिखती है। अंग्रेजी साहित्य पढ़ने में विशेष रुचि। चित्र-कला, नृत्य और संगीत में भी पारंगत है। आकाशवाणी के साधारण और टेलीविजन के कार्यक्रमों में भाग लेती रहती हैं। 'ज्ञानोदय' के सम्पादक श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन की सुपुत्री। **वर्तमान पता**—गुरु निवास, १६ दरियागंज, दिल्ली।

मेघ-भरा आकाश सखी री !

मेघ-भरा आकाश सखी री, निंबुवा है बौराया !
कण-कण के उर में मधु भरता, जीवन-सा सरसाया !

छन-छन पवन बही मतवाली
झिझक झुकी वह घूँघट वाली

गोरी के गालों पर सजनी, कुमकुम है छितराया !
मेघ-भरा आकाश सखी री, निंबुवा है बौराया !

डफली, ढोल, मँजीरे, बाजे
कजरी के मीठे सुर साजे

झन-झन झनके पायल घुँघरू, सावन-रास रचाया !
मेघ-भरा आकाश सखी री, निंबुवा है बौराया !

पवन अलक बिखराए गोरी
नयननवा की काजर डोरी

लजा, नवा हिरनी से नैना, अद्‌भुत साज सजाया !
मेघ-भरा आकाश सखी री, निंबुआ है बौराया !

मेंहदी गमक रही हाथों में
दूज चाँद ने तैर नयन में

अधर-कुई में पुलक बसाया, राग-रंग बरसाया !
मेघ-भरा आकाश सखी री, निंबुवा है बौराया !
कण-कण के उर में मधु भरता, जीवन-सा सरसाया



इन्दुबाला देवी

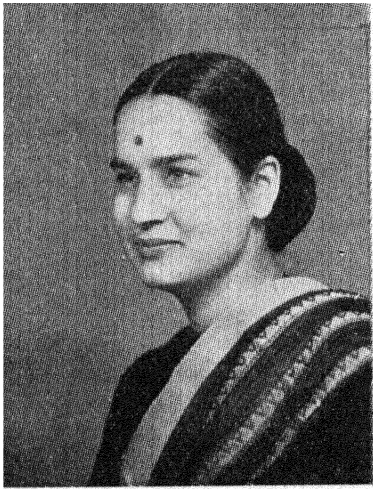
जन्म-तिथि—सन् १९३०। **प्रकाशित रचनाएँ**— 'जाट-जाटिन' (पूर्णियाँ की अंगिका लोक-भाषा के नाट्य गीत का संकलन एव आलोचनात्मक परिचय)। **अप्रकाशित रचनाएं**- 'इन्दु लेखा' (स्फुट गीत-संग्रह), 'कुन्ती का अभिशाप' (लघु कथा-काव्य), 'देवयानी' (खण्ड काव्य), 'पाचाली' (प्रबन्ध-काव्य) और 'पूर्वी मैथिली के लोकगीत' (निबन्ध-संग्रह)। **विशेष**—बिहार के प्रख्यात समीक्षक श्री प्रताप साहित्या-लंकार की पत्नी। पहले साहित्य - साधना कहानी से प्रारम्भ हुई। बाद मे कविता की ओर अभिरुचि। **वर्तमान स्थायी पता**—ग्राम व पोस्ट—लक्ष्मीपुर विषहरिया, वाया बिहारीगंज, पूर्णियाँ (बिहार)।

यह मिलन-रात !

रजनीगन्धा मेरे द्वारे कहती पुकार,
आकुल सौरभ का खुल-खुल जाता मुक्त द्वार,
अल्हड़ कलियाँ सज लेतीं फूलों का सिगार,
मदिराभ पाँव से आता है दक्षिणी वात !
यह मिलन-रात !

मधुकर का चल सपना पलकों में उतराता,
नीलम घन की परछाईं में आ मुसकाता,
विद्युत्-चितवन से लुक-छिपकर है बतराता,
पुलकों की सिहरन से भर जाता मृदुल गात !
यह मिलन-रात !

अपरूप रूप-छवि का पंकज बन हृदय-हार,
मुखरित होता सालस पलकों में बार-बार,
कर पान न पाती रूप-सुधा जी-भर निहार,
आँखों-आँखों में खो जाती यह मिलन-रात !
यह मिलन-रात !



उर्मिला 'कुसुम'

जन्म-स्थान— लायलपुर (पाकिस्तान)। **जन्म-तिथि**— अक्तूबर १९३३। **शिक्षा**— विभाजनोपरान्त दिल्ली में बड़ी बहन ने ट्यूशन व नौकरी करके इन्हें मैट्रिक कराया। प्रथम श्रेणी प्राप्त की। तत्पश्चात् टंकण सीखकर १९४९ में सरकारी कार्यालय में नौकरी करके अपनी बहन सहित ५ प्राणियों के परिवार के पालन में व्यस्त। नौकरी करते हुए सन् १९५० में बी० ए०, १९५४ में बी० एड० किया। सन् १९५७ में एम० ए०। १९४९ में अच्छे घराने में विवाह। **वर्तमान पता**— इण्डियन ब्यूरो ऑफ माइन्स, पी-२१ मिशन रो एक्सटेंशन, कलकत्ता-१३।

प्राण विकल हैं !

प्राण विकल हैं, स्मरण आ गए आज तुम्हारे गान !

मुझको अपने कमल-करों में
रक्खो, जैसे गीत स्वरों में

अँगड़ाती ऊषा को आओ दें हम स्वागत-गान !
प्राण विकल हैं, स्मरण आ गए आज तुम्हारे गान !

विश्व निमज्जित है ब्रीड़ा में
ढूँढूँ मैं तुमको क्रीड़ा में

स्वप्न सत्य कर दो, जीवन का हो न जाय अवसान !
प्राण विकल हैं, स्मरण आ गए आज तुम्हारे गान !

जाऊँगी सागर के तल में
लाऊँगी मुक्ता-मणि पल में

रख दूँगी पथ-बीच तुम्हारे स्वागत का सामान !
प्राण विकल हैं, स्मरण आ गए आज तुम्हारे गान !

चन्दा को बेंदी से सजकर
आशा की मेंहदी से रचकर

तुमसे मिलने को आकुल हूँ, करती हूँ आह्वान !
प्राण विकल हैं, स्मरण आ गए आज तुम्हारे गान !

जन्म-स्थान—धार (मध्य प्रदेश) । **जन्म-तिथि**—५ नवम्बर, १९३८ । **शिक्षा**—बी० ए०, साहित्य-रत्न । **विशेष**—साहित्य में रुचि जरा भी नहीं थी। डॉक्टर बनने का



उर्मिला निरखे

विचार था । प्रवाह साहित्य की ओर मुड़ गया और वह सपना अधूरा रह गया । पूरा नाम उर्मिला दिनकर निरखे । **वर्तमान पता**—सहायक अध्यापिका गर्ल्स हायर सेकेण्डरी, स्कूल बड़वानी (मध्य प्रदेश) ।

मैं अनजानी-सी लौट गई !

संघर्ष सदा जग में पाया
है अमर प्राण ! उसका साया
जिस डाल पै नीड़ बनाया था,
वह डाल वहीं से टूट गई !
जो लहर हमारा सम्बल थी,
वह सब-कुछ लेकर डूब गई !

सागर की कोई थाह नहीं
तिरने की कोई राह नहीं
इस पार नहीं, उस पार नहीं,
यदि डूबूँ, तो मँझधार नहीं !
जिसको थामे तिर जाना था,
पतवार वहीं से टूट गई !

संगी-साथी इस पार रहे
जो बचे, सभी मँझधार रहे
माँझी भी हिम्मत हार गया,
उस पार का साथी कोई नहीं !
जिसको लेकर कुछ आस बँधी,
उसकी भी हिम्मत टूट गई !

उस पार सूर्य की किरण पड़ी
मैं आँख बिछाए इधर खड़ी

जागृत थी सपनों में खोई,
पहले मुसकाई, फिर रोई !
जब चलकर समय स्वयं आया,
मैं अनजानी-सी लौट गई !

जन्म-स्थान— साँखनी (बुलन्दशहर) उत्तर प्रदेश। **जन्म-तिथि**—३ फरवरी सन् १९२८। **शिक्षा**—एम० ए० (हिन्दी)। **विशेष**—हिन्दी की प्रायः सभी पत्र-पत्रिकाओं में



उर्मिला वार्ष्णेय

कविताएँ, कहानियाँ, एकांकी एवं लेख आदि समय-समय पर प्रकाशित होते रहते हैं। **वर्तमान पता**—३ डी०, ईस्टर्न कोर्ट के पीछे, नई दिल्ली-१।

भुलाया कब तुम्हें उर से !

तुम्हारे प्यार का वरदान ले करके रहूँगी !

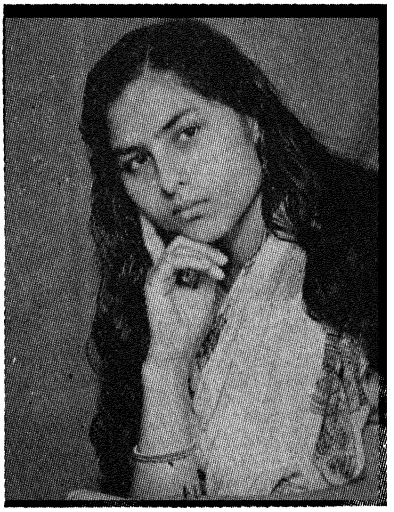
अवज्ञा तुम करो मेरी, भुलाया कब तुम्हें उर से
जलन का छोर ही पकड़ा सदा ही प्यास के डर से
दुखी हो बीन को छोड़ा करुण-सी रागिनी भर के
तुम्हारे राग का अभिमान बन करके रहूँगी ही !
तुम्हारे प्यार का वरदान ले करके ही रहूँगी ही !

अधर पर आ न पाई जो नयन को छोड़कर चल दी
लहर मँझधार में पड़कर किनारे तोड़कर चल दी
शलभ को क्या जलाएगी, तड़पकर लौ स्वयं जल दी
उसी अभिशाप का अवदान बन करके रहूँगी ही !
तुम्हारे प्यार का वरदान ले करके रहूँगी ही !

उमगकर फूल के मिस यों लता ने शूल को चूमा
कसकती याद काँटे-सी उधर हँस शूल भी झूमा
दुखों के शूल-उपवन में कहाँ सुख फूल-सा खिलता
उसी तव ज्ञान का अनुमान बन करके रहूँगी ही !
तुम्हारे प्यार का वरदान ले करके रहूँगी हो !

वियोगी की व्यथाओं में मिलन चुपचाप ही जलता
मुखर हो अश्रु के कण से सुखद वह आह में पलता
कसक बीते हुए युग की मिटाए से नहीं मिटती—
उन्हीं मादक क्षणों का ध्यान बन करके रहूँगी ही !
तुम्हारे प्यार का वरदान ले करके रहूँगी ही !

जन्म-स्थान— फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश)। **जन्म-तिथि**— १ मार्च १९४०। **विशेष**— सबसे पहला गीत 'दीदी' में प्रकाशित हुआ था। 'ताज की छाया में' नामक काव्य-संकलन में कई रचनाएँ प्रकाशित। 'दीदी' के भूतपूर्व सम्पादक



उर्मिला सिनहा

ठाकुर श्रीनाथसिंह से विशेष प्रोत्साहित, प्रभावित। विवाह से पूर्व 'उर्मिला राठौर' नाम से लिखती थीं। **वर्तमान पता**—द्वारा डॉ० एच० एन० सिनहा, ४०३ सिविल लाइन्स, विक्टोरिया रोड, जबलपुर (मध्य प्रदेश)।

मैं कैसे मन्दिर में आऊँ ?

कितने ही कर रहे अर्चना, मैं कैसे मन्दिर में आऊँ ?
कब से शत-शत दीप जल रहे, मैं कैसे लघु दीप जलाऊँ ?

ओ मेरे नयनों के सावन !
ओ मेरे पावन, मन-भावन !
मेरे उर-अन्तर ने तुमको—
माना सुर-सरि से भी पावन !

बरस-बरस घन रीत गए रे, कैसे आँसू-अर्घ्य चढ़ाऊँ ?
कितने ही कर रहे अर्चना, मैं कैसे मन्दिर में आऊँ ?

गाए गीत वेदना मेरी,
पाए मन्त्र साधना मेरी !
मंजिल को कैसे ढूँढूँगी-
मेरे चारों ओर अँधेरी !

कहते हैं सब अपनी-अपनी, किसको मन की व्यथा सुनाऊँ ?
कितने ही कर रहे अर्चना, मैं कैसे मन्दिर में आऊँ ?

खिलती शूलों-बीच कली है,
दुनिया भूलों-बीच पली है,
कुछ भी कह न सको तारों से—
यों ही शशि की रात ढली है,

अँगुली ही थक गई देव ! तो, कैसे ढीले तार मिलाऊँ ?
कितने ही कर रहे अर्चना, मैं कैसे मन्दिर में आऊँ ?
कब से शत-शत दीप जल रहे, मैं कैसे लघु दीप जलाऊँ ?

जन्म-स्थान— नथगांव छावनी (झाँसी)। **जन्म-तिथि**— सन् १९१६ । **शिक्षा**— प्रवेशिका, विद्या विनोदिनी, हाई स्कूल, इण्टर, विशारद, साहित्य रत्न । **विशेष**— बचपन से ही कविता-लेखन में रुचि । हिन्दी के अतिरिक्त



ओम्वती अग्रवाल

आपको अंग्रेज़ी, गुजराती, संस्कृत, बंगला, उर्दू तथा पंजाबी आदि भाषाओं का भी ज्ञान है। **रचनाएं**—'भारतीय त्यौहार तथा 'कथाएँ', 'लोक-कथाएं' । **स्थायी पता**— गोपाल निकेतन मोती नगर, लखनऊ।

विकल पीड़ा होती लाचार !

उपेक्षा जब होती साकार,
विकल पीड़ा होती लाचार;
भावना कोमल, मन सुकुमार,
तोड़ देती वीणा के तार;

सुनहरे सुन्दर सपनों-बीच,
निमिष-भर कर देती है कोच;
हृदय में होती बिछलन-सी,
बिछलकर गिर पड़ता है प्यार;

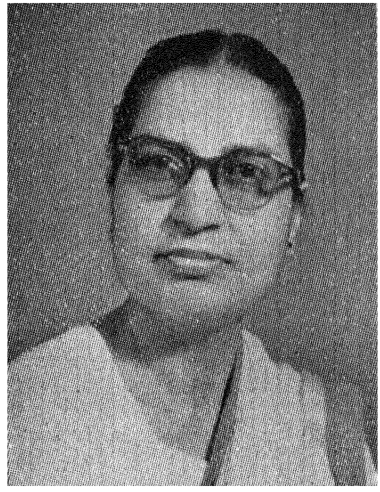
प्यार कर उठता हाहाकार,
मधुर जीवन बन जाता भार,
मसल जाते वे मन के भाव,
मचल जाते सोये उद्‌गार;

बिलखतो उच्छ्वासें सन्तप्त,
बुझा जातीं आशा के दीप;
प्रणय की गोदी में अभिशाप,
फूलता-फलता है निर्भीक;

तड़पकर रह जाती है हाय,
रुदन कर उठते भोले प्राण;
भीड़-सी होती उर में पीर,
ढुलक जाते आँसू अम्लान;

सजग होने को रोता स्नेह,
सफल होने को रोती प्रीत;
किन्तु दुखिया जीवन चुपचाप,
बना करता कविता-संगीत;

कंचनलता सब्बरवाल



जन्म-स्थान—लखनऊ । **जन्म-तिथि**— २८ अगस्त १९१८ । **शिक्षा**—एम० ए० (दर्शन, भारतीय इतिहास एवं संस्कृति, राजनीति), शास्त्री, पी-एच० डी० (दर्शन शास्त्र)। **रचनाएँ**—'मूक प्रश्न', 'संकल्प', 'त्रिवेणी', 'भोली भूल', 'पुनरुद्धार' (उपन्यास); 'आदित्यसेन-गुप्त', 'लक्ष्मी बाई', 'अमिया' (नाटक); समाज शास्त्र, 'आचार शास्त्र' 'नागरिक शास्त्र', और 'शिष्टाचार' आदि लगभग २० पुस्तकें प्रकाशित। **विशेष**—चित्र-कला और संगीत में भी रुचि रखती हैं। **वर्तमान पता**—आचार्या महिला विद्यालय, लखनऊ ।

प्रियतम तुमको भेंट करूँ क्या ?

मेरे प्यारे, मेरे जीवन, मेरे सर्वस, मेरे हिय-धन
मेरे जन्म-जन्म के तप के पावन वर, मेरे प्रिय तन-मन !
सब-कुछ तो हर लिया तुम्हीने, अब निजत्व भी रहा कहीं क्या ?

प्रियतम तुमको भेंट करूँ क्या ?

तेरे किरणों के मन्दिर में खचित रत्न बहु भाँति सु-सुन्दर
तेरे मणिमय सिहासन के पद-तल में रहते हैं सुरवर
हाड़-चाम का निज शरीर ले, मन्दिर में मैं पैठ सकूँ क्या ?

प्रियतम तुमको भेंट करूँ क्या ?

जग-भर की सृष्टि का सृष्टा रचित सखा तेरी किन्नरियाँ
मधुर राग बहते पग-पग पर थिरकत पद-ध्वनिमय सुन्दरियाँ
उन मृदु स्वर की गुञ्जारों में, दीन स्वरों मे गीत कहूँ क्या ?

प्रियतम तुमको भेंट करूँ क्या ?

झरनों के स्वर का मीठापन, नदियों की कल-कल ध्वनि प्यारी
प्यारे नव ध्वनि, नव स्वर-लहरी, पग-पग पर रचना तव न्यारी
कण्ठ रुधित स्वर बिखरे-से हैं परिचित स्वर में प्राण कहूँ क्या ?

प्रियतम तुमको भेंट करूँ क्या ?

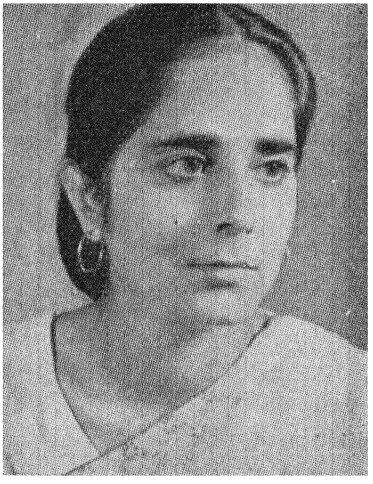
ले चन्दा की थाली आली, ले स्वर्णाभा रवि दीपाली
कैसी सन्ध्या इठलाती-सी, पा अपने प्रियतम की लाली
ले पीतल की थाली प्यारे, प्राण आरती आज करूँ क्या ?

प्रियतम तुमको भेंट करूँ क्या ?

मेरे मन में शून्य भरा है, मेरा आँचल सूना-सूना
मेरा जग तो तेरा ही है, तेरे बिन मेरा जग सूना
प्रियतम मैं तो हुई बावरी, निज ममत्व भी रहा कहीं क्या ?

प्रियतम तुमको भेंट करूँ क्या ?

जन्म-स्थान— लाहौर। **जन्म-तिथि**— १४ मार्च, सन् १९३७। **विशेष**—हिन्दी में कुछ रूबाइयाँ और गीत लिखे हैं। कहानियाँ और लेखादि विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते है।



कमल पुरी

'उलझे तार' नाम से एक उपन्यास भी लिखा है, जो शीघ्र ही प्रकाशित हो रहा है। **वर्तमान पता**—द्वारा श्री जी० ए० पुरी, हाउस नं० ३८५२ गली नं० २३ रैंगरपुरा, करौल बाग, नई दिल्ली-५।

ये नैन बरस जाते हैं !

जब याद तुम्हारी प्रिय मुझको है आती
तब जाने क्यों ये नैन बरस जाते है !

आते हैं जब सावन में पावन बादल
तब मन हो जाता है वियोग में पागल
खाता है जब मन सूनेपन में गोते
तब याद तुम्हारी आती है प्रिय प्रतिपल
रिमझिम वर्षा में कोयल है जब गाती
तब जाने क्यों ये नैन बरस जाते है !

जब बढ़ता विरही रातों का सूनापन
बादल रो-रोकर हो जाते हैं घायल
बिजली भी चमक-चमककर छिप जाती है
जैसे तुम लेकर मेरे मन का शतदल
जब चाँद भुलावा दे जाता प्रिय पथ पर
तब जाने क्यों ये प्राण तरस जाते हैं !

दिन-भर का थका हुआ पंथी भी
आ जाता है नीड़, रोज सन्ध्या को
पर दूर कहीं, दुख के सागर में मेरा मन
मारा करता है गिन-गिन हरदम गोते
ज्यों ही सन्ध्या की लाली है छा जाती
तब जाने क्यों ये नैन बरस जाते हैं !



कमला ओबराय

जन्म-स्थान—अजमेर (राजस्थान) । **जन्म-तिथि**—सन् १९२४ । **विशेष**—पुरानी विचार-धारा का परिवार होने के कारण पंजाब की हिन्दी की परीक्षाएँ घरेलू अध्ययन से ही उत्तीर्ण की। १५ वर्ष की अवस्था में ही लिखने की प्रेरणा । सबसे पहली कविता १९५६ में 'नवभारत टाइम्स' में प्रकाशित । अब तो दूसरे प्रमुख साप्ताहिक और मासिक पत्रों मे भी रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं । **वर्तमान पता**—बी० १०७ डबल स्टोरी, रमेशनगर, नई दिल्ली ।

वेदना से छटपटाते प्राण !

वेदना से छटपटाते प्राण, फिर क्यों जी रहे हैं ?

वे सुकोमल कल्पनाएँ,
औ' लिये उद्‌गार अविरल,
फूल-सा कोमल हृदय
मुरझा गया, खा चोट प्रतिपल,

छलछलाते आँसुओं-मिस, जहर फिर क्यो पी रहे हैं ?
वेदना से छटपटाते प्राण, फिर क्यों जी रहे हैं ?

सिसकियाँ ये करुण जितनी,
वेदनाएँ विषम उतनी,
भावनाएँ मृदुल जितनी,
यातनाएँ दुसह उतनी,

डूबकर ग़म की भँवर में, तैरकर क्यों जी रहे हैं ?
वेदना से छटपटाते प्राण, फिर क्यों जी रहे हैं ?



कमलाकुमारी

जन्म-स्थान—इलाहाबाद। **जन्म-तिथि**— सन् १९०७। **विशेष**—आपकी तीनों बहनें कवयित्रियाँ थीं। उनमें से आपसे बड़ी और बहनों में तीसरी स्व० श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान थीं, जिन्होंने हिन्दी-कविता के क्षेत्र में पर्याप्त यश और ख्याति अर्जित की। स्व० सुभद्राकुमारी चौहान की भाँति आपने भी राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लिया। इधर वर्षों से रुग्ण रहने के कारण आप आजकल साहित्यिक तथा सार्वजनिक कार्यों से उपरत हैं। आपके पति डॉ० एच० सिंह वाराणसी के शीर्षस्थ होम्यो-पैथी चिकित्सक हैं। **प्रकाशित रचनाएँ**—'जीवन की साधना' (१९३८)। **स्थायी पता**—द्वारा डॉ० एच० सिंह होम्योपैथ ५/५ चेतगंज, वाराणसी।

मैं कब से यहाँ खड़ी हूँ ?

वह तरल हँसी प्रियतम की,
जब मुझे याद आ जाती।
आँसू की धारा मानो-
स्वर्गंगा है बन जाती ॥

भरकर दृग-जल से प्याली
चरणों को धोने आई ।
मैं कब से यहाँ खड़ी हूँ
पर उन्हें देख क्या पाई ?

मैं विह्वल तड़पा करती,
प्रियतम-पद के दर्शन को ।
यदि चरण-वारि पा जाती,
करती पवित्र जीवन को ॥

जीवन सर्वस्व हमारे,
मैं राह देखती तब से ।
इस रूप-हीन दुखिया को-
तुम छोड़ गए हो जब से ॥

जल चुकी विरह-पावक में,
तब आज दौड़कर आए ।
अपने उज्ज्वल मस्तक पर,
क्या क्षार लगाने पाए ?



कमला चौधरी

जन्म-स्थान—लखनऊ । **जन्म-तिथि**—२२ फरवरी, १९०८ । **प्रकाशित रचनाएँ**—'उन्माद', 'पिकनिक', 'यात्रा', 'बेलपत्र' (कहानी-संग्रह) ; 'खैयाम का जाम' (रूबाई-यात उमर खैयाम का सचित्र हिन्दी - काव्य - रूपान्तर) ; 'आपन मरन जगत कै हाँसी' (हास्य-व्यंग्य की त्रिविध कविताएँ) ; 'चित्रों में लोरियाँ' तथा 'गान्धी बन जाऊँ' (बालोपयोगी कविताएं) । **विशेष**— उत्कृष्ट कहानी-लेखिका, कवयित्री तथा प्रख्यात सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्त्री । **वर्तमान पता**—विनीत कुञ्ज, छीपी तालाब, मेरठ (उत्तर प्रदेश) ।

मेरी याद तुम्हें आ जाए !

याद तुम्हारी प्रतिपल नूतन, मेरी याद तुम्हें आ जाए !
रेख-खचित है राह तुम्हारी, कौन पार जा व्यथा सुनाए !

बँधे सभी हैं जटिल नियम में,
मन के साथी-सहचर सारे ;
सतत भ्रमण कर दूर-दूर तक,
थके कल्पना के हरकारे ;

सीमा लाँघ न कोई पाया, जो सन्देश तुम्हें दे आए !
याद तुम्हारी प्रतिपल नूतन, मेरी याद तुम्हें आ जाए !

व्यस्त खोज में विविध रूप से,
किन्तु विफल सब हैं बन्धन में ;
चपल चित्त चिन्तन आतुर हो,
उड़-उड़कर फँसता उलझन में;

चतुर कपोत न बन पाया जो, थान ढूँढ पाती पहुँचाए !
याद तुम्हारी प्रतिपल नूतन, मेरी याद तुम्हें आ जाए !

भाव-पुजापा अमित सँजोए,
मन तल्लीन हुआ अर्चन में ;
साँस-साँस हो रही समर्पण,
हृदय-स्पन्दन-रत वन्दन में ;

प्राण-पहरुआ तन में तन्मय, बाहर जाने से घबराए !
याद तुम्हारी प्रतिपल नूतन, मेरी याद तुम्हें आ जाए !

स्वर, लय, ताल लुटाती रसना,
स्वत्व गँवाती प्रीति-रीत में ;
व्यथा-कहानी कह जाती है,
अस्फुट अनगढ़ सरल गीत में ;

सम्भव है संगीत मौन हो, तेरी वीणा से टकराए !
याद तुम्हारी प्रतिपल नूतन, मेरी याद तुम्हें आ जाए !

जन्म-स्थान— खैराना (सागर) मध्यप्रदेश । **जन्म-तिथि**—१५ अगस्त, १९२५ । **शिक्षा**—एम. ए. । **विशेष**—'आधुनिक जैन कवि' नामक पुस्तक में उसकी सम्पादिका श्रीमती रमारानी जैन ने आपकी रचनाएँ भी संग्रहीत की



कमला जैन 'जीजी'

हैं । आपके भाई श्री ज्ञान भारिल्ल आजकल राजस्थान साहित्य अकादेमी में हैं । **सम्पादित**—'नारी जीवन' । आप कभी-कभी कहानियाँ भी लिखती हैं । **वर्तमान पता**—मरुधर बालिका विद्यापीठ, रानी (राजस्थान) ।

एक चितवन ही बहुत है प्यार की !

भाव-भीने नयन हमको प्रिय तुम्हारे,
अब नहीं है चाह कुछ उपहार की !
मत कहो कुछ ये सलज पलकें उठाकर,
एक चितवन ही बहुत है प्यार की !

दग्ध उर के देश में प्रिय आज हो तुम,
इस बहकते-से हृदय का साज हो तुम ;
बज रही सरगम : कि इसका स्वर तुम्हीं हो-
गूँजती जो आज वह आवाज़ हो तुम ;

किन्तु मन का एक कोना है अँधेरा,
टोह है इसको नहीं संसार की !
भाव-भीने नयन हमको प्रिय तुम्हारे,
अब नहीं है चाह कुछ उपहार की !

आज लहरों पर भटकती एक सिहरन,
आज सागर के हृदय पर ज्वार-सा है ;
कौन जाने तीर कितनी दूर है प्रिय-
इस तरी के तले तो मँझधार-सा है ;

आज सुन लेंगे भँवर की हम कहानी,
और जानेंगे विकलता धार की !
भाव-भीने नयन हमको प्रिय तुम्हारे,
अब नहीं है चाह कुछ उपहार की !

पीर से ही प्यार-सा कुछ है हमें तो,
प्यार में कितनी जलन है, आँक लो तुम ;
आज इस उर में दबे अंगार मेरे,
बस निमिष-भर द्वार से ही झाँक लो तुम ;

आ न जाना पास इसकी दाह के प्रिय,
है कसम तुमको हृदय के ज्वार की !

भाव-भीने नयन हमको प्रिय तुम्हारे,
अब नहीं है चाह कुछ उपहार की !

मत कहो कुछ ये सलज पलकें उठाकर,
एक चितवन ही बहुत है प्यार की !



कमला दीक्षित

जन्म-स्थान—लखनऊ । **जन्म-तिथि**— २५ दिसम्बर सन् १९१२ । **शिक्षा**—महिला कालिज लखनऊ । **विशेष**—पारिवारिक वातावरण प्रारम्भ से ही साहित्यिक रहा । अपने मामा श्री सोहनलाल द्विवेदी से विशेष प्रभावित । गद्यगीत और कहानियों की ओर विशेष अभिरुचि । रचनाएँ 'अजन्ता', 'दक्षिण भारती', 'भारती', 'मानव', 'रेखा', 'युवक', 'दीदी', 'युग छाया', 'मस्ताना जोगी' आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं । **स्थायी पता**—कमल निवास, चाँदा (महाराष्ट्र)

सखि वे आए थे एक बार !

जब नयन अश्रु की माला ले,
चरणों पर हो जाते बलिहार ;
विकल वेदना कसक उमगती,
भूली स्मृतियाँ बन साकार ;
सच वे आए थे एक बार !

अन्तर-वीणा की झंकारें,
बिखराती हैं मादक पराग ;
औ' दूर क्षितिज के तट पर वह,
है कौन छेड़ता मधुर राग ;
क्या वे आए थे एक बार ?

शबनम धो जाती मधु प्याले,
रस-कलश लुटातीं जब कलियाँ ;
झुक झूम-झूम बहता समीर,
सींची जातीं मधु से गलियाँ ;
सखि तब आए वे एक बार !

अन्तरमन के वातायन से,
है कौन झाँकता कर पसार ;
क्या प्रियतम आए हैं मिलने,
नव खोल पलक के स्वप्न-द्वार ;
सखि, वे आए थे एक बार !



कमलेश 'कमल'

जन्म-स्थान— भरतपुर (राजस्थान)। **जन्म-तिथि**— २१ अप्रैल, १९४०। **शिक्षा**— साहित्य भूषण, विशारद, सम्पूर्ण मध्यमा, शास्त्री, (सिद्धान्त शास्त्री, सिद्धान्त वाचस्पति), मैट्रिक। **विशेष**— कविता के अतिरिक्त संगीत तथा कहानी-लेखन आदि में भी रुचि रखती हैं। **स्थायी पता**— द्वारा श्री प्यारेलाल गुप्त दयाल भवन, भरतपुर (राजस्थान)।

जलन से प्रीत मुझे है मीत !

जलन से प्रीत मुझे है मीत ! यही है मम जीवन-संगीत !

जलन में है मेरा शुचि धाम
जलन में मेरा है विश्राम
जलन में ही मुझको आराम
जलन में है मेरी शुभ जीत

जलन से प्रीत मुझे है मीत ! यही है मम जीवन-संगीत !

जलन को जपती आठों याम
जलन में जीवन-ज्योति ललाम
जलन ही मेरा प्यारा नाम
जलन ही मेरी है मृदु नीति

जलन से प्रीत मुझे है मीत ! यही है मम जीवन-संगीत !

जलन मेरा है प्रिय उत्थान
जलन में मेरा जीवन-मान
जलन का ही जग में सम्मान
जलन में हार, जलन में जीत

जलन से प्रीत मुझे है मीत ! यही है मम जीवन-संगीत !

धरा पर नित्य जला करती
धरा में ज्योति भरा करती
दिवाकर की मैं प्रहरी हूँ-
रात का तमस गलाते गीत

जलन से प्रीत मुझे है मीत ! यही है मम जीवन-संगीत !

बनी मिट्टी की मेरी देह
बना मिट्टी का मेरा गेह
भरा मिट्टी का ही सुस्नेह
दीप की ज्योति मृत्तिका-क्रीत

जलन से प्रीत मुझे है मीत ! यही है मम जीवन-संगीत !

शलभ का मुझमें है अवसान
जलन से ही उसकी पहचान
हँसे यह गगन न इसका ज्ञान
जलन की शाश्वत है यह रीत

जलन से प्रीत मुझे है मीत ! यही है मम जीवन-संगीत !

जन्म - स्थान—दिल्ली । **जन्म-तिथि**— १ जनवरी, सन् १९२८ । **शिक्षा**—हिन्दी प्रभाकर, साहित्य,रत्न, साहित्यालंकार । **प्रकाशित रचना**—'शाप या वरदान' (उपन्यास) **विशेष**—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की स्थायी समिति



कमलेश सक्सेना

की सदस्या । आपकी रचनाएँ प्रायः 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' तथा अन्य पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। दो-तीन पुस्तकें मुद्रणार्थ तैयार हैं । **वर्तमान पता**—प्रिंसिपल, कमलेश बालिका विद्यालय, बाज़ार सीताराम, दिल्ली ।

'नहीं निर्दयी तुम, नहीं बे-रहम तुम !'

तुम्हारी हँसी, और मेरे रुदन को,
न जाने नियति आज क्यों तोलती है ?

उधर झिलमिलाते हैं तारे गगन में,
इधर ओस के बिन्दु भू पर बरसते ;
उधर केलि करते विहरते हैं बादल,
इधर बूँद को भी हैं चातक तरसते ;

तुम्हारा परस प्राप्त करने विकल-सी,
हवा कुञ्ज में काँपती-डोलती है !
तुम्हारी हँसी, और मेरे रुदन को,
न जाने नियति आज क्यों तोलती है ?

तिमिर-आवरण को ज़रा चीरकर तुम,
कभी मन-हरन निज झलक तो दिखाओ;
कुसुम की जो भीगी हुई पत्तियाँ हैं,
उन्हें अपने हाथों से पोंछो, सजाओ;

यह मोती के दाने तुम्हारे लिए हैं,
सदा जग की आँखें जिन्हें रोलती हैं !
तुम्हारी हँसी, और मेरे रुदन को,
न जाने नियति आज क्यों तोलती है ?

न जाने तुम्हारे श्रवण के पुटों तक,
पहुँच पायगी कब दबी आह मेरी ;
न जाने कि किस दिन तुम्हारे नगर तक,
मुझे प्राण ! पहुँचायगी राह मेरी ;

'नहीं निर्दयी तुम, नहीं बे-रहम तुम',
क्षितिज पर से कोई किरण बोलती है !
तुम्हारी हँसी, और मेरे रुदन को,
न जाने नियति आज क्यों तोलती है ?

जन्म-स्थान—मुरादाबाद। **जन्म-तिथि**—२५ मई, १९२५। **शिक्षा**—एम० ए० (इतिहास तथा हिन्दी)। **प्रकाशित रचनाएँ**-'जीवन-दीप', 'ऊष्मा' (गद्य-काव्य-संकलन)। **विशेष**—गद्य-काव्य-लेखन की दिशा में विशेष ख्याति अर्जित की।



कान्ति त्रिपाठी

•

प्रकृति और जीवन के अनुभव ही रचनाओं के मुख्य प्रेरणा-स्रोत। सृजन के क्षण ही आन्तरिक शान्ति के अग्रदूत। सन् १९४७ से मुरादाबाद के गोकुलदास गर्ल्स कालिज में प्राध्यापिका। **स्थायी पता**—लोहागढ़, मुरादाबाद।

प्राण ! अनजाने निकटतर आ रहे हो !

मैं किसी के चरण की गति, प्रणति हूँ आराधना की !

डगमगा जाएँ न उनके चरण पथ में,
कठिन पथ है, गहन गुम्फित वीथिकाएँ ;
लड़खड़ा जाएँ न वह विश्वास-नद में,
कठिन मद है, कौन वह तृष्णा बुझाए ;

मैं किसी के प्राण की ऊष्मा, कसक हूँ कामना की !
मैं किसी के चरण की गति, प्रणति हूँ आराधना की !

भावना जो दी, उसे पाथेय मानो,
कामना को लक्ष्य मानो, ध्येय मानो ;
मधुर मानो वेदना, रस पेय मानो,
यह हलाहल अमृत है, मानो, न मानो ;

जो निशा के स्वप्न, उनमें प्रगति हूँ उद्भावना की !
मैं किसी के चरण की गति, प्रणति हूँ आराधना की !

चरण-ध्वनि में स्मृति गुँजाते जा रहे हो,
इस विदा को एक छलना पा रहे हो ;
एक छल हित सौ छलों को ला रहे हो,
प्राण अनजाने निकटतर आ रहे हो ;

मैं चरण की धूल हूँ, या सिद्धि अपलक साधना की !
मैं किसी के चरण की गति, प्रणति हूँ आराधना की !



कीर्ति चौधरी

जन्म-स्थान — नईमपुर (उन्नाव) उत्तरप्रदेश। **जन्म-तिथि**—जनवरी, १९३५। **शिक्षा**—आगरा विश्वविद्यालय से एम० ए०; 'हिन्दी उपन्यास और कथानक तत्त्व' विषय पर शोध-कार्य (अभी पूरा नहीं हुआ)। **विशेष**—हिन्दी के तरुण कहानीकार श्री ओंकारनाथ श्रीवास्तव की सहधर्मिणी और प्रख्यात कवयित्री श्रीमती सुमित्रा-कुमारी सिनहा की सुपुत्री। पूरा नाम कीर्तिबाला सिनहा। **प्रकाशित रचनाएँ**—'कविताएँ', 'तीसरा सप्तक' (अज्ञेय द्वारा सम्पादित संकलन में कविताएँ संकलित) **वर्तमान पता**—द्वारा श्री ओंकारनाथ श्रीवास्तव, १ भगतसिंह रोड, विले पार्ले पश्चिम, बम्बई-५७।

मन की मूर्ति स्वयं गढ़ लूँगी !

चाहे जिस मन्दिर के पट को अब खोलो,
मैं अपने मन की मूर्ति स्वयं गढ़ लूँगी !

भटकी राहों में मुझे न रोना आता
मेरे चरणों को बढ़ते जाना भाता
चाहे जितने अस्पष्ट बोल अब बोलो

मैं अपने मन के भाव समझ ही लूँगी !
मैं अपने मन की मूर्ति स्वयं गढ़ लूँगी !

मेरी दृढ़ता पर तुम्हें दया यदि आए
मेरे साहस की कथा तुम्हें भरमाए
चाहे जितने भी निष्ठुर तब तुम हो लो

मैं अपने ऊपर दया स्वयं कर लूँगी !
मैं अपने मन की मूर्ति स्वयं गढ़ लूँगी !

तो वरदानों की छाँह बनाए रहना
'साधना सफल हो, सिद्धि मिले' यह कहना
चाहे जिस दिशि में अब नौका ले डोलो

मैं अपने तट की खोज स्वयं कर लूँगी !
चाहे जिस मन्दिर के पट को अब खोलो,
मैं अपने मन की मूर्ति स्वयं गढ़ लूँगी !



कुन्थकुमारी जैन

जन्म-स्थान — दिल्ली । **जन्म-तिथि**—१२ अक्तूबर, १९१६ । **शिक्षा**—बी० ए० (ऑनर्स), बी० टी० । **विशेष**—दिल्ली और पंजाब-विश्व-विद्यालय की बी० ए० और बी० टी० परीक्षाओं में महिलाओं में प्रथम आने के कारण स्वर्ण-पदक प्राप्त किया। दो वर्ष तक लाहौर के हंसराज महिला ट्रेनिंग कालिज में बी० टी० श्रेणी की अध्यापिका। दिल्ली के प्रसिद्ध शिक्षा-प्रेमी फतहचन्द जैन खजांची की पुत्री और 'ज्ञानोदय' तथा भारतीय ज्ञानपीठ के सम्पादक एवं नियामक श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन की धर्मपत्नी। **स्थायी पता**—'साहू जैन, निलय' ९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता—२७।

मानस में कौन छिपा जाता ?

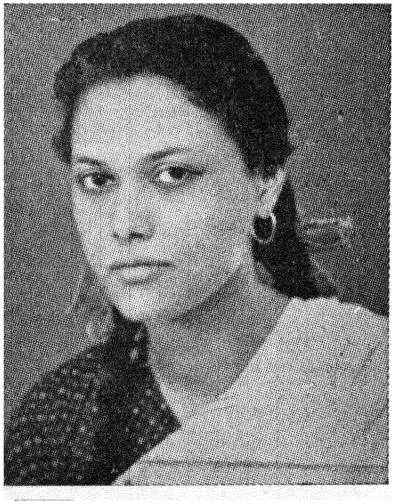
जीवन में ज्वार उठा करके, मानस में कौन छिपा जाता
मेरे उन्माद-भरे मन को, अनजाने में बहला जाता

मानस में कौन छिपा जाता ?

दे क्षण में सुख-दुख की झाँकी, इस पल विराग, उस पल रागी
उठती-मिटती-सी पीड़ा को, उलझा जाता, सुलझा जाता

मानस में कौन छिपा जाता ?

शशि रजत-सुधा बन रजनी में, मादकता लहराता जी में
किसका माधुर्य तेज बनकर, रवि-पथ पर बिखर सिमट जाता
मानस में कौन छिपा जाता ?



कुमारी कुमुद

जन्म-स्थान—ग्राम मरवन (मुजफ़्फ़रपुर) बिहार। **जन्म-तिथि**—सन् १९४१। **शिक्षा**—बी० ए० (ऑनर्स), इस वर्ष बिहार - विश्वविद्यालय से एम० ए० (अंग्रेजी) की परीक्षा दी है। **विशेष**—बिहार के हास्य-रस के सुप्रसिद्ध कवि श्री रामजीवन शर्मा 'जीवन' की सुपुत्री। **प्रकाशित रचनाएँ**—'फुलझड़ियाँ' नामक बालोपयोगी कविताओं का पहला संग्रह १९६० में प्रकाशित। 'कुमुदिनी' १९६० में प्रकाशित। कई कविता-संग्रह अप्रकाशित। सम्प्रति मुजफ़्फ़रपुर के महन्त दर्शनदास महिला कालिज में अंग्रेजी की लैक्चरार हैं।

सिसकता प्यार ले लूँगी !

शरद् की पूर्णिमा से हास का वरदान तुम माँगो,
अमा से आँसुओं का अर्घ्य मैं साभार ले लूँगी !

चमन में विकसते किसलय
अगर हैं दीखते सुन्दर,
विजय का मौन जर्जर ढूँह
क्या छूता नहीं अन्तर ?

खिली कलियों, मिले अलियों-भरा मधुमास तुम माँगो,
झड़े पत्तों-भरा मैं बिखरता पतझार ले लूँगी !

नहीं यह बात, है मिलता
न मुझको स्नेह फूलों से,
नहीं मालूम क्यों फिर भी—
उमड़ता प्यार शूलों से ?

नये राकेश का सित मसृण रश्मि-वितान तुम माँगो,
प्रखर तिग्मांशु के मैं दहकते अंगार ले लूँगी !

उषा का मुसकराता मुख
तुम्हारा मुग्ध करता मन,
मुझे पर प्रेरणा देते,
निशा के बरसते लोचन ;

किसी नव आगता के अधखिले अरमान तुम माँगो,
विरहिणी राधिका का मैं सिसकता प्यार ले लूँगी !
शरद् की पूर्णिमा से हास का वरदान तुम माँगो,
अमा से आँसुओं का अर्घ्य मैं साभार ले लूँगी !

जन्म-स्थान—वाराणसी ।। **जन्म - तिथि** — १० अगस्त, १९४१ । **शिक्षा**—बी० ए० । **विशेष**—कहानी और कविता लिखने में गहनतम रुचि । लगभग दो दर्जन कहानियाँ



कुमारी कुमुद

और उतनी ही कविताओं का प्रकाशन । 'प्यासा पंछी' नामक एक उपन्यास प्रकाशन की प्रतीक्षा में है। **वर्तमान पता**—द्वारा श्री प्रकाशचन्द्र ५/४४ चेतगंज, वाराणसी ।

गायन बनकर आए हो !

मेरे मन के अम्बर में, श्यामल घन बनकर छाए हो !

मेरी सुधियों की पलकों पर,
पीड़ा के आँसू बिखराना;
मेरे उर की गहराई में,
साँसों-सा यह आना-जाना ;

किसी सुहागिन के उन्मुक्त समर्पण से मन-भाए हो !
मेरे मन के अम्बर में, श्यामल घन बनकर छाए हो !

किसी थके पाँखी-जीवन का,
मुझको अब आभास हो रहा;
दूर लग रहा जो लक्ष्य-स्थल,
वही हमारे पास सो रहा;

किसी कण्ठ से मधुर प्रेम का, गायन बनकर आए हो !
मेरे मन के अम्बर में, श्यामल घन बनकर छाए हो !



कुमारी मधु

जन्म-स्थान—चन्दौसी (मुरादाबाद), उत्तर प्रदेश। **जन्म-तिथि**—सन् १९३३। **शिक्षा**—सन् १९४९ में प्रयाग महिला विद्यापीठ से 'सरस्वती', १९५० में 'साहित्य-रत्न', १९५७ में एम० ए० (हिन्दी) आगरा विश्वविद्यालय से। **कार्य**—१९५७ से जून १९६१ तक चन्दौसी के गर्ल्स कालिज में हिन्दी की प्राध्यापिका रहीं। अब दिल्ली के एक सरकारी स्कूल में हैं। **रचनाएँ**—'स्वगता' नामक काव्य-संकलन प्रेस में है और 'सागर-सीपी' नामक संग्रह की पांडुलिपि तैयार है। 'बाल-गीतों' के संकलन भी प्रकाशन की प्रतीक्षा में हैं **विशेष**—१९५० से कवि-जीवन प्रारम्भ। कहानियाँ और लेख भी प्रायः लिखती हैं। वास्तविक नाम सरस्वती वार्ष्णेय। **वर्तमान पता**—ए-८/२७ प्रताप बाग, दिल्ली-६।

प्राणों के समीप तू आया क्यों ?

मैंने जितने ही चित्र बनाये गीतों के,
उतना ही प्राणों के समीप तू आया क्यों ?

उस बन्धन में बँधना था कितना मधुर मुझे,
जिसको तैयार किया तेरे उच्छ्वासों ने ;
उस कारा में घिर हृदय-कली मुस्काती थी,
जिसका निर्माण किया तेरे विश्वासों ने ;

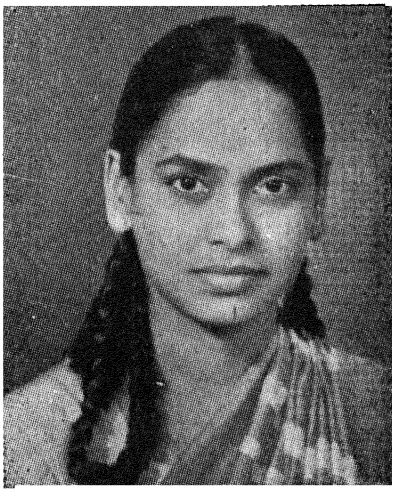
जब-जब भी मँझधारों ने मुझे डुबाया था,
तब लहरों पर बिठला तट पर पहुँचाया क्यों ?
मैंने जितने ही चित्र बनाये गीतों के,
उतना ही प्राणों के समीप तू आया क्यों ?

मैं भटक रही अब तक मन की उन गलियों में,
जिनमें स्वर गूँज रहा तेरी बाँसुरिया का ;
कैसे वे दृश्य भुला पाऊँगी कह निर्मम-
जिनमें जादू बोला मेरी पायलिया का ;

जितनी नैराश्य-तिमिर से डरकर भागी मैं,
उतना जीवन से करना प्यार सिखाया क्यों ?
मैंने जितने ही चित्र बनाये गीतों के,
उतना ही प्राणों के समीप तू आया क्यों ?

तूने तो ढूँढ लिया अपनी उस मुग्धा को,
जिसके नयनों से छलका करती रस-गागर ;
पर मेरा जीवन-गोकुल तो बीरान हुआ,
कह दे कैसे इसमें उमड़ेगा सुख-सागर ;
तू सपनों की मथुरा में उत्सव नित्य मना,
पर मेरे मन से अब तक निकल न पाया क्यों ?
मैंने जितने ही चित्र बनाये गीतों के,
उतना ही प्राणों के समीप तू आया क्यों ?

जन्म-स्थान— जीवछपुर, सहर्षा (बिहार) । **जन्म-तिथि**—२७ सितम्बर, १९३६। **विशेष**—बिहार की नई उठती हुई कवयित्री। १९५३ से साहित्य - रचना प्रारम्भ । साहित्य, राजनीति एवं सामाजिक कार्यों के प्रति विशेष रुचि



कुमारी राधा

और उत्साह। कविताओं के अतिरिक्त कहानियाँ और निबन्ध भी लिखती हैं । **प्रकाशित रचना**—'सरयू कछारों की हरिणी' । **स्थायी पता**—नागेश्वर कालोनी, बाकर गंज, पटना—४ ।

तुम्हारी याद सताती है !

तम्हारी याद सताती है !
घाव की टीस बढ़ाती है !

आम पर बोल रही कोयल
दर्द कुछ घोल रही कोंपल
आँख से अपने तुम ओझल
कहीं छिप बिरहन गाती है—
"तुम्हारी याद सताती है !"

कहीं पर बजती मादक बीन
नयन से निंदिया लेती छीन
तड़पती मरु में कोमल मीन
तुम्हें छू पुरवा आती है !
घाव की टीस बढ़ाती है !

अभी मैं कहती हूँ कुछ बोल
मुझे दे चुम्बन कुछ अनमोल
प्राण से प्राण ज़रा ले मोल
उमरिया बीती जाती है !
घाव की टीस बढ़ाती है !
तुम्हारी याद सताती है !

जन्म-स्थान—बुलन्दशहर।
जन्म-तिथि—सन् १९३२ ।
शिक्षा—साहित्य-रत्न, हिन्दी प्रभाकर, विदुषी, एम. ए.।
विशेष—बचपन से ही पद्य में रुचि रही। एक बार पढ़ने से ही कविताएँ कण्ठस्थ हो जाती थी। प्रायः आकाश वाणी नई



कुसुमकुमारी सिनहा

दिल्ली और इधर उधर होने-वाले कवि-सम्मेलनों में भाग लेती रहती हैं। आपके गीतों में जितनी पीड़ा होती है, उससे कहीं अधिक आपकी वाणी में लोच होता है। **स्थायी पता**—२९ शिवपुरी, रेलवे रोड, बुलन्दशहर (उत्तर प्रदेश)।

सखि, उनको पाषाण न कहना !

इन चंचल नयनों से छिपकर, वह मेरे मन में रहते हैं
मेरी सिसकी, मेरी आहें, सब चुपके-चुपके सहते हैं
तुम मेरे नयनों से छिपने को उनका अभिमान न कहना !
सखि, उनको पाषाण न कहना !

वह मेरे नयनों की उज्ज्वल एक बूंद-से करुण सजल हैं
वह मेरे प्राणों के झिलमिल दीपक-से सस्नेह विकल हैं
तुम मेरे प्राणों में रहने वाले को निष्प्राण न कहना !
सखि, उनको पाषाण न कहना !

वह मेरी आशा-से भोले, वह अभिलाषा-से अल्हड़ हैं
वह मेरी चाहों-से चंचल, वह मेरी साधों-से दृढ़ हैं
तुम मेरे प्रति नीरवता को उनका निष्ठुर मान न कहना !
सखि, उनको पाषाण न कहना !

वह मेरी पीड़ा-से मादक, वह मेरी सुधि-से कोमल हैं
वह मेरे सपनों-से सुन्दर, वह मेरे मन-से निश्छल हैं
तुम मेरे संसृति के चिर पहचाने को अनजान न कहना !
सखि, उनको पाषाण न कहना !

जन्म - स्थान— बदायूँ, उत्तर प्रदेश। जन्म-तिथि— १५ जुलाई १९३५। विशेष— रचना-काल लगभग १० वर्ष से। सबसे पहली कविता बदायूँ के एक कवि-सम्मेलन में



गिरीश रस्तौगी

पढ़ी। कविता के अतिरिक्त नृत्य, अभिनय तथा कहानी आदि में रुचि। वर्तमान पता— द्वारा डॉ० जी० डी० रस्तौगी, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)।

तुमको पाकर सब-कुछ पाया !

तुमको पाकर सब-कुछ पाया, अब खोने की चाह नहीं है !
पाने में कितना कुछ खोया, फिर भी कोई आह नहीं है !

हँसने की बेला छोटी-सी
मधु बिखराती गाती आई,
जब-जब तुमको पास न पाया
रह-रहकर अँखियाँ भर आईं;
दिल में इतना दर्द छिपाया, अब कोई भी दाह नहीं है !
तुमको पाकर सब-कुछ पाया, अब खोने की चाह नहीं है !

टेढ़े-मेढ़े पथ पर चलकर
कितनी ही उलझन आई हैं,
जब-जब काँटों पर पग पहुँचे
महक सुमन की भी आई है;
फूलों के ही पथ से गुज़रूँ, ऐसी कोई चाह नहीं है !
तुमको पाकर सब-कुछ पाया, अब खोने की चाह नहीं है !

नित-नित की आशाएँ लेकर
कौन निराशा मन में बाँधूं,
जीवन और मरण दोनों हैं
किसको छोड़ूँ, किसको साधूं;
जीने का अधिकार मिला है, दुनिया की परवाह नहीं है !
तुमको पाकर सब-कुछ पाया, अब खोने की चाह नहीं है !

जन्म-स्थान— सिउड़ी, जिला वीरभूमि (बंगाल)। **जन्म-तिथि**—सन् १९३४। **शिक्षा**—पटना-विश्वविद्यालय से हिन्दी में बी. ए. (ऑनर्स) तथा एम. ए.। आजकल उसी विश्वविद्यालय से 'हिन्दी-साहित्य में राष्ट्रीय चेतना' विषय पर शोध-कार्य में संलग्न! **विशेष**—सन् १९५२ से लिखना प्रारम्भ किया। **वर्तमान पता**—हिन्दी-प्राध्यापिका गौतम बुद्ध महिला कालिज, गया (बिहार)।



गीता श्रीवास्तव

सुमन समझकर रौंद न देना !

पथ में शतदल बिछा रही हूँ, शंकित मन से अपने
सँभल-संभल पग रखना प्रियतम, बिखर न जाएँ सपने

ये सपने वंचित जीवन की, संचित निधियाँ मेरी
कंटकमय राहों में निर्मम, याद बिछी हैं तेरी

बहुतेरी स्वप्निल पाँखुरियाँ, व्यथा ओस से झलमल
प्रतिपल कुम्हलाने का भय है, परिमलमय है शतदल

लोलुप आँखें, अलि की पाँखें गूँज रही थीं कब से
लूट न जाए मधु का संचय, खिले न उनके रव से

अमल कमल-दल अभिसिंचित है, पावन आँसू-जल से
सुमन समझकर रौंद न देना, लगते अन्तस्तल से

जन्म स्थान — बरेली। **जन्म-तिथि**—२२ अक्तूबर १९२७। **शिक्षा**—इण्टर, एच० टी० सी०, हिन्दी प्रभाकर, साहित्य रत्न, साहित्यालंकार। **विशेष**—हिन्दी के प्रख्यात पत्र-



चन्द्रकान्ता

कार, लेखक और 'नव भारत टाइम्स' दैनिक के भूतपूर्व प्रधान सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री की सुपुत्री। **स्थायी तथा**—द्वारा श्री जौहरीमल गुप्ता, मन्दिर वाली गली, गान्धी नगर, दिल्ली ३१।

क्या तेरा संसार यही है ?

कर्मों ने चकफेरी बाँधी
बही चतुर्दिक् दुख की आँधी
जीवन देकर मिले उपेक्षा, क्या जग का व्यापार यही है ?
क्या तेरा संसार यही है ?

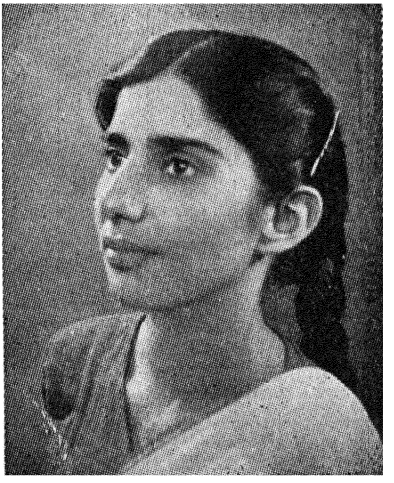
प्राणों में जलती हो ज्वाला
हँसती मुस्कानों की माला
नीर-भरे भी नीरद प्यासे, क्या मानव का प्यार यही है ?
क्या तेरा संसार यही है ?

जहाँ अभाव स्वयं जीवन है
असफलताएँ ही यौवन हैं
दुख झेलें कैसे शिव, सुन्दर, क्या संयम का सार यही है ?
क्या तेरा संसार यही है ?

विस्तृत नभ में तारक-माला
दिपती-छिपती कर उजियाला
जन्म-मरण की लुका-छिपी में, तव निर्दय व्यवहार यही है ?
क्या तेरा संसार यही है ?

झलक न सच की मिल पाती है
स्वप्न सृष्टि ही रच पाती है
नियति विषमता और विपर्यय, क्या निर्मम उपहार नहीं है ?
क्या तेरा संसार यही है ?

जन्म-स्थान—झाँसी (उत्तर प्रदेश। **जन्म-तिथि**— १४ जुलाई सन् १९३५। **शिक्षा**—बी० ए०, हिन्दी प्रभाकर।



चन्द्रकान्ता वर्मा

विशेष रुचि — समाज-सेवा।
वर्तमान पता—४ सी। १६०, लाजपतनगर, नई दिल्ली-१४।

पर करूँ क्या ?

मैं तुम्हारी प्रीति को पहचानती हूँ, पर करूँ क्या ?

यह कहाँ सम्भव कि बन्धन-
लाज के मैं तोड़ डालूँ,
मैं विवश हूँ, किस तरह से-
बात यह बाहर निकालूँ;
दर्द हूँ दिल में दबाए
आँख में आँसू छिपाए—

इस नई अनरीति को मैं जानती हूँ, पर करूँ क्या ?
मैं तुम्हारी प्रीति को पहचानती हूँ, पर करूँ क्या ?

स्वप्न की दुनिया बसाई थी-
कभी, है याद मुझको,
कल्पनाओं में सजाई थी-
कभी, है याद मुझको;
पर वही तो स्वप्न मन को,
भूल से, अब छेदते हैं—

धड़कनों के गीत भी मैं जानती हूँ, पर करूँ क्या ?
मैं तुम्हारी प्रीति को पहचानती हूँ, पर करूँ क्या ?

हम नदी के दो किनारों-
की तरह से दूर हैं अब,
मिलन को आशा हृदय में
पर बहुत मजबूर हैं अब;

पढ़ सका है कौन अब तक,
भाग्य में विधि ने लिखा जो—

मैं निठुर संसार की इस जीत को भी जानती हूँ, पर करूँ क्या ?
मैं तुम्हारी प्रीति को पहचानती हूँ, पर करूँ क्या ?



चन्द्रकिरण सौनरेक्सा

जन्म - स्थान—नौशहरा, पेशावर। **जन्म-तिथि**—सन् १९२०। **विशेष शिक्षा**—केवल छठे दर्जे तक हुई। १९३६ में साहित्यरत्न किया और अपना साहित्यिक जीवन कविता से प्रारम्भ किया। सन् १९३४ से कहानियाँ लिखनी शुरू की। १९४० में हिन्दी के प्रख्यात लेखक, पत्रकार और चित्रकार श्री कान्तिचन्द्र सौनरेक्सा से विवाह। 'आदम-खोर' नामक कहानी-संग्रह पर १९४७ में आपको हिन्दी-साहित्य सम्मेलन से सेकसरिया-पुरस्कार मिला। आपकी चुनी हुई कहानियों का एक संग्रह रूसी भाषा में भी प्रकाशित हो गया है। अंग्रेजी, चीनी और जर्मन भाषाओं में भी कुछ कहानियों के अनुवाद प्रकाशित हुए हैं। **पता**—आकाश वाणी केन्द्र, लखनऊ।

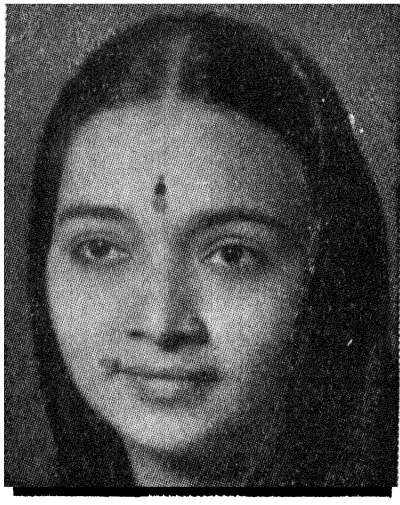
प्यार सदा पागल क्यों होता ?

जीवन की खिलती हरियाली
मिटते सुख-स्वप्नों की लाली
भर-भर आँखें देख तनिक भी,
जो न कभी इक पल को रोता !
प्यार सदा पागल क्यों होता ?

महा सिन्धु की महा लहर-सी
हहराती गंगा पाकर भी
प्यासा अपने जले हुए क्षत
खारे आँसू-जल से धोता !
प्यार सदा पागल क्यों होता ?

तेरे इंगित पर जो मरता
नित नव पीड़ा से मन भरता
सुख के बिखरे फूलों को तज,
दुख के काँटे स्वयं सँजोता !
प्यार सदा पागल क्यों होता ?

प्यास न बुझती, जलन न मिटती
पल-पल पीर अधिक ही बढ़ती
पर हँस प्रेमी उसी चाह पर
मरता, मरकर जीवित होता !
प्यार सदा पागल क्यों होता ?



चन्द्रमुखी ओझा 'सुधा'

जन्म-स्थान—इलाहाबाद। **जन्म-तिथि**— २३ अप्रैल १९२४। **विशेष**—हिन्दी की कोकिल-कण्ठी कवयित्री और साधिका। विवाह के उपरान्त कविता की ओर प्रवृत्ति। संस्कृत के उद्भट विद्वान् और व्याख्याता स्व० चन्द्रशेखर शास्त्री के अनुज की धर्मपत्नी।

इनके पति ने रींवा में 'सुधा-प्रेस' नाम से एक प्रेस और साहित्यिक पुस्तकों की दुकान खोल रखी है। **प्रकाशित रचनाएं**—'पराग' और 'वन्दना' (कविता-संग्रह)। **अप्रकाशित रचनाएं**—'नाव के गीत' (गद्य-गीतों का संग्रह)। **वर्तमान पता**— सुधा प्रेस रींवा, (मध्य प्रदेश)।

प्रीत बन जाओ !

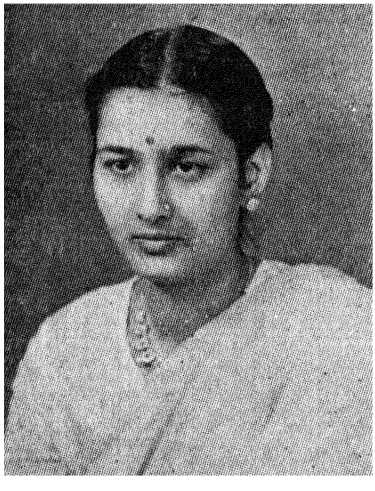
छूकर प्राणों की पीर, प्रीत बन जाओ !

जो कुछ सुलझी थी, आज उसे उलझा दो
जो कुछ उलझी थी, आज उसे सुलझा दो
मेरे आँसू के सावन आज सुखा दो
मैं चाह रही हूँ, मुझको आज दुखा दो
नयनों के नेही स्नेह-नीति बन जाओ !
छूकर प्राणों की पीर, प्रीत बन जाओ !

तुम स्नेह-स्वाति बन, जीवन-भर तरसाओ
मेरे चित-चातक को न अधिक दरसाओ
अधरों की यदि मुसकान चुराओ जानूँ
इतना कर दो तो धन्य भाग में मानूँ
तुम वर्तमान के चिर अतीत बन जाओ !
छूकर प्राणों की पीर, प्रीत बन जाओ !

मेरे सम्मुख झूठा शृङ्गार नहीं है
स्वप्निल आशाओं का आधार नहीं है
मेरी वीणा के बिखरे तार सजा दो
इंगित से उसको क्षण-भर आज बजा दो
गाकर तुम मेरे गीत, मीत बन जाओ !
छूकर प्राणों की पीर, प्रीत बन जाओ !

जन्म - स्थान — मैनपुरी (उत्तर प्रदेश)। **जन्म तिथि**— सन् १९३६ । **शिक्षा**—बी० ए० ; इसके अतिरिक्त साहित्य-रत्न, साहित्यालंकार तथा सरस्वती । **विशेष**—लेखन-कार्य



चन्द्ररेखा वर्मा

सन् १९४८-४९ से ही प्रारम्भ किया । **प्रकाशित रचना**— 'वन्दिनी के गीत' । **स्थायी पता**—द्वारा डॉ० मनमोहन-सिंह गांधीगार, टपरा, झाँसी (उत्तर प्रदेश)।

अरे, ये किसने बोने शूल ?

अरे ये किसने बीने शूल, बिछाईं किसने ये कलियाँ ?

यह किस वंशी की तान,
कि जिसके स्वर-स्वर से ले ताल, अचानक थिरक उठा जीवन ?
यह किन अधरों का गान,
फूटते जिसके बेसुध रागों से, उल्लास-भरे निर्झर अनगिन ?
यह कौन अछूता सुमन,
बीनने जिसका मदिर पराग, भाग आईं भ्रमरावलियाँ ?
प्राण, ये किसने बीने शूल, बिछाईं किसने ये कलियाँ ?

यह कैसी पागल प्यास,
माँगना जिसने सीखा नहीं, न कुछ भी पाने का उल्लास ?
यह अजब अनोखी आस,
खोजती खोकर खोने हेतु, निराशा में पलता विश्वास !
यह कैसी लुटी बहार,
खोजती आई जो मधुमास, बन गई मन की रँगरलियाँ ?
आह, ये किसने बीने शूल, बिछाईं किसने ये कलियाँ ?

यह किन प्राणों का खेल,
कि जिसमें हार नहीं, ना जीत, युगों का विरह क्षणों का मेल ?
यह मधु का चषक उँडेल,
कौन कह गया कान में, 'आज बिता दूँ कल्प, वेदना झेल ?'

वह कौन नया तूफ़ान,
कि जिसके भय से तरु से लगीं, लाज की मारी वल्लरियाँ ?
सखे, ये किसने बीने शूल, बिछाईं किसने ये कलियाँ ?

यह किस जीवन का तिमिर,
खोजता आया मेरे पास, स्नेह की ज्योति सहज ही घिर ?
ये किसके सपने बधिर,
नहीं जो सुनें पराई बात, नित्य आते नयनों में तिर ?
यह कैसी ज्वाला उठी,
जलाने आई है जो आज, प्यार की शत दीपावलियाँ ?
बता दो किसने बीने शूल, बिछाई किसने ये कलियाँ ?

चन्द्रवती ऋषभसेन जैन



जन्म-स्थान—दिल्ली । **जन्म-तिथि**—१० मई सन् १६०६ । **शिक्षा**—घर पर ही हुई । **विशेष**—आपके पिता डॉ० सर मोतीसागर पंजाब-हाईकोर्ट के जस्टिस और दिल्ली-विश्व-विद्यालय के वाइस चांसलर थे । पति श्री ऋषभसेन जैन देहरादून के भगवानदास बैंक के डायरेक्टर थे । आपके कहानी-संग्रह 'नींव की ईंट' पर अ० भा० हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की ओर से १६४३ में सेकसरिया पुरस्कार भी प्रदान किया गया था । कुछ दिन तक आप 'दीदी' की प्रधान सम्पादिका भी रही थी। **वर्तमान पता**—प्रीतम कैसल, देहरादून ।

मैं न तुमको भूल पाती !

तुम न मुझको याद करते, मैं न तुमको भूल पाती !

तुम पुरुष हो, है तुम्हें अधिकार यह, मुझसे न बोलो,
है मुझे आदेश—'सह लो, पर कभी भी मुँह न खोलो,'
फूल बिखराती सदा मैं, पर सदा ही शूल पाती !
तुम न मुझको याद करते, मैं न तुमको भूल पाती !

तुम रचा सकते नया संसार नित अपना नवेला,
भार पर बीते दिवस का है मुझे सहना अकेला,
खोजती जब-जब सरलता, मैं तभी प्रिय तूल पाती !
तुम न मुझको याद करते, मैं न तुमको भूल पाती !

सब दिशाओं में निरन्तर रथ तुम्हारे चल रहे हैं,
पर इधर अरमान मेरे अश्रु बनकर ढल रहे हैं,
चाहती हूँ पर न मन के हाय गज को हूल जाती !
तुम न मुझको याद करते, मैं न तुमको भूल पाती !

तुम सबल हो, जब जिधर चाहो चलो प्रिय, कौन रोके,
मैं हिलाऊँ उँगलियाँ भी, तो मुझे यह विश्व टोके,
मैं अकासी बेल, तुम-सी काश मैं भी मूल पाती !
तुम न मुझको याद करते, मैं न तुमको भूल पाती !

जन्म-स्थान— दिल्ली । **जन्म-तिथि**— २५ दिसम्बर, १९१५ । **प्रकाशित रचनाएँ**— 'सीकर', 'वेणुकी', 'शुकपिक', 'रेखाएँ', 'आभा', 'गोधूलि', 'अन्तरंगिणी', 'विपंची' तथा 'काकली' (कविता-संग्रह); 'उत्सर्ग' (कहानी-संग्रह) ।



तारा पाण्डे

विशेष—हिन्दी की अत्यन्त ख्याति-प्राप्त कवयित्री । संवत् १९९८ में अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से प्रतिवर्ष दिया जाने वाला 'महिला सेकसरिया पुरस्कार' आपको 'आभा' नामक काव्य-संग्रह पर दिया गया । **स्थायी पता**— साकेत, नैनीताल (उत्तर प्रदेश)।

गीत गाऊँ मैं मधुर-सा !

आज मेरे प्राण में स्वर
भर गया कोई मनोहर !

क्षितिज के उस पार से वह मुसकराता पास आया
मधुर मोहक रूप में उस मूर्ति ने मुझको लुभाया
कौन-सा सन्देश लेकर सजनि, वह आया अवनि पर ?
आज मेरे प्राण में स्वर
भर गया कोई मनोहर !

घुल गई थी प्राण में अपमान की भीषण व्यथा
ले गया वह साथ अपने दुख-भरी बीती कथा
आँख में आया सजनि, वह आज मेरे अश्रु बनकर !
आज मेरे प्राण में स्वर
भर गया कोई मनोहर !

कर गया अनुरोध मुझसे गीत गाऊँ मैं मधुर-सा
भूल जाऊँ जन्म का दुख, मृत्यु को समझूँ अमरता
यह अमर उपदेश उसका सजनि, कण-कण में गया भर !
आज मेरे प्राण में स्वर
भर गया कोई मनोहर !

स्वप्न से ही भर गया अलि, आज मेरा जीर्ण अंचल
वेदना की वह्नि में तप हो उठे हैं प्राण उज्ज्वल
दे गया वह सजनि मुझको जन्म का वरदान सुन्दर !
आज मेरे प्राण में स्वर
भर गया कोई मनोहर !

स्व० तोरनदेवी शुक्ल 'लली'

जन्म-स्थान—पिपरिया, जबलपुर (ननिहाल में)। **जन्म-तिथि**—संवत् १९५३। **निधन-तिथि**—९ नवम्बर, १९६०। **विशेष**—१५ वर्ष की अवस्था में आपका विवाह हमीर गाँव (रायबरेली) निवासी श्री कैलाशनाथ शुक्ल के साथ हुआ था। आपके सुपुत्र पं० हरिहर-



नाथ 'सरोज' भी अच्छे कवि थे। खेद है कि अब इनका भी देहान्त हो चुका है। 'लली' जी के पति श्री शुक्ल जी आजकल लखनऊ में रहते हैं। आपकी 'जागृति' नामक काव्य-कृति पर अ० भा० हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन प्रयाग ने 'सेकसरिया पुरस्कार' प्रदान किया था।

वे अचेतन क्यों समझते ?

वे अचेतन क्यों समझते, सजनि ! मैं तो जागती-सी !

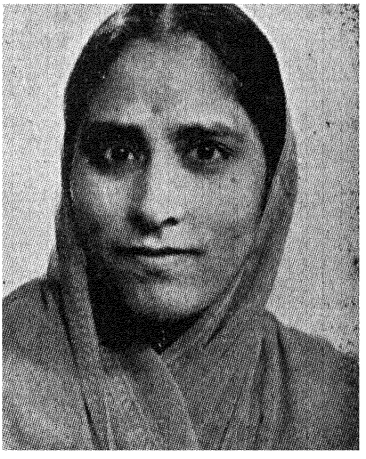
ठहर जा टुक देख मेरे श्रान्त उर की भावनाएँ,
लहलहाती लालसाएँ कर्म-रत प्रिय कामनाएँ,
श्रान्त है, विश्रान्ति तजकर, क्रान्ति प्रतिपल माँगती-सी !
वे अचेतन क्यों समझते, सजनि ! मैं तो जागती-सी !

जल-मरा सौंदर्य ही पर शलभ का अनुराग कैसा ?
दे प्रकाश प्रदीप जलता ही रहा वह त्याग कैसा ?
आज मैं उस दीप पर अनुराग अपना वारती-सी !
वे अचेतन क्यों समझते, सजनि ! मैं तो जागती-सी

वेदना क्या है ? किसी सुख-स्वप्न का इतिहास होगा,
आँसुओं में भी छिपा अलि ! नियति का परिहास होगा,
कौन उस परिहास पर, निज चेतनाएँ त्यागती-सी
वे अचेतन क्यों समझते, सजनि ! मैं तो जागती-सी !

मैं वही हूँ विश्व में जिसने कभी पीड़ा न जानी,
मिट गए युग-युग अमिट होती रही जिसकी कहानी,
ज्योति जिसकी आज जग में, जगमगाती जागती-सी
वे अचेतन क्यों समझते, सजनि ! मैं तो जागती-सी !

दिनेशनन्दिनी डालमिया



जन्म-स्थान—उदयपुर । **जन्म-तिथि**—१६ फरवरी, १९१५ । **शिक्षा**—एम० ए० (नागपुर-विश्वविद्यालय से सन् १९४४ में) । **विवाह**—१९४६ में सेठ रामकृष्ण डालमिया से । **विशेष**—हिन्दी-गद्य-काव्य के क्षेत्र में अत्यन्त ख्याति अर्जित की । सबसे पहली गद्य-रचना 'निराशा-आशा' 'त्याग भूमि' में प्रकाशित हुई । उसके बाद 'माधुरी', 'सुधा' और 'चाँद' में रचनाएँ प्रकाशित । पहले 'दिनेशनन्दिनी चोरडिया' नाम से लिखती थीं । **प्रकाशित कृतियाँ**—'शबनम', 'मौक्तिक माल', 'शारदीया', 'दुपहरिया के फूल', 'वंशी रव', 'उनमन', 'स्पन्दन', 'पंचशील', (गद्य-काव्य); 'उरबाती', 'मनुहार', 'सारंग', 'परिछाया' (कविता-संग्रह) । **स्थायी पता**—डालमिया-निवास, ९ सिकन्दरा रोड, नई दिल्ली ।

प्रिय कब अवगुण्ठन खोलोगे ?

नैनों में निद्रा लहराती
प्रणय-शिखा अंचल फहराती
वाणी व्रीड़ा में छिप जाती, क्या न अरे मुझसे बोलोगे ?
प्रिय कब अवगुण्ठन खोलोगे ?

सखियों ने शृङ्गार कराया
श्वेत पुष्प-पर्यंक सजाया
रजत थाल दीपक रखवाया, प्रेम-सुधा पी कब डोलोगे ?
प्रिय कब अवगुण्ठन खोलोगे ?

बीत रहीं उजियाली रातें
मधुर मलय भोली-सी बातें
अभिलाषा उर्मिल संघातें, निशिगन्धा पर कब सो लोगे ?
प्रिय कब अवगुण्ठन खोलोगे ?

अर्घ्य लिये मैं खड़ी हुई हूँ
स्वप्न अनागत अड़ी हुई हूँ
तव चिन्तन में पड़ी हुई हूँ, कब सुहाग कुंकुम घोलोगे ?
प्रिय कब अवगुण्ठन खोलोगे ?

जन्म-स्थान—सिकन्दराबाद (आन्ध्र-प्रदेश)। **जन्म-तिथि**—२८ अक्तूबर, सन् १९३० (दीपावली)। **शिक्षा**—इण्टर-मीडिएट, सरस्वती। निरन्तर अस्वस्थ रहने के कारण आगे शिक्षा न हो सकी। **विशेष**—पहले कुछ दिन विमला खण्डेलवाल नाम से भी लिखा। आपकी रचनाएँ 'विशाल भारत', 'नया समाज', 'अजन्ता', 'ज्ञानोदय', 'प्रतिभा' आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। इस्लामिया विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के रीडर डॉ० राजकिशोर पाण्डेय द्वारा सम्पादित 'आन्ध्र के हिन्दी कवि' नामक ग्रन्थ में भी कुछ रचनाएँ प्रकाशित हुईं। कविता के अतिरिक्त नाटक-लेखन में भी रुचि है। **वर्तमान पता**—द्वारा प्रो० रामकुमार खण्डेलवाल, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।



दीप्ति खण्डेलवाल

बहुत तुम याद आते हो !

घटाएँ झूम जब घिरतीं, बहुत तुम याद आते हो !
तृषातुर तप्त प्राणों को, अमिय से सींच जाते हो !

तुम्हारा रूप मेरे प्रिय !
इन्हीं श्यामल घटाओं-सा,
सजल गरिमा लिये छवि की
तरल भीगी व्यथाओं-सा;

व्यथाओं से हृदय को छू, नयन में झिलमिलाते हो !
घटाएँ झूम जब घिरतीं, बहुत तुम याद आते हो !

इन्हीं श्यामल घटाओं-सा
तुम्हारा नेह मेरे धन !
बरस घिर सिक्त कर जाता
नयन, उर, प्राण, जग-जीवन

लुटाते स्रोत सौरभ के, सुमन शत-शत खिलाते हो !
घटाएँ झूम जब घिरतीं, बहुत तुम याद आते हो !

इन्हीं श्यामल घटाओं-से
कभी जब भूल जाते हो,
भटककर ही कदाचित् प्रिय,
चले इस ओर आते हो;

बड़े अनमोल हो निष्ठुर, प्रतीक्षा कटु कराते हो !
घटाएँ झूम जब घिरतीं, बहुत तुम याद आते हो !

जन्म-स्थान—ग्राम कोटवारी, बलिया, (उत्तर प्रदेश)। **जन्म-तिथि**—भाद्रपद शुक्ला संवत् १९८९ वि०। **शिक्षा**—बी० ए० (लखनऊ-विश्वविद्यालय से)। **विशेष**—आकाश वाणी के लखनऊ केन्द्र



दुर्गावती सिंह

से सम्बद्ध। बाल्य-काल से ही लिखने का शौक रहा है। कहानियाँ, कविताएँ और निबन्ध-लेखन में अधिक रुचि है। **स्थायी पता**—सी० १०७८, महानगर, लखनऊ।

न जाना प्राण ! तुम्हारा प्यार !

मधु कलरव क्रीड़ा से तुमने मुझे हँसाया कितनी बार ?
न जाना प्राण ! तुम्हारा प्यार !

अपनी चंचल मादकता ले, बन-बन फूली कुसुम-कली
नव वसन्त शोभा-सुषमा ले, फिरा लुटाता गली-गली
तब तुमने चितवन-बोलों से, मुझे बुलाया कितनी बार ?
न जाना प्राण ! तुम्हारा प्यार !

क्षण-भर को बज तार प्रणय का, बना विकल उद्‌गार हृदय का
अग्नि-फूल जो झरे नयन से, बना उन्हींसे हार समय का
बाँध विसुध पीड़ाएं तुमने, मुझे सुलाया कितनी बार ?
न जाना प्राण ! तुम्हारा प्यार !

उषा माँग-सिन्दूर लगाए, इठलाती जब-जब आ बोली
रंग-रंग के वेश बदलकर, नाची थिरक सुघर गोधूली
तुमने तब आशा का आसव, मुझे पिलाया कितनी बार ?
न जाना प्राण ! तुम्हारा प्यार !

लाख जगाया, काल सो गया, अन्तर का संगीत खो गया
मेरा द्वार खोलकर कोई, मेरा ही दुख-दर्द रो गया
संवेदन के सरल क्षणों ने, मुझे रुलाया कितनी बार ?
न जाना प्राण ! तुम्हारा प्यार !

जब-जब अपने को पहचाना, जीने का मिल गया बहाना
मौन रही मैं प्रश्न उठे जब, कह न सकी मैं कुछ भी, 'हाँ, ना'
संज्ञा-हत इन आवेगों ने, मुझे सुलाया कितनी बार ?
न जाना प्राण ! तुम्हारा प्यार !

जन्म-स्थान—पलवल (गुड़-गावाँ) पंजाब। जन्म-तिथि—१ मार्च सन् १९२१। विशेष—३१ जनवरी १९४८ (बापू का बलिदान दिवस) से कविता-लेखन प्रारम्भ। पति श्री प्यारेलाल शर्मा उर्दू और फारसी साहित्य के बड़े प्रेमी हैं। अभी तक कोई



देववती शर्मा

भी पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई। बच्चों के लिए एकांकी और कहानियाँ काफ़ी लिखी हैं। आजकल दिल्ली-नगर-निगम के एक विद्यालय में पढ़ाती हैं। स्थायी पता—कमलेश बालिका विद्यालय बाजार सीताराम, दिल्ली।

चंचल प्रेमी जान न पाया !

गर्वित दीपक जान न पाया, दग्ध शलभ का कोमल क्रन्दन !

कलिका-वधु किसलय-घूँघट में,
सपनों का संसार सजाती;
तन-मन के काले छालों से,
अपनी दुनिया उजड़ी पाती ;

चंचल प्रेमी जान न पाया, प्यार-भरा फूलों का बन्धन !
गर्वित दीपक जान न पाया, दग्ध शलभ का कोमल क्रन्दन !

सजल घनों ने शोर मचाकर,
कब चातक की प्यास बुझाई ;
स्वाति-बिन्दु की अभिलाषा में,
सीपी की आँखें पथराईं ;

घन गरजन में जान न पाया, लघु धरती का विह्वल कम्पन !
गर्वित दीपक जान न पाया, दग्ध शलभ का कोमल क्रन्दन !

सन्ध्या पथ में ढक आँचल से,
अनगिन दीपक नित्य जलाती;
स्वागत करने निशा बावरी,
उजले मुक्ता - माल सजाती;

गगन खिलाड़ी जान न पाया, रजनी-उर का मूक समर्पण !
गर्वित दीपक जान न पाया, दग्ध शलभ का कोमल क्रन्दन !

नित मिलने पर लहरों को भी,
कब गरजन की बात बताई;
छाती पर रहती नौका भी—
नाप सकी है कब गहराई;

मानी सागर देख न पाया, सरिता के अन्तस् का सावन !
गर्वित दीपक जान न पाया, दग्ध शलभ का कोमल क्रन्दन !

चंचल मन ने पूछी हैं कब,
दर्द-भरे तन-मन की बातें ;
भोली आंखें जान सकीं कब,
छलने वाले जन की घातें ;

हार-जीत में जान न पाया, मानव मानव-मन की धड़कन !
गर्वित दीपक जान न पाया, दग्ध शलभ का कोमल क्रन्दन !



धारा मिश्र

जन्म-स्थान—रींवा (मध्य-प्रदेश)। जन्म-तिथि—२४ मई १९३२। शिक्षा—आजकल सागर विश्वविद्यालय एम.ए. की छात्रा हैं। कार्य—इससे पूर्व हैदराबाद के राजा बहादुर बंसीलाल बालिका विद्यालय में अध्यापिका भी रह चुकी हैं। वर्तमान पता—द्वारा—श्री शिवराज एम.ए.एल-एल.बी., लक्ष्मीपुरा, (महिला विद्यालय के पास) सागर, (मध्य प्रदेश)।

कथा रुक गई, आज भी चलते-चलते !

सभी स्वत्व मैंने समर्पित किया पर,
मिला मुझको आभार भी डरते-डरते !

धरा की सृजन-वेदना जब सिमटकर
हरित बालियों में छिपी न छिपाए,
झुकी वह जमीं पर स्व-गरिमा को साधे
पकी और फूटी नयन छलछलाए;

मिले पात सूखे स्व-कण सौंपने पर
न उट्ठी दुबारा सँभलते-सँभलते !
सभी स्वत्व मैंने समर्पित किया पर,
मिला मुझको आभार भी डरते-डरते !

अँधेरा पिघलकर बना ओस-कण-सा
तृणों की पलक पर चढ़ाया गया वह,
किरण की बड़ी बाँह फिर थरथराई
पलक-आँजुरी में उठाया गया वह;

नुकीला सहारा गड़ा एक क्षण को,
कथा रुक गई आज भी चलते-चलते !
सभी स्वत्व मैंने समर्पित किया पर,
मिला मुझको आभार भी चलते-चलते !



नलिनी श्याम

जन्म - स्थान — पटना ।
जन्म-तिथि—५ अप्रैल १९३० ।
शिक्षा—बी.ए. सन् १९४८ में पटना से ही । आगे पढ़ने का सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ ।
विशेष—हिन्दी की ओर विशेष रुझान होने के कारण महिलाओं की पत्रिका 'शरद' का प्रकाशन एवं सम्पादन किया । गृहस्थी की झंझटों में वह भी न सँभल सकी और बन्द हो गई । **वर्तमान पता**—द्वारा श्री एस.एन. सहाय मोटर-यान-निरीक्षक चाईबासा, (सिंहभूम) बिहार ।

आज मेरे गान रोते !

चिर प्रतीक्षित प्रिय मिलन के, सिन्धु में आह्वान सोते !
आज मेरे गान रोते !

सान्ध्य-नभ की नीलिमा को,
चिर मधुर-सा न्यास देकर;
और रिमझिम बादलों से–
अश्रु का परिहास लेकर;

क्षणिक मेरे जागरण में, स्वप्न के वरदान रोते !
आज मेरे गान रोते !

एक आकुल पीर में नव
बिखर विकसित प्यार के धन;
खोजते हैं प्राण अहरह
खो गया जो गान उन्मन;

आज सूने नींद के पल, सुभग मेरे प्राण खोते !
आज मेरे गान रोते !



निर्मला माथुर

जन्म - स्थान—दिल्ली **जन्म - तिथि**— १६ दिसम्बर १९२६। **शिक्षा**—इण्टर, प्रभाकर, साहित्य-रत्न। **विशेष**—लगभग १२ से कहानी, कविता आदि लिख रही हैं। इसके अतिरिक्त प्रसाद परिषद् वाराणसी द्वारा आयोजित एक कहानी-प्रतियोगिता में पुरस्कार भी प्राप्त कर चुकी हैं। आजकल मूर्ति तथा चित्रों के निर्माण में निरत हैं और आर्य गर्ल्स हायर सेकेण्डरी स्कूल चावड़ी बाजार दिल्ली में कला-शिक्षिका भी हैं। **स्थायी पता**— आनन्द लेन, ७/३० दरियागंज, दिल्ली।

गीत किसी का, स्नेह किसी का !

मेरे होठों पर है बिखरा, गीत किसी का, स्नेह किसी का !

पथ जीवन का सूना-सूना,
अश्रु हास से दूना-दूना;
ओ सहचारी ! साथ न चल तू–
मेरा श्लथ दुकूल मत छूना;

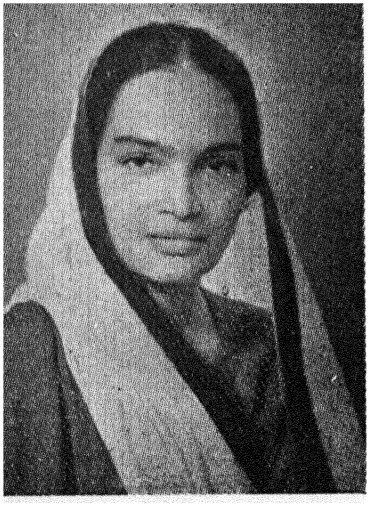
मेरी आँखों में है छाई, विद्यु किसी की, मेह किसी का !
मेरे होठों पर है बिखरा, गीत किसी का, स्नेह किसी का !

नीला नभ, मन्दाकिनी धवल,
स्मृति का यह उज्ज्वल खिला कमल;
ओ सहचारी ! मत पुकार तू–
सुधा स्वल्प है, शेष गरल;

मेरी पुलकों में हैं कम्पित, प्राण किसी के, देह किसी का !
मेरे होठों पर है बिखरा, गीत किसी का, स्नेह किसी का !

विजन चाहता कंकण का सुर,
पवन माँगती तन्द्रिल नूपुर;
ओ सहचारी ! नयन बिछा मत-
विरह अमर है, बन्धन भंगुर;

मेरे सपनों में चित्रित है, नीड़ किसी का, गेह किसी का !
मेरे होठों पर बिखरा है, गीत किसी का, स्नेह किसी का।



प्रकाशवती

जन्म-स्थान— नाथनगर (भागलपुर) बिहार । जन्म-तिथि— जनवरी १९२६ । शिक्षा—घर पर ही हुई । अध्ययन, स्वाध्याय और एकान्तवास विरासत में मिले । विशेष — वेदना की अमर गायिका ; बिहार की अन्यतम कवयित्री । पत्रों में कविताओं का प्रकाशन विवाह से कई वर्ष पूर्व ही हो चुका था । वैसे पहले कहानियाँ ही लिखीं । चित्र, कार्टून, मूर्ति और सूचि-शिल्प में भी पर्याप्त गति । रचनाएँ— कविता और कहानियों के अतिरिक्त नाटक और उपन्यास भी लिखे हैं । अभी-अभी 'चार परतें' नाम से आपका एक उपन्यास प्रकाशित हुआ है । पिछले तीन वर्ष से बिहार-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की ग्रन्थागारिका । वर्तमान पता—सम्मेलन भवन, कदमकुआँ, पटना ३ ।

विचलित होता हृदय !

विचलित होता हृदय, उमड़ते इन आँखों के नीर से
किसने तुम्हें कहा था—तुम खेलो मेरी जंज़ीर से ?

जो हो चुका अतीत, भूल जो गिरा गाँठ से याद के
रहे किसी विधि बीत शूल-से दिन अनकहे विषाद के
जाने-अनजाने आ टकरा, मथ प्राणों को पीर से
इस सन्ध्या में क्यों कर डाला, दोनों पुलिन अधीर-से ?
किसने तुम्हें कहा था—तुम खेलो मेरी जंज़ीर से ?

कितनी साधें बँधा गए, जब गए दृष्टि से दूर थे
फिरे भूलकर द्वार न मेरे, ऐसे क्या मजबूर थे
किस कलिका की चाह—'मर्म बींधा जाए शहतीर से ?'
रहे देखते, औ' मैं चुन दी गई लौह-प्राचीर से !
विचलित होता हृदय, उमड़ते इन आँखों के नीर से !

इस सूने मन्दिर में प्रतिध्वनि बन टकराते प्राण हैं
चरण-चिन्ह-सी शेष नाम-धुन, लौट चुके भगवान हैं
रो-रो जिसे बुलाती निष्फल गीतों के मंजीर से
मूर्ति न मिली कभी, बहलाती रही एक तसवीर से
किसने तुम्हें कहा था—तुम खेलो मेरी जंज़ीर से ?

हरदम आता ध्यान तुम्हारा, शायद यह भी पाप है
मर जाने की मुक्ति नहीं है, जीने का अनुताप है

जाने किस वैरी का आज फला जीवन पर शाप है
अगम अश्रु-घट में प्यासी साधें ढलतीं चुपचाप हैं
मैं पछाड़ खाती तरंग औ' तुम सागर गम्भीर-से
क्या न कभी मथता है उर, बड़वा की व्यथा अधीर से ?
विचलित होता हृदय, उमड़ते इन आँखों के नीर से
किसने तुम्हें कहा था—तुम खेलो मेरी जंजीर से ?

जन्म स्थान—नजीबाबाद (बिजनौर) उत्तर प्रदेश। **जन्म-तिथि**—२८ फरवरी, १९३९। **शिक्षा**—सन् १९५६ में बी०ए० (आगरा विश्वविद्यालय से)। १९६० में सोशल वर्क में लखनऊ-विश्वविद्यालय से एम.ए.। **विशेष**—प्रयाग महिला विद्यापीठ में बी०ए० में पढ़ते हुए ये



प्रतिभा गर्ग

श्रीमती महादेवी वर्मा के विशेष सम्पर्क में आईं। उनके प्रोत्साहन से ही लिखने में अग्रसर हुईं। आजकल 'धर्मयुग', 'हिन्दुस्तान', 'नवभारतटाइम्स' तथा 'त्रिपथगा' आदि पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं। **वर्तमान पता**—द्वारा—श्री आर० पी० गर्ग, जी. आई. ८२८, विनयनगर, नई दिल्ली।

तुम्हारी याद के बन्धन !

न जाने क्यों सजीले हैं, तुम्हारी याद के बन्धन ?

उमड़ती आँधियाँ नभ में,
धरा का मौन अकुलाया;
कोई बरसात कहता है,
किसी का दिल पिघल आया;

किसी की आस बन जाती, किसी के नयन की शबनम !
न जाने क्यों सजीले हैं, तुम्हारी याद के बन्धन ?

धरा की आँख का काजल,
क्षितिज के भाल की लाली;
विहँसती चाह के नूपुर,
अछूते अधर की प्याली;

रजत किरणें सजा जातीं, निशा के हाथ के कंगन !
न जाने क्यों सजीले हैं, तुम्हारी याद के बन्धन ?

अनोखी राह की मंज़िल
न कोई साथ है, साथी;
सजाऊँ कब तलक सपने
जलाऊँ दीप की बाती;

अमा से भी अँधेरी आज, क्यों चन्दा तेरी पूनम ?
न जाने क्यों सजीले हैं, तुम्हारी याद के बन्धन ?

सजन तुम दूर हो इतने,
अजाने स्वप्न छलते हैं;
निराली रीत दुनिया की,
जहाँ अरमान जलते हैं;
अधूरी रागिनी में बज उठी क्यों प्यार की सरगम ?
न जाने क्यों सजीले हैं, तुम्हारी याद के बन्धन ?



प्रेमकुमारी गुप्ता

जन्म-स्थान—इलाहाबाद। **जन्म-तिथि**—९ जनवरी सन् १९२८। **प्रकाशित रचनाएँ**—'अभिव्यक्ति' (कविता-संग्रह)। **विशेष**—वैलवेडियर प्रेस प्रयाग के अधिपति श्री भक्त शिरोमणि की सुपुत्री। संगीत, नृत्य और चित्रकला में रुचि। सन् १९४३ में क्रास्थवेट गर्ल्स कालिज के स्वर्ण जयन्ती समारोह में अवसर पर श्रीमती महादेवी वर्मा की अध्यक्षता में हुए कवि-सम्मेलन में इन्होंने कविता का प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। अपने पति श्री प्रकाशचन्द्र गुप्ता (सहारनपुर) के साथ १९६० में लगभग १ वर्ष तक पश्चिम के लगभग २२ देशों की यात्रा। **स्थायी पता**—मंजुलिके गार्डन्स, सहारनपुर।

कौन तुम सूने गगन में ?

युग-युगों से चिर प्रतीक्षा में खड़े किसकी अरे तुम ?
मौन हो, क्यों कह न पाते निज व्यथा सूने सदन में ?
कौन तुम सूने गगन में ?

खोजते किसकी तमिस्रा में प्रणय की मूर्ति निर्मल
चन्द्र का नव दीप लेकर लीन अपनी हो लगन में ?
कौन तुम सूने गगन में ?

किरण-अंगुलि का परस पा पुलक उठते कुसुम सारे
प्रिय चरण-मंजीर की ध्वनि गुनगुनाते कौन मन में ?
कौन तुम सूने गगन में ?

ललित नव नन्दन विपिन से तोड़ डाले क्यों कुसुम ये
तूलिका लेकर किरण की मग्न प्रिय-प्रतिमा लिखन में
कौन तुम सूने गगन मे ?

जगमगाकर दीप सारे, प्राण निज सूना जलाकर
जागरण की रात में, संगीत हो किसके मिलन में ?
कौन तुम सूने गगन में ?



प्रेमलता वर्मा

जन्म-स्थान—इलाहाबाद। **जन्म-तिथि**—१६ जुलाई सन् १९३८। **शिक्षा**—१९५९ में बी. ए. इलाहाबाद विश्वविद्यालय से। एल. टी इलाहाबाद से ही। **विशेष**—आजकल सिन्धी स्कूल इलाहाबाद में प्रधानाध्यापिका। नई कविता की कवियित्रियों में से एक।

'नयी कविता', 'लहर', 'दक्षिण भारती', 'कल्पना' आदि पत्र-पत्रिकाओं में कविताओं का प्रकाशन होता रहता है। डायरी, कहानियाँ आदि भी लिखती हैं। 'घन आनन्द : एक चयन' नामक एक पुस्तक शीघ्र ही प्रकाशित हो रही है। **स्थायी पता**—१४७ मोहतशिमगंज, इलाहाबाद।

आज कम्पित पात-सा मन !

आ गई है फिर वही बरसात !
फड़फड़ाते हंस-युगलों की शिरीषों में
फिर वही केसर-भिनी बरसात !
गन्ध-माते दृश्य ! मदमाते युगों की बात !

भरा था कैसा नशा—
है आज तक जिसका खुमार !
ढल रही थी हृदय मे कैसी रँगीली रात !
मूँदते ही नयन कैसे खिल उठे हैं
दामिनी-से याद के जलजात !
क्या—आ गई फिर से वही बरसात !

भीगते ही रह गए थे नेह की जल-धार में हम
उबरते ही रह गए थे मोह-पारावार में हम
सह रही हैं लाज की अधखुली पखुरियाँ न जाने क्या
विसुध-सी आनन्द-पारावार में !

प्रेम-मुक्ता आब में हम घुल रहे थे संग-संग
हृदय में है वही अंध-अनंग-अनबींधी तरंग
अमलतासों से झरे बस स्तब्ध हम, चुप,
अमल प्रीति-फुहार में

दो दिनों की चाँदनी-सी घुल गई है पूर्ण मावस में !
आ गई फिर नेह-भीनी रात !
आज कम्पित पात-सा मन, झेलता है फिर वही बरसात !

इनमें कितने भाव भरे हैं ?

छिप-छिपकर इतने तारों में, जो क्षिति पर उतरे हैं !
कौन जान सकता है, इनमें कितने भाव भरे हैं ?

मुग्ध, माल में गुँथे जा चुके
डूब चुके या पार पा चुके

एक सूत्र में ग्रन्थित हो, फिर भी तितरे-बितरे हैं !
कौन जान सकता है, इनमें कितने भाव भरे हैं ?

छलक-छलक बातें करते हैं
ढुलक-ढुलक कर चित हरते हैं

सरस, सुशीतल हैं पर, उच्छ्वासानल-ताप-जरे हैं !
कौन जान सकता है, इनमें कितने भाव भरे हैं ?

लुढ़क कपोलों पर जब आते
लूट-लूट धन दिल बहलाते

बिरला कोई बूझे—कैसे खोटे और खरे हैं ?
कौन जान सकता है, इनमें कितने भाव भरे हैं ?



पुष्पलता श्रीवास्तव 'नीलिमा'

जन्म-स्थान—गोरखपुर। **जन्म-तिथि**—१ जनवरी १९४२। **शिक्षा**—प्रारम्भिक शिक्षा गोरखपुर में; बाद में हाई स्कूल देवरियासे; १९६१ में इण्टर। अध्यापन करते हुए ही अध्ययन करके इतनी शिक्षा प्राप्त की। **वर्तमान पता**—द्वारा डॉ० मुक्तेश्वरदयाल श्रीवास्तव (होम्योपैथ) सलेम पुर, देवरिया (उत्तर-प्रदेश)।

करुणा से भरी मेरी कहानी !

मैं करुणतम, और करुणा से भरी मेरी कहानी !

जन्म पाया है कली बन
बढ़ चली सुन्दर भली बन
झूलती पल्लव-हिंडोले, सुप्त उर में भर रवानी !

सुरभि ने मन को लुभाया
हृदय में उसको बसाया
सो रही थी मस्त बनकर, झूमता था पवन मानी !

खींच डाला लाज-अञ्चल
खिल गई मैं पूर्ण उस पल
हँस रही थी मग्न होकर, विश्व पर थी विजय पानी !

गुनगुनाता भ्रमर आया
प्रेम का गुण-गान गाया
मैं सलोनी प्रणय के इस गीत को सीखी, न जानी !

सो रही हूँ आज उन्मन
मिट चुका यह मधुर जीवन
कौन देखे वह सुमन, जिसमें न अब बाकी जवानी !
मैं करुणतम, और करुणा से भरी मेरी कहानी !



पुष्पा अवस्थी

जन्म - स्थान—दिल्ली। जन्म-तिथि—७ जनवरी सन् १९३६। शिक्षा—एम० ए०, बी० एड०, संगीत प्रभाकर। विशेष—हिन्दी की नई पीढ़ी के प्रमुख गीतकार श्री रमानाथ अवस्थी की धर्मपत्नी। सन् १९५३ से कविता करनी आरम्भ की। संगीत में अधिक रुचि। आकाश वाणी के नई दिल्ली और प्रयाग-केन्द्रों पर आपके संगीत के कार्यक्रम प्रसारित होते रहते हैं। वर्तमान पता—द्वारा श्री रमानाथ अवस्थी १३७ एलनगंज, इलाहाबाद।

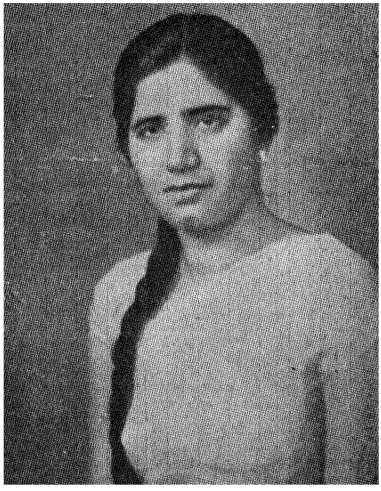
रहते हो सपने-से !

तुम अपने होकर भी रहते हो सपने-से !

दिन की नौका पर चढ़कर मैं हर रोज़
सागर से कुछ मोती लाती हूँ खोज
तब आँधी और धूप मुझको झुलसा देती
जल-सी निढाल हो बेबस मैं कह ही देती—
'क्या नहीं करोगे छाँह, बचाकर तपने से !'
तुम अपने होकर भी रहते हो सपने-से !

सूखे वन में मैं ढूँढा करती फूल
हाथों में कई बार आ जाती धूल
तब काँटों की झाड़ी-सी खड़ी उदास
सोचा करती, 'तुम आकर मेरे पास—
कब मुझे सजाओगे फूलों के गहने से ?'
तुम अपने होकर भी रहते हो सपने-से !

मैंने जो चाहा, वह तो नहीं मिला
जीवन को समझा कुछ, पर कुछ निकला
तब पतझड़-सा विश्वास लिये यह कौन
धुंधली छाया चुपचाप खड़ी हो मौन—
रोका करती मेरे संयम को झुकने से !
तुम अपने होकर भी रहते हो सपने-से !



पुष्पा पुरी

जन्म-स्थान—गाँव घुमान, गुरदासपुर (पंजाब)। **जन्म-तिथि**—८ मार्च सन् १९३८। **शिक्षा**—दिल्ली-बोर्ड की मैट्रिक परीक्षा में प्रथम आने पर ४ वर्ष तक छात्रवृत्ति प्राप्त करके बी० ए० (आनर्स) किया। दिल्ली विश्वविद्यालय से एम० ए० भी प्रथम श्रेणी में १९६० में किया। **विशेष**—आजकल 'जानकी देवी कालिज फार गर्ल्स नई दिल्ली' में प्राध्यापिका। अनेक कविता तथा वाद-विवाद-प्रतियोगिताओं में पुरस्कार-विजयित्री। **स्थायी पता**—ए ५८ ई० टाइप, ईस्ट विनय नगर, नई दिल्ली।

मुझे तुम मत ठुकराओ !

कितनी दूर चली आई हूँ संग तुम्हारे,
पिछली राह दिखाकर मुझको मत लौटाओ !

मचल उठे थे विवश प्राण भी तुम्हें देखकर
चंचल लहरों से मन की गंगा लहराई,
उमड़ पड़े सोए भावों के नीरव निर्झर—
नई धड़कनों ने अपनी भाषा समझाई ;
गीत प्यार के लाए मुझको पास तुम्हारे,
गाने से पहले उनको तुम मत मिटवाओ !
कितनी दूर चली आई हूँ संग तुम्हारे,
पिछली राह दिखाकर मुझको मत लौटाओ !

फूलों में पलकर काँटों से परिचित हूँ मैं
सुख का राज-मुकुट दुख के सिर पर धर दूँगी,
खेली हूँ मैं हर्ष-शोक की मँझधारों में—
आँसू की सीपी में मुसकानें भर दूँगी ;
पहचानी है मैंने पीड़ा की गहराई,
सुख की माया में मुझको तुम मत उलझाओ !
कितनी दूर चली आई हूँ संग तुम्हारे,
पिछली राह दिखाकर मुझको मत लौटाओ !

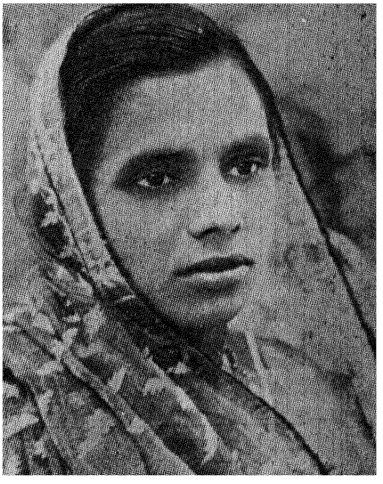
संघर्षों के बीच थके तुम इस जीवन से,
स्वर्ग धरा पर तुमने अभी नहीं देखा है :

मुरझाए पतझर ही आए द्वार तुम्हारे—
तुमने जीवन का मधुमास नहीं देखा है;
एकाकी जीवन के सुन्दर स्वप्न सजाकर,
झूठी निद्रा से आँखों को मत भरमाओ!
कितनी दूर चली आई हूँ संग तुम्हारे,
पिछली राह दिखाकर मुझको मत लौटाओ!

मन के उजले दर्पण में देखो तो प्रियतम
केवल तन का आकर्षण ही प्यार नहीं है,
फूलों की मुसकान हृदय को भा जाती है—
मुरझाना उनका जीवन की हार नहीं है;
जीवन की लम्बी राहों की नीरवता में,
इन गीतों के सरस स्वरों से मत घबराओ!
कितनी दूर चली आई हूँ संग तुम्हारे,
पिछली राह दिखाकर मुझको मत लौटाओ!

सोने का संसार दिखाया है तुमने तो
अब अपनी पीड़ा की नगरी भी दिखला दो,
मैं उसमें मुसकानों के मोती भर दूँगी
मुझको अपनी आँसू की भाषा सिखला दो;
मैं शृङ्गार करूँगी पाकर दर्द तुम्हारा,
सुख का साथी समझ मुझे तुम मत ठुकराओ!
कितनी दूर चली आई हूँ संग तुम्हारे,
पिछली राह दिखाकर मुझको मत लौटाओ!

जन्म - स्थान — मेरठ।
जन्म-तिथि — सन् १९२५ ।
विशेष—मेरठ की अल्पवय-प्राप्त कवयित्री। एक हाई स्कूल में प्राध्यापिका भी रही थीं। साहित्य-साधना के अतिरिक्त



स्व० पुष्पा भारती

अनेक सामाजिक कार्यों में भी योगदान दिया। कुछ कविताएँ और कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं में भी छपी थीं। **प्रकाशित रचनाएँ** — 'इन्कलाब' नामक कहानी-संग्रह। १३ सितम्बर १९४९ को स्वर्गवास।

मिले दो हृदय, खिले दो सुमन !

मिले दो हृदय, खिले दो सुमन, गले में सुमनों की जय-माल !
गूँथकर लाई सुन्दर बाल !

प्रेम यह बने पुण्य सन्देश,
स्नेह सीखे जिससे यह देश ;
पुष्प से मिलें समीरण हृदय,
प्रेम की जय-माला हो जय ;

नाचती मन में इधर तरंग, उधर है मन का अद्भुत हाल !
मिले दो हृदय, खिले दो सुमन, गले में सुमनों की जय-माल !
गूँथकर लाई सुन्दर बाल !

गा रहीं कलिकाएँ शुभ गीत,
अमर हो इन दोनों की प्रीत ;
जीत हो इनकी सबकी जीत,
मुकुट हो इनका आज अतीत ;

भुजों में बंधे, चतुर्भुज बने, झुकी लज्जा यौवन की डाल !
मिले दो हृदय, खिले दो सुमन, गले में सुमनों की जय-माल !
गूँथकर लाई सुन्दर बाल !

जन्म-स्थान— नवाबगंज नगरिया (एटा) उत्तर प्रदेश। जन्म-तिथि— रक्षा-बन्धन सन् १९३७। शिक्षा—स्वयं घर पर ही माता-पिता के द्वारा। विशेष—उत्तरी पूर्वी रेलवे के गार्ड श्री कैलाशनारायण सक्सेना से सन् १९५३ में विवाह। बाल्य-काल से ही



पुष्पा सक्सेना

कविता-लेखन में अभिरुचि। कविता के साथ संगीत में भी पारंगत। अनेक अ० भा० कवि-सम्मेलनों में भाग लेने के अतिरिक्त हिन्दी की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं मे रचनाओं का प्रकाशन। वर्तमान पता— रेलवे रोड, कासगंज (एटा), उत्तर प्रदेश।

वह बात न मेरे मुख से कहलाओ !

वह बात न मेरे मुख से कहलाओ,
मैं कहना चाहूँ, लेकिन कह न सकूँ !

कहने को तो सब-कुछ कह जाते हैं,
हो सम्भव चाहे शक्ति न करने की ;
सबके वश की तो बात नहीं होती,
तम की छाती पर दीपक धरने की ;
उस धारा में मत मुझको नहलाओ,
मैं बहना चाहूँ, लेकिन बह न सकूँ !
वह बात न मेरे मुख से कहलाओ,
मैं कहना चाहूँ, लेकिन कह न सकूँ !

सीमाएँ तो हम सबकी होती हैं,
विस्तार हुआ करता है कम-ज्यादा ;
उत्ताल तरंगों का स्वामी सागर,
उस पर भी शासन करती मर्यादा ;
उन सीमाओं तक मुझे न पहुँचाओ,
मैं रहना चाहूँ, लेकिन रह न सकूँ !
वह बात न मेरे मुख से कहलाओ,
मैं कहना चाहूँ, लेकिन कह न सकूँ !

अम्बर में ऐसे तारे भी तो हैं,
जो कभी सवेरा देख नहीं पाते ;

भू पर ऐसे दुखियारे भी तो हैं,
जो सुखद बसेरा देख नहीं पाते ;
आघात न कोई ऐसा कर जाओ,
मैं सहना चाहूँ, लेकिन सह न सकूँ !
वह बात न मेरे मुख से कहलाओ,
मैं कहना चाहूँ, लेकिन कह न सकूँ !



पुष्पा सक्सेना

जन्म - स्थान—कानपुर । **जन्म-तिथि**—१८ अक्तूबर १९३५ (दीपावली)। **शिक्षा**—आगरा विश्वविद्यालय से एम० ए० ; साहित्यरत्न । **विशेष**—छोटी अवस्था से ही साहित्य तथा काव्य में रुचि है । पिछले ७ वर्षों से आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र तथा अन्य स्थानों पर आयोजित सम्मेलनों में भाग लेती रही हैं। एक कविता-संग्रह शीघ्र ही प्रकाशित हो रहा है । **स्थायी पता**—११२/३६२ स्वरूपनगर, कानपुर।

मैं स्वयं में खो गई !

गीत प्राणों में जगे, पर भावना में बह गए !

एक थी मन की कसक, जो साधनाओं में ढली,
कल्पनाओं में पली ;
पन्थ था मुझको अपरिचित, मैं नहीं अब तक चली,
प्रेम की सँकरी गली ;
बढ़ गए पग, किन्तु सहसा
और मन भी बढ़ गया ;
लोक-लीकों के सभी भ्रम, एक पल में ढह गए !
गीत प्राणों में जगे, पर भावना में बह गए !

वह मधुर वेला प्रतीक्षा की मधुर अनुहार थी,
मैं चकित साभार थी ;
कह नहीं सकती हृदय की जीत थी, या हार थी,
वेदना सुकुमार थी ;
मौन तो वाणी रही, पर
भेद मन का खुल गया ;
जो न कहना चाहती थी, ये नयन सब कह गए !
गीत प्राणों में जगे, पर भावना में बह गए !

कल्पना जिसकी सँजोई सामने ही पा गई,
वह घड़ी भी आ गई ;
छवि अनोखी थी हृदय पर छा गई, मन भा गई;
देखते शरमा गई,
कर सकी मनुहार भी कब
मैं स्वयं में खो गई;
और अब तो प्राण मेरे कुछ ठगे-से रह गए !
गीत प्राणों में जगे, पर भावना में बह गए !

जन्म-स्थान—होडल (दिल्ली)।
जन्म तिथि—सन् १९०६ ।
शिक्षा—घर पर मिडिल तक। विवाह के पश्चात् स्वयं अध्ययन करके प्रथमा, हिन्दी प्रभाकर, साहित्यरत्न आदि की परीक्षाएँ दीं। **विशेष**—राजधानी की सबसे पुरानी हिन्दी-अध्यापिका और कवयित्री। 'साहित्यरत्न' परीक्षा देने के समय प्रयाग में जाकर अध्ययन



भगवतीदेवी 'विह्वला'

किया। उन्हीं दिनों वहाँ पर महाकवि निराला, रामकुमार वर्मा और महादेवी वर्मा के सम्पर्क और प्रोत्साहन से साहित्य-रचना में प्रवृत्त हुईं। कविताओं के अतिरिक्त आपने लेख और निबन्ध भी लिखे हैं। 'भावना' नामक कविता-संग्रह अभी तक अप्रकाशित है। **वर्तमान पता**—३४६ हवेली हैदरकुली, चाँदनी चौक, दिल्ली।

हैं अमर मधुगान मेरे !

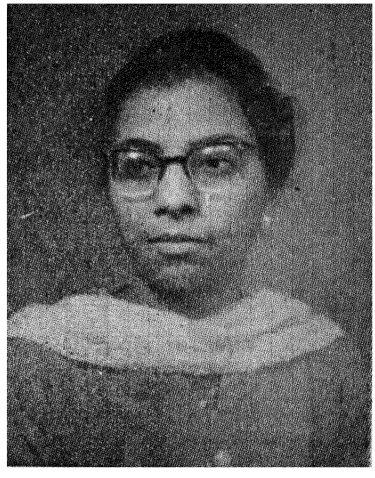
तुम अमर हो, मैं अमर हूँ, हैं अमर मधुगान मेरे !

नीर, नभ, क्षिति, आग-निर्मित
दीप जीवन का मनोरम
लग्न की ले ज्योति तम को-
हर रहा, जलता प्रणय सम
तुम शलभ क्यों गुनगुनाते, भाव हैं अनजान मेरे !
हैं अमर मधुगान मेरे !

इस गगन की यामिनी में
जल रहे हैं दीप कितने
यह न कोई जानता—
इनमें भरा है स्नेह किसने
वे सरस इसको करेंगे, जो बने भगवान् मेरे !
हैं अमर मधुगान मेरे !

दीप के आलोक से तव-
पंथ का आभास होगा
आवरण को दो हटा प्रिय !
तब मुझे विश्वास होगा
फिर तुम्हारी ज्योति में ही, लीन होंगे प्राण मेरे !
हैं अमर मधुगान मेरे !

जन्म-स्थान — दिल्ली । जन्म-तिथि — २० मई १९४० । शिक्षा—बी० ए०, दिल्ली विश्व-विद्यालय से । आजकल एम० ए० (हिन्दी) फाइनल में अध्ययन कर रही हैं । विशेष रुचि—चित्र-कला, संगीत और बागवानी । खुली बिखरी



मणिका मोहिनी

जिन्दगी ही इन्हें प्रिय है। बंधाव अच्छा नहीं लगता। पहले मोहनी 'रश्मि' नाम से लिखती थीं। कविता के साथ-साथ गद्य भी लिखा है। रचनाएँ 'भारती', 'कल्पना', 'धर्मयुग' आदि में प्रकाशित होती रहती हैं। स्थायी पता — २५४२ नाई बाड़ा, दिल्ली-६ ।

केवल अर्पण ही अर्पण है !

दो बूंदें ही जीवन की परिभाषा को समझा गईं,
कितने नूतन रहस्य खुलेंगे, जिस दिन तुमको सागर दंगी !

प्राणों में मादक-सी हलचल,
साँसों में नदिया-सी कल-कल ;
बेकल मन में साध अनेकों,
आँखों में झरने-सी छल-छल ;
एक नसैनी नैनों की भाषा को मुखर बना गई,
मन की व्यथा सुनाने को अब, वाणी का आधार न लूंगी।

सुध बिसरी रूप-लुनाई में,
तन्मयता ज्यों शहनाई में ;
केवल अर्पण ही अर्पण है,
सम्बन्धों की गहराई में ;
मञ्जुल वासन्ती कुसुमों की तरुणाई सिखला गई,
पतझर के आघात हठीले, अब मैं सौ-सौ बार सहूँगी।

तुमने दूरी को माप लिया,
युग को निमिषों में बाँध लिया ;
अनबोले शब्दों से मन का,
कोना-कोना पहचान लिया ;
स्मृतियों की छेड़-छाड़ रस-भीनी गन्ध लुटा गई,
अरमानों की इटलाती-सी, बौराई जल-धार रहूँगी ।

जन्म - स्थान—मेरठ ।
जन्म-तिथि–दिसम्बर १९३० ।
शिक्षा—एम० ए० एल० टी० ।
विशेष—आर्य कन्या इण्टर कालिज मेरठ में वाइस



मधु अग्रवाल

प्रिंसिपल । १२ वर्ष की आयु से ही कविता-लेखन में रुचि ।
स्थायी पता — 'अवन्तिका' ८२४ प्यारेलाल शर्मा रोड, मेरठ ।

तुम हँस लो मेरे जीवन पर !

तुम हँस लो मेरे जीवन पर, जग हँसता रूठे यौवन पर !
वह सावन कब का चला गया, जो बरसा मेरे उपवन पर !

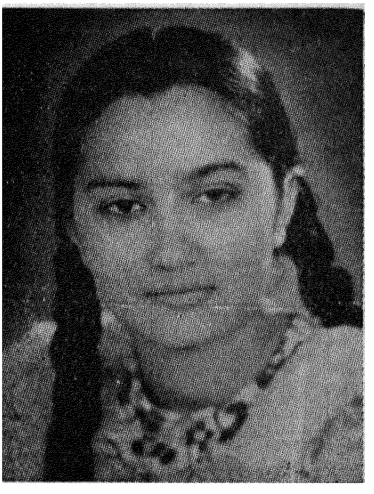
मंजरियाँ कोमल कुम्हलाईं,
उड़ गए भ्रमर सब रस लेकर
पत्ते डालों पर सूख गए,
कुंकुम बिखरा सब धरती पर
निर्धन का वैभव खुला पड़ा, तुम खेलो उससे जी भरकर !
तुम हँस लो मेरे जीवन पर !

वह घटा कहाँ काली-काली
जिससे जीवन था बरस रहा
कब का प्यासा मेरा मधुवन
जल की बूँदों को तरस रहा
गिन रहा साँस जो जीवन के, तुम हँस लो उसकी तड़पन पर !
जग हँसता रूठे यौवन पर !

सब पंछी गाकर मौन हुए,
सब पन्थी आकर लौट गए
उपवन की डाली-डाली पर,
पतझड़ की छाया छोड़ गए
सब खोकर भी जो झूम उठा, तुम हँस लो उसकी थिरकन पर !
तुम हँस लो मेरे जीवन पर !

जन्म-स्थान—नैनीताल। जन्म-तिथि—१३ अगस्त सन् १९४४। शिक्षा—बी० एस-सी०। विशेष—हिन्दू विश्व-विद्यालय वाराणसी में भूगर्भ-विभाग के रीडर डॉ० हरीशचन्द्र पाण्डेय की पुत्री। सन् १९५६ से गीत लिखना प्रारम्भ किया। स्थायी पता—द्वारा डॉक्टर हरीशचन्द्र पाण्डेय रीडर भूगर्भ विभाग, हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

मधु पाण्डेय



मेरे जीवन-दीप !

मेरे जीवन-दीप ! करो अँधियारे में उजियारा !

रात अँधेरी, गहन दुखेरी,
बनी निविड़तम कारा ;
भीगी कोंपल की मुरझाई-
आँखों का टूटा तारा ;

मेरे नीरव गीत ! करो पूरा, पर गीत अधूरा !
मेरे जीवन-दीप ! करो अँधियारे में उजियारा !

सुप्त सपन, बोझिल रसना,
बना अनल उर सारा;
अन्तर की भीगी सरिता का-
सूखा नेहिल जल सारा ;

मेरे नयना-सीप ! बनो सरिता का समुद सहारा ;
मेरे जीवन-दीप ! करो अँधियारे में उजियारा !

थका हुआ है, झुका हुआ है,
आत्म-हनन कर हारा :
नयनों के दो मूल्यवान-
बोलों का सुन लो नारा ;

मेरे भावुक मीत ! करो निस्तब्ध हृदय हरियारा !
मेरे जीवन-दीप ! करो अँधियारे में उजियारा !

प्राण तड़पते, पाँव अचकते,
भटकी सरिता की धारा ;
उर भँवरों के बीच पड़े-
पाने को एक सहारा ;
मेरी स्नेहिल प्रीत ! बहो बन अन्तर की मधु धारा !
मेरे जीवन-दीप ! करो अँधियारे में उजियारा !



मधुमालती चौकसी

जन्म-स्थान — बड़ौदा (गुजरात)। **जन्म-तिथि**— १ अक्तूबर १९३३। **विशेष**— बचपन में ही सिर पर से पिता की छत्र-छाया उठ गई। फिर बीमार रहने लगीं और अब भी शैया ही संगिनी है। दीर्घकालीन अस्वस्थता में ही अध्ययन की ओर रुचि। जन्म से गुजराती होते हुए भी राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की 'राष्ट्रभाषा-रत्न' परीक्षा दी और आजकल 'साहित्य-रत्न' की तैयारी कर रही हैं। **वर्तमान पता**—सामल नेचर की पोल, मांडवी रोड, बड़ौदा-१।

कुछ कह न पाई !

वेदना मेरी अधर तक आ गई, कुछ कह न पाई !

कट गए हैं पंख, पंछी गिर गया नभ से धरा पर
कसकते हैं घाव, फिर भी कुछ नहीं लाया गिरा पर
तुम बताओ, क्या मरण की वेदना वरदान बनती
या अधूरी साध निश्छल प्यार का अभिमान बनती
रागिनी खुलकर मलय में हँस गई, कुछ कह न पाई !
वेदना मेरी अधर तक आ गई, कुछ कह न पाई !

बज उठे हैं तार, कम्पित राग हँसते मुग्ध मन से
खोल गोपन भाव रखती सामने भोले नयन से
लाज का घूँघट हटाकर झाँकते प्यारे सपन-से
जो छिपे थे विस्मरण के कफन में बिखरे रुदन से
प्राण की कोकिल सिहरकर रह गई, कुछ कह न पाई !
वेदना मेरी अधर तक आ गई, कुछ कह न पाई !

बिखरते हैं गान, शबनम बन मनुज के उर अतल से
बह उठी चट्टान, फूटे अश्रु-निर्झर गहन तल से
क्या समझ पाए न उसके प्राण की उन धड़कनों को-
पीर में मदहोश सोई, सलज मीठी तड़पनों को
नीर की दुनिया बसी, वह लुट गई, कुछ कह न पाई !
वेदना मेरी अधर तक आ गई, कुछ कह न पाई !

पर नशीले नयन-नभ में अश्रुओं के घन घुमड़ते
साधना की सेज पर ये रात-दिन दुख-सुख विहँसते
कल्पनाएँ मिट गईं, पर आह भर पाई कभी ना
लुट गया सर्वस्व, फिर भी साँस कह पाई कभी ना
भोर की सुकुमार कलिका खिर गई, कुछ कह न पाई !
वेदना मेरी अधर तक आ गई, कुछ कह न पाई !

हाय मिट-मिटकर पतंगे जी उठे फिर भस्म से ही
प्यार की मनुहार बनकर जल गए क्या रस्म से ही
"ना, अधूरी साधना की राह पर बिखरे सुमन-से"
दीप की जलती शिखा की भारती कहती भुवन से
प्रीत की लड़ियाँ सहमकर जुड़ गईं, कुछ कह न पाईं !
वेदना मेरी अधर तक आ गई, कुछ कह न पाई !

प्राण ! आकर थाम लो बहियाँ !

एक युग के बाद आए तुम,
और मुझको कर गए पागल !

तान चादर सो रही थी मैं,
खींच चादर क्यों जगाया रे !
जागते ही जग गई पीड़ा,
और मन भी हो उठा चंचल !

एक युग के बाद आए तुम,
और मुझको कर गए पागल !

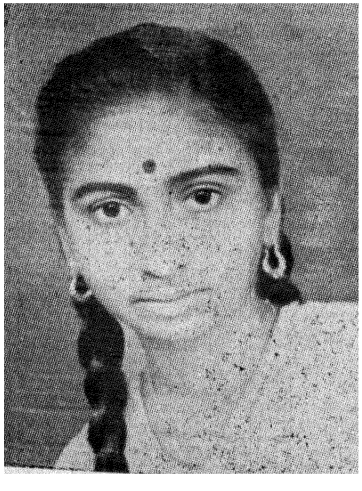
अब न आती नींद पहले-सी,
हो न पाती हूँ अचेतन हो !
प्राण रह-रहकर तड़पते हैं,
कर गए हो इस कदर घायल !

एक युग के बाद आए तुम,
और मुझको कर गए पागल !

जाग जाना ही न काफ़ी है,
दूर मंज़िल, राह बाकी है !
प्राण ! आकर थाम लो बहियाँ,
अश्रु करते हैं डगर ओझल !

एक युग के बाद आए तुम,
और मुझको कर गए पागल !

जन्म-स्थान—सुरेन्द्रनगर, कच्छ, गुजरात (यह स्थान पहले बढ़वाल कैम्प कहलाता था)। जन्म-तिथि—१६ जनवरी १९३३। शिक्षा—बी० ए०, बी० एड०।



मनमोहिनी

विशेष—आजकल अजमेर से प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका 'लहर' का सम्पादन करती हैं। वर्तमान पता—पो० बा० ८२ कचहरी रोड, अजमेर।

रातें आँखों में बीतीं

जितना तुम्हें भुला देने को मन करता है,
उतना ही यह दर्द उभर आता है जैसे !

सौ-सौ साँझ ढलीं, रातें आँखों में बीतीं
सपनों की हर गागर रही सदा ही रीती
सोचा मैंने, 'मौन रहूँगी, कुछ न कहूँगी'
पर प्राणों का गीत मुखर आता है जैसे !

ये प्रतिबन्धों की ऊंची काली दीवारें
आज प्यार की नहीं गूंजती कहीं पुकारें
फिर भी मन को बहलाती हूँ, गा लेती हूँ,
पर साँसों का स्वप्न बिखर जाता है जैसे !

कहीं पन्थ ही नहीं दिखाई देता मुझको
नहीं प्राण का गीत सुनाई देता मुझको
और भटकते हुए आज लगता है प्रतिपल,
सघन अँधेरा कहीं उतर आता है जैसे !

जितना तुम्हें भुला देने को मन करता है,
उतना ही यह दर्द उभर आता है जैसे !



ममता अग्रवाल

जन्म - स्थान— मथुरा । **जन्म-तिथि**—सन् १९४१ । **शिक्षा**—बी० ए० । एम० ए० के प्रथम वर्ष में दिल्ली-विश्व-विद्यालय में प्रवेश । **विशेष**— गद्य और पद्य दोनों ही दिशाओं में प्रवृत्त । विशेष रूप से कविता और कहानी-लेखन में रुचि । श्री विद्याभूषण अग्रवाल की सुपुत्री । **वर्तमान पता**— २५/३९ शक्तिनगर, दिल्ली-६ ।

भावना के दीप मेरे !

नेह-सरि में तिर रहे हैं, भावना के दीप मेरे !
ऊर्मियाँ उन्मुक्त मन से, गा रही हैं गीत तेरे !

सरित के उस छोर पर, कोई खड़ा मुझको पुकारे,
सुधि तुम्हारी अवश करती है मुझे सझा-सकारे,
क्यों नहीं वे समझ पाते मैं परिधि के इस किनारे ?
वेदना को भेजती हूँ, भाव-दीपों के सहारे,
उलहना देते मुझे वे, मैं करूँ उनके निहोरे !
नेह-सरि में तिर रहे हैं, भावना के दीप मेरे !

हर लहर जो बह रही है, इस किनारे-उस किनारे,
तृप्ति मुझको हो रही इस क्षीण सम्बल के सहारे,
मध्य पर ही रेख है, नैकट्य की दोनों हमारे,
इसीके बल टूटते-से हृदय के व्यवधान सारे,
नेह-अंजलि भेजती हूँ, प्राण के संगीत मेरे !
नेह-सरि में तिर रहे हैं, भावना के दीप मेरे !

प्रिय तुम्हारी प्रीति के आह्वान को स्वीकारती हूँ,
प्रेम के प्रतिदान में कुछ हृदय-दीप संवारती हूँ,
देव ! तुम आराध्य मेरे, मैं तुम्हारी आरती हूँ,
शून्य में मं बैठ सुखद भविष्य छवि उतारती हूँ,
युग-युगों से दूर होकर तुम सदैव समीप मेरे !
नेह-सरि में तिर रहे हैं, भावना के दीप मेरे !



जन्म-स्थान—फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश)। **जन्म-तिथि**—सन् १९०७। **शिक्षा**—एम. ए. (संस्कृत)। **प्रकाशित रचनाएँ**— 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सान्ध्य गीत', 'दीपशिखा', 'आधुनिक कवि', 'सप्त पर्णा', 'यामा' आदि। **विशेष**—हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ कवयित्री, महिला विद्यापीठ प्रयाग की

महादेवी वर्मा

आचार्या, साहित्यकार संसद् प्रयाग की संस्थापिका। कुछ समय तक आप 'चाँद' की भी सम्पादिका रही थीं। अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा मंगलाप्रसाद पारितोषिक और 'साहित्य-वाचस्पति' उपाधि से सम्मानित। सन् १९५६ में 'पद्मभूषण' से विभूषित। **स्थायी पता** — साहित्यकार संसद, इलाहाबाद।

यह सपना सुकुमार किसी का !

मैं पलकों में पाल रही हूँ, यह सपना सुकुमार किसी का !

जाने क्यों कहता है कोई,
मैं तम की उलझन में खोई,
धूममयी वीथी - वीथी मे,
लुक-छिपकर विद्युत्-सी रोई ;

मैं कण-कण में ढाल रही अलि, आँसू के मिस प्यार किसी का !
मैं पलकों में पाल रही हूँ, यह सपना सुकुमार किसी का !

रज में शूलों का मृदु चुम्बन,
नभ में मेघों का आमन्त्रण,
आज प्रलय का सिन्धु कर रहा,
मेरी कम्पन का अभिनन्दन ;

लाया झंझा-दूत सुरभिमय साँसों का उपहार किसी का !
मैं पलकों में पाल रही हूँ, यह सपना सुकुमार किसी का !

पुतली ने आकाश चुराया,
उर ने विद्युत् लोक छिपाया,
अंगराग-सी है अगों में
सीमाहीन उसीकी छाया ;

अपने तन पर भाता है अलि, जाने क्यों शृङ्गार किसी का !
मैं पलकों में पाल रही हूँ, यह सपना सुकुमार किसी का !

मैं कैसे उलझूं इति-अथ में,
गति मेरी संसृति है पथ में,
बनता है इतिहास मिलन का
प्यास-भरे अभिसार अकथ में ;
मेरे प्रति पग पर बसता जाता सूना संसार किसी का !
मैं पलकों में पाल रही हूँ, यह सपना सुकुमार किसी का !

जन्म-स्थान—शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश। **जन्म-तिथि**—२ सितम्बर, सन् १९३७। **विशेष**—कानपुर के बी० एन० एस० डी० कालिज में एम० ए०

माधवी रानी 'छाया'



(हिन्दी फाइनल) की छात्रा। आकाश वाणी के लखनऊ-केन्द्र से अनेक गीत प्रसारित हो चुके हैं। **स्थायी पता**—११३।१४८ स्वरूप नगर, कानपुर।

मुसकराता हुआ दीप मैं बन सकूं!

मुसकराता हुआ दीप मैं बन सकूं,
स्नेह इतना हृदय में भरो आज तुम !

लड़खड़ाती हुई वर्त्तिका देखकर
भय यही है तिमिर घिर न आए यहाँ,
शून्य भरकर पथिक के मधुर राग में
हर घड़ी रागिनी को रुलाए यहाँ,
एक मंजिल समझकर जिसे रुक गए
नित नये पन्थ का वह सृजन बन गई,
फिर नई राह पर प्राण आकुल हुए
और उलझन सुलझकर नई हो गई ;

हर नई राह का लक्ष्य मैं पा सकूं,
आत्म-विश्वास इतना भरो आज तुम !
मुसकराता हुआ दीप मैं बन सकूं,
स्नेह इतना हृदय में भरो आज तुम !

मोतियों से न रीती रहे आँख यह
रागिनी कण्ठ में खो न जाए कहीं
भय मुझे है तिमिर को घनी छाँह में
ज्योति धुँधली स्वयं हो न जाए कहीं,
ज़िन्दगी में खिची है परिधि मौत की
डगमगाता हुआ हर कदम चल रहा,

एक पल की मनुज की हँसी को यहाँ
डबडबाता हुआ हर नयन छल रहा,
चाँदनी-सा मधुर हास बिखरा सकूं,
प्राण ! उल्लास इतना भरो आज तुम !
मुसकराता हुआ दीप मैं बन सकूं,
स्नेह इतना हृदय में भरो आज तुम !

फूल कुछ झर रहे हैं धरा पर अरे
नव कली का न घूँघट हटाओ अभी,
हँस सके साथ ही मुसकरा घूमकर ;
डाल के फूल यों मुसकराओ अभी ;
आवरण रश्मि का फूल पर डाल दो
नव कली के नयन मुसकरा तो सकें,
हो नए राग का ही सृजन कुछ घड़ी
मुक्त मन से अधर गुनगुना तो सकें ;

मैं गरल पी सकूं, गीत गा-गा यहाँ,
जीभ पर बूँद मधु की धरो आज तुम !
मुसकराता हुआ दीप मैं बन सकूं,
स्नेह इतना हृदय में भरो आज तुम !

जन्म-स्थान— औरंगाबाद (आन्ध्र प्रदेश)। **जन्म-तिथि**— ४ जून १९३४। **शिक्षा**— एम० ए० (हिन्दी)। **विशेष**— गीत, कहानी, शब्द-चित्र तथा छोटे-छोटे रेडियो-नाटक लिखने में विशेष रुचि। विवाह से



मालती जोशी

पूर्व 'मालती दिघे' नाम से लिखती थीं। **वर्तमान पता**— द्वारा श्री सोमनाथ जोशी असिस्टेण्ट इंजीनियर पुनर्वास, चम्बल कॉलोनी, भानपुरा, वाया झालावाड़ रोड (पश्चिम रेलवे)।

धूप-छाँह है प्यार तुम्हारा !

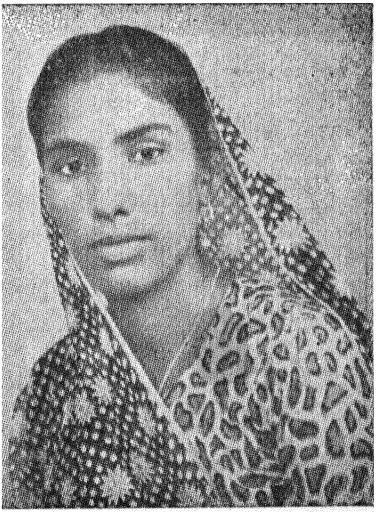
धूप-छाँह है प्यार तुम्हारा,
कभी हँसाए, कभी रुलाए, हाथ न आए !

कभी-कभी नन्दन-कुसुमों से
भर जाती है मेरी झोली,
कभी राह की धूल निगोड़ी
कर जाती है क्रूर ठिठोली ;
इसीलिए तो बिलख-बिलखकर कहती हूँ मैं—
बैरी है या मीत हमारा,
गले लगाए, या ठुकराए, बाज न आए !
धूप-छाँह है प्यार तुम्हारा,
कभी हँसाए, कभी रुलाए, हाथ न आए !

मुखरित हो जाता अपने में
कभी-कभी तो सूनापन भी,
और कभी तो भरे जगत् में
पास न रहता अपना मन भी ;
इसीलिए तो सिसक-सिसककर कहती हूँ मैं—
मौज कहूँ, या इसे किनारा,
कभी डुबाए, पार लगाए, आस जगाए !
धूप-छाँह है प्यार तुम्हारा,
कभी हँसाए, कभी रुलाए, हाथ न आए !

कभी कल्पना के धागों में
बँध जाते हैं क्षण अनजाने,
कभी नयन के यमुना-जल में
बह जाते हैं घर पहचाने ;
इसीलिए तो तड़प-तड़पकर कहती हूँ मैं—
है कैसा अनमोल सहारा,
दीप बुझाए, स्वप्न सजाए, नींद न आए !
धूप-छाँह है प्यार तुम्हारा,
कभी हँसाए, कभी रुलाए, हाथ न आए !

जन्म-स्थान— बहराइच (उत्तर प्रदेश)। **जन्म-तिथि**— १ जुलाई १९३९। **शिक्षा**— एम० ए० (हिन्दी)। **प्रकाशित रचना**—'अणिमा' (कविता-संग्रह)। **अप्रकाशित रचना**—



मालती श्रीवास्तव

'रत्नावली' (खण्डकाव्य)। **स्थायी पता**—द्वारा डॉ० ज्वाला-प्रसाद श्रीवास्तव कानूनगो-पुरा, बहराइच (उत्तर प्रदेश)।

मेरी लाज रखना !

तुम जहाँ चाहो रहो सिन्दूर मेरे,
इस दुधारी माँग की पर लाज रखना !

काँपकर ही रह गया तन-मन व्यथा का
तुम कभी भी धीर की चूनर न लाए,
सान्त्वना की सप्तरंगी ओढ़नी की—
लालसा ही रह गई मन में छिपाए ;

तुम गगन में ही हँसो मधु गीत मेरे,
जो छिपी है पीर, उसकी लाज रखना !
तुम जहाँ चाहो रहो सिन्दूर मेरे,
इस दुधारी माँग की पर लाज रखना !

तुम गगन के जलधरों से खेल खेलो
तुम तड़पती बिज्जु का उपहार ले लो ;
देख लूँगी मैं नयन-भर दूर से ही—
स्वर्ण-किरणों के बढ़ो उपहार ले लो ;

रूप के पीछे पड़े शृङ्गार मेरे,
मैं तुम्हारी छाँह, मेरी लाज रखना !
तुम जहाँ चाहो रहो सिन्दूर मेरे,
इस दुधारी माँग की पर लाज रखना !

युग-युगों की साधना के स्वर सँजोए
प्राण आकुल थे तनिक भोले, न बोले,
रागिनी मन की, गगन तो जा रही हो—
छीन कोई ले न पथ में भाव भोले;

पवन-रथ पर जा रहे संगीत मेरे,
मैं तुम्हारी वीणा, मेरी लाज रखना!
तुम जहाँ चाहो रहो सिन्दूर मेरे,
इस दुधारी माँग की पर लाज रखना!



मालती सिरसीकर

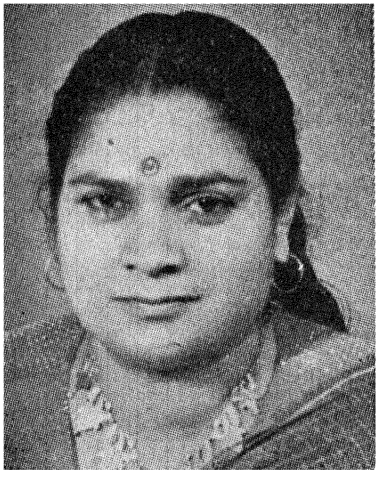
जन्म - स्थान — हरदा (मध्य प्रदेश)। **जन्म-तिथि**— ४ मई १९३३। **शिक्षा**—एम० ए० (अंग्रेज़ी)। **प्रकाशित रचनाएँ**— 'तुम बड़ी पागल हो' (कहानी - संग्रह), 'बाली' (उपन्यास)। **विशेष**—हिन्दी की तरुण पीढ़ी की कहानी-लेखिकाओं में अग्रणी। प्रख्यात प्रयोगवादी कवयित्रियों में से एक। विवाह से पहले 'मालती परूलकर' नाम से लिखती थीं। **वर्तमान पता**—ई० ६६ मोती बाग नं० १, नई दिल्ली।

पहचानते हैं प्राण तुम्हें !

पहचानते है प्राण तुम्हें, पर ये नयन नहीं !

हुई बावरी बहुत बार मगर, मिली न खबर,
किस दिशा से आते हैं स्वर, किस इंगित पर,
बहते हैं नयनों से निर्झर, अल्हड़, झर-झर !
छूती है क्यों तान तुम्हारी प्राणों के पंछी को,
बहलाता क्यों ख्याल तुम्हारा,अधरों की वंशी को,
रोज-रोज खोजकर, पवन-गगन को टोककर,
हार गई मैं, हार गए पग, पर यह लगन नहीं !
पहचानते हैं प्राण तुम्हें, पर ये नयन नहीं !

ढलता दिन है, ढलती जाती है, हर आने वाली रात,
पर ढली नहीं, टिकी रही, अचल सती-सी साध,
छंद-छंद में, अंग-अंग में भरकर अवसादी उन्माद !
यौवन झर जायेगा, झरती ज्यों पतझर की पाँत,
किन्तु प्यार तुम्हारा, सदा रहेगा मृत्यु-पार भी साथ
था बल आशीष का, कि पी गई मैं विष मीरा-सा-
कान्हा बिन किसी में रही जो पल भी मगन नहीं !
पहचानते हैं प्राण तुम्हें, पर ये नयन नहीं !



मोहिनी गौतम

जन्म-स्थान— अनन्तापुर, मेजा, प्रयाग। **जन्म-तिथि**— अगस्त १९२६। **शिक्षा**— पंजाब-विश्वविद्यालय से हिन्दी प्रभाकर और अंग्रेजी में बी० ए०। प्रयाग-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से 'साहित्य-रत्न'। **अप्रकाशित रचनाएँ**—'कलिका' (कविता-संग्रह); इसके अतिरिक्त एक कहानी-संग्रह भी। **विशेष**—दिल्ली कालिज दिल्ली के हिन्दी-अध्यापक डॉ० मनमोहन गौतम की धर्मपत्नी। **स्थायी पता**—कठौती, मेजा रोड, इलाहाबाद।

कलि, तुमने खिलकर क्या पाया ?

सुनसान तुम्हारे अन्तर को, पल-भर भी उजला कर पाया ?
कलि, तुमने खिलकर क्या पाया ?

ऊषा की अरुणाई से वह सन्ध्या तक तुझ पर मँडराया
हिम की अँधियारी रजनी में, भौंरा कब तुममें बँध पाया ?
तुम कुहर म्लान हो अकुलाईं, उड़ गया छली पर कब आया
तुम सम्पुट खोले खड़ी रहीं, लेकर अर्पित मन शरमाया !
कलि, तुमने खिलकर क्या पाया ?

तुम बनी प्रतीक्षा की बाती, दीपक बन संचित नेह जला
पल-भर को भी पतंग बनकर, वह निष्ठुर कब आया पिघला
तुमने खुद ही लुट-लुटकर तो, उसको स्वच्छन्द बना पाया
जब चूस चुका, रस लूट चुका, क्या कभी भूलकर भी आया ?
कलि, तुमने खिलकर क्या पाया ?



रजनी मिश्र

जन्म-स्थान—उज्जैन ।
जन्म-तिथि—सन् १९३६ ।
शिक्षा—एम० ए० (हिन्दी) ।
विशेष—हिन्दी की नई पीढ़ी के विशिष्ट गातकार श्री वीरेन्द्र मिश्र की छोटी बहन । इनके पिता श्री चन्द्रिकाप्रसाद मिश्र भी अच्छे कवि हैं । 'आधुनिक काव्य का विकास' पर एम० ए० परीक्षा के लिए प्रस्तुत किया गया विशिष्ट प्रबन्ध अभूतपूर्व है । छोटी अवस्था से ही कविता में रुचि ; जो बड़े भाई से प्रभावित होकर कालान्तर में पल्लवित और परिष्कृत हुई । **वर्तमान पता**—आँग्रे का बाजार, लशकर (ग्वालियर) ।

मन के मीत न आए !

बाट देखते हारी अँखियाँ, मन के मीत न आए !
मन के मीत न आए !

हुई भोर आशा की बेंदी ने ऊषा का भाल सजाया
अँगड़ाई ले जगी उमंगे भावों ने नव पर्व मनाया
अरमानों की अमराई में मन की कोयल गाए !
मन के मीत न आए !

भारी मन बोझिल पलकों ने, राह देखते समय बिताया
अनगिन दिये दिलासे मन को, कितनी बार नहीं समझाया
सपन-भरे नयनों में मेरे आँसू ही, भर आए !
मन के मीत न आए !

चली पुरविया निकला चन्दा एक-एक कर चले सितारे
लगन न छूटी, आस न टूटी, मैं अपने विश्वास सहारे
मेरे मन्दिर में तेरा ही स्नेह-दीप मुसकाए !
मन के मीत न आए !



जन्म-स्थान—जबलपुर । **जन्म-तिथि**—१२ दिसम्बर १९१२ । **विवाह**—२८ जून १९२५ को सहारनपुर में । **शिक्षा**—काव्यतीर्थ परीक्षा सन् १९२८ में द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की । **विशेष**—कविता लिखना इन्होंने सन १९३२ से शुरू किया और

रत्नकुमारी काव्यतीर्थ

अपने पिता सेठ गोविन्ददास के नाटकों के गीतों को मिलाकर लगभग २०० कविताएँ लिखी हैं । **प्रकाशित पुस्तकें**—'अंकुर' (कविता-संग्रह), श्री नर्मदा-प्रसाद खरे की विस्तृत भूमिका सहित । **स्थायी पता**—राजा गोकुलदास का महल, जबल-पुर ।

रे मन ! आँसू पी ले !

निभृत नींद से जाग, निरन्तर नयन नीर से गीले !
रे मन ! आँसू पी ले !

शैशव-शैया पर सोया था, सुख से रे अनजान !
किस निर्दय अँगुली ने छेड़ी, खिंची बीन पर तान !
निकले राग रसीले !
रे मन ! आँसू पी ले !

चौंक चकित-सा उड़-उड़ मत छू रे बादल के कूल !
उच्छ्वासों की आँधी चलती, पन्थ न जाना भूल !
रुक जा, हाय ! हठीले !
रे मन ! आँसू ! पी ले !

आतुर आशा खोल झाँकती, सुख-सुषमा के द्वार !
बन्दी का जीवन रे भोले ! हो जावेगा भार !
हो निराश ही जी ले !
रे मन ! आँसू पी ले !



रमा सिंह

जन्म - स्थान—ग्राम ननखेरिया (हरदोई) उत्तर प्रदेश। **जन्म-तिथि**—२३ मई सन् १९२७। **शिक्षा**—एम० ए० (हिन्दी तथा राजनीति) तथा एल-एल० बी० (लखनऊ विश्वविद्यालय से)। प्रारम्भिक शिक्षा बी० ए० तक महिला कालिज लखनऊ में प्राप्त की। **प्रकाशित रचना**—'समुद्र फेन' (कविता संग्रह)। **विशेष**—हिन्दी की नई पीढ़ी की कवयित्रियों में अग्रगण्य। आपकी रचनएँ आकाश वाणी के विभिन्न केन्द्रों से प्रसारित होती रहती हैं। 'ज्ञानोदय', 'कल्पना', 'त्रिपथगा', 'संकेत', 'अजन्ता', 'हिन्दुस्तान', 'धर्मयुग' तथा 'नया समाज' आदि पत्र-पत्रिकाओं में ससम्मान रचनाओं का प्रकाशन। आजकल महिला विद्यालय लखनऊ में हिन्दी की प्राध्यापिका। **वर्तमान पता**—सिंह लाज, हसनगंज पार, लखनऊ।

मेरे पास कुछ उत्तर नहीं !

साँझ आई, चुप हुए धरती-गगन
नयन में गोधूलि के बादल उठे
बोझ से पलकें झपीं नम हो गईं
साँझ ने पूछा, उदासी किसलिए ?
किन्तु मेरे पास कुछ उत्तर नहीं ?

रात आई, कालिमा घिरती गई
सघन तम में द्वार मन के खुल गए
दाह की चिनगारियाँ हँसने लगीं
रात ने पूछा, जलन यह किसलिए ?
किन्तु मेरे पास कुछ उत्तर नहीं ?

नींद आई, चेतना सब मौन है
देह थककर सो गई, पर प्राण को-
स्वप्न की जादूभरी गलियाँ मिलीं
नींद ने पूछा, भुलावे किसलिए ?
किन्तु मेरे पास कुछ उत्तर नहीं ?
प्रश्न तो बिखरे यहाँ हर ओर हैं
किन्तु मेरे पास कुछ उत्तर नहीं ?



राजकुमारी कौल

जन्म-स्थान—जोधपुर। **जन्म-तिथि**—सन् १९२७। **शिक्षा**—मैट्रिक के बाद एम० ए० तक प्राइवेट पढ़ा। राजस्थान विश्वविद्यालय से सन् १९५५ में 'राजस्थान के राजघरानों द्वारा हिन्दी की सेवाएँ' विषय पर पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त की। **विशेष**—विवाह से पूर्व 'राजकुमारी शिवपुरी' नाम से लिखती थीं। आजकल जयपुर के महारानी कालिज में हैं। कविता के अतिरिक्त सितार और वायलिन आदि में विशेष रुचि। **प्रकाशित रचनाएँ**—'आशादीप' (कविता-संग्रह), 'स्मृतियों की आँधी' (कहानी-संग्रह)। **वर्तमान पता**—४ विवेकानन्द मार्ग, सी स्कीम, जयपुर।

प्राण तुमको दे रही हूँ !

प्रण मुझे तुमने दिया, मैं प्राण तुमको दे रही हूँ !

व्योम की इस क्षितिज-रेखा—
से अटल विश्वास सम्बल,
डालती मैं धो निशा में
भर पलक में स्वप्न का जल;
क्यों न मेरे ज्वलित अधरों—
को बुझाती अश्रु-धारा
मन मुझे तुमने दिया, मैं मान तुमको दे रही हूँ !
प्रण मुझे तुमने दिया, मैं प्राण तुमको दे रही हूँ !

तुम कहो तो आज सारे—
दुखित जग का ताप हर लूँ,
और जगती की व्यथा से
आज अपने नयन भर लूँ;
प्राण का निःश्वास पहला
साँस के अन्तिम क्षणों में
गेय तुमने दे दिए, मैं गान तुमको दे रही हूँ !
प्रण मुझे तुमने दिया, मैं प्राण तुमको दे रही हूँ !

मोतियों का हार है, या
धूलि पर चिनगारियाँ हैं,

प्रिय तुम्हारी राह में
अभिषेक की तैयारियाँ हैं;
किन्तु निद्रा के सजे हैं
द्वार बन्दनवार सपने
अश्रु तुमने दे दिए, मैं ध्यान तुमको दे रही हूँ !
प्रण मुझे तुमने दिया, मैं प्राण तुमको दे रही हूँ !

प्रकृति की सीमन्त में---
सिन्दूर किसने भर दिया है,
और मैं तो दूर थी—
मजबूर किसने कर दिया है ?
आज मुझको विजय भी
मिलती पराजय के स्वरों में
प्रीत तुमने दी कि मैं पहचान तुमको दे रही हूँ !
प्रण मुझे तुमने दिया, मैं प्राण तुमको दे रही हूँ !

आज मैं ही तो सिखाती
दीप को ले पीर पलना,
सीखता है शलभ मुझसे-
ही अरे, चुपचाप जलना,
आज मेरी राह में तो
हार को भी हारना है
दे दिए पाषाण, मैं भगवान् तुमको दे रही हूँ !
प्रण मुझे तुमने दिया, मैं प्राण तुमको दे रही हूँ !

मानती हूँ फिर गई हूँ—
तिमिर से, मैं हूँ अकेली,

इन उमड़ती बदलियों की
आँख है मेरी सहेली :
किन्तु दीपक नील नभ के—
दे रहे आलोक मुझको
तम मुझे तुमने दिया, दिनमान तुमको दे रही हूँ !
प्रण मुझे तुमने दिया, मैं प्राण तुमको दे रही हूँ !

याद में तो दिन निकलता
रात आँखों में सुला ली,
तुम हठीले हो अगर तो
आज मैं भी हूँ निराली ;
अंक में भर प्रणय परिमल
ले हृदय में एक आशा
शाप तुमने दे दिया, वरदान तुमको दे रही हूँ !
प्रण मुझे तुमने दिया, मैं प्राण तुमको दे रही हूँ !



राजकुमारी श्रीवास्तव

जन्म-स्थान—जबलपुर ।
जन्म-तिथि— सन् १९२० ।
अपने छात्र-जीवन से ही ये कविता लिखने और भाषण देने की ओर उन्मुख थीं । सन् ३६ में हुई पति की आकस्मिक मृत्यु के बाद आजकल अपनी एक-मात्र पुत्री के साथ रह रही हैं। **विशेष**—आप प्रसिद्ध मज़दूर नेता स्व० हरिहरनाथ शास्त्री की पत्नी श्रीमती शकुन्तला श्रीवास्तव की बड़ी बहन हैं। आपकी रचनाएँ 'आजकल', 'हिन्दुस्तान', 'सुधा' तथा 'माधुरी' आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। **स्थायी पता**—द्वारा कुमारी कीर्ति विद्यार्थी ए० डी० ओ० मण्डला (मध्य प्रदेश) ।

मेरे प्रियतम साकार अमर !

मेरे जीवन का सार अमर, मेरा सुन्दर संसार अमर !

मैंने भी गाए गीत कभी,
मैंने भी पाई प्रीत कभी ;
जो आज रुदन भी बन न सका,
वह जीवन था संगीत कभी ;
उर की जय-माला पल-भर में, बनती प्राणों की हार अमर !

मन के तारों पर सुध-बुध खो,
मैंने जो गीत बजाया था ;
हाँ, स्वयं स्वर्ग भी मोहित हो,
फिर इस धरती पर आया था ;
वह स्वर्ग गया, वीणा टूटी, पर उसकी मृदु झंकार अमर !

यह भेद बता दे ओ निर्मम,
मुझको कलपाकर क्या पाया ?
तूने मुझसे छल से छीनी,
केवल उनकी नश्वर काया ;
मेरे अन्तर के आसन पर, मेरे प्रियतम साकार अमर !

मत पूछो उसने क्या खोया,
जिसका सर्वस्व समर्पित है ;

जिसके प्राणों का अणु-अणु भी,
प्रिय के चरणों पर अर्पित है ;
खोना हो पाना बन जाता, जब जीवन ही उपहार अमर !

जग दीन उसे कहता कैसे,
जिसका मन किंचित् दीन नहीं ;
उसकी स्मृतियों से आलोकित,
अन्तर मेरा छवि-हीन नहीं ;
नश्वरता को जीवन देकर, चमका देता है प्यार अमर !

मेरी लघुता से जो पाते,
अपनी महिमा का आश्वासन ;
वे दुर्बल मन कब कर पाए,
मेरे गौरव का तेज सहन ;
उनके प्रहार ये तिरस्कार, बनते मेरा उपकार अमर !

जग मेरी गरिमा क्या जाने,
क्या मेरा वैभव पहचाने ?
जिसके अंचल में चिन्तामणि,
वह क्या झोंकों से भय माने ?
तूफ़ान पराजित हों जिससे, मेरा प्रकाश आधार अमर !

पथ में वह पथिक भटकता है,
जिसने निज केन्द्र नहीं जाना ;
यदि भटका तो भी खो न सका,
जिसने मंज़िल को पहचाना ;
दुख मेरी मंज़िल का साथी, मेरे मन का शृङ्गार अमर !
मेरे जीवन का सार अमर, मेरा सुन्दर संसार अमर !

जन्म - स्थान—आगरा। **जन्म - तिथि**— १४ जुलाई १९१४। **शिक्षा**—एम० ए०। आजकल लखनऊ विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र विषय पर अनुसन्धान कर रही हैं। **विशेष**—इनके पति श्री देवीदीन त्रिवेदी लखनऊ में शिक्षा-उप-संचालक हैं। इनकी रचनाएँ सन् १९३२ से ही 'आर्य महिला',



राजराजेश्वरी त्रिवेदी 'नलिनी'

'माधुरी', 'चाँद', 'विश्वमित्र आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। **प्रकाशित रचनाएँ**—'कुंकुम'। एक संग्रह और भी शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है। आजकल भी इनके गीत आकाश वाणी के लखनऊ केन्द्र से प्रसारित होते रहते हैं। **स्थायी पता**—६ माल एवेन्यू, लखनऊ।

कब किसकी साध हुई पूरी !

फिर आज सजनि जग पूछ रहा, मेरी उस मौन कहानी को !
जीवन की धुँधली दर्दीली, सपनों की शेष निशानी को !

मेरा अतीत खो गया हाय,
युग के चंचल अभिसारों में,
थे स्वप्न सजीले टूट गए,
विनिमय की मृदु मनुहारों में ;
मेरे प्राणों के गीतों की,
बिखरी हैं आकुल पंखुड़ियाँ,
विस्मृति के चरणों में बेसुध,
मूर्छित कवि की कवितावलियाँ;

वह सुनने को हठ ठान रहा, युग-युग की कथा पुरानी को !
फिर आज सजनि जग पूछ रहा, मेरी उस मौन कहानी को !

साँसों के सिकता-कण पर यह,
साँसों का सुन्दर महल खड़ा,
है इसका पता-ठिकाना क्या,
कब बना और फिर कब बिगड़ा ;
संघर्षण की इस दुनिया में,
अलि कब किसका उर-सुमन खिला,
कब किसकी साध हुई पूरी,
किसका अनुराग फला-फूला ;

मैं मौन थकित-सी निरख रही, कब से जग की मनमानी को !
फिर आज सजनि जग पूछ रहा, मेरी उस मौन कहानी को !

पलकों में उमड़ रहा सावन,
है गरज रहा भादों उर में ;
मैं कैसे गाऊँ गीत मधुर,
अवरुद्ध कण्ठ टूटे स्वर में ;
क्यों मेरी मौन विवशता से,
अलि ! आज जगत् को प्रीत हुई ;
क्यों मेरी मौन अर्चना भी,
अब उसको असह प्रतीत हुई ;

फिर आज हठीला जगा रहा, सोई-सी याद पुरानी को !
फिर आज सजनि जग पूछ रहा, मेरी उस मौन कहानी को !
जीवन की धुंधली दर्दीली, सपनों की शेष निशानी को !



जन्म-स्थान—ग्राम खम्भा-पुर (कानपुर)। **जन्म-तिथि**—वसन्त पंचमी सन् १९०९। **निधन-तिथि**—२४ जून सन् १९४९। **विशेष**—आपकी रचनाओं में वीर रस और भक्ति रस के साथ-साथ वेदना की झलक रहती थी। आपको अ० भा० महिला-कवि-सम्मेलन

स्व० राजरानी चौहान

प्रयाग में पहले-पहल कविता-पाठ करने पर स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ था। आपके पिता रावत भूपसिंह जी जूदेव 'भूप' स्वयं भी प्रतिष्ठित कवि थे। इनकी बड़ी बहन रामकुमारी चौहान भी हिन्दी की प्रतिष्ठित कवयित्री हैं। 'झलक' नामक आपका कविता-संग्रह अभी तक प्रकाशित नहीं हो सका।

न पूरी हुई आज तक चाह !

हृदय-सागर में उठतीं नित्य, तरगें भाव-भरी उद्दाम
उसीमें आशा का जल-यान, जा रहा है मेरा अविराम

कटी वर्षों-सी घड़ियाँ कठिन, दिवस भी युग-से हुए व्यतीत
आज भी अरमानों के साथ, गा रहीं आँखें दुख के गीत

समझती थी पागल है विश्व, नहीं जब तुमसे थी पहचान
किन्तु मैं सचमुच पगली हुई, देव ! जब हुआ तुम्हारा भान

दिखाई दिये, अदेखे रहे, न जी-भर तुम्हें विलोका आह
रही मन में मन की अभिलाष, न पूरी हुई आज तक चाह

तुम्हारी पद-पूजा के लिए, अनोखे चुन रक्खे थे फूल
सोचती थी मन में, 'विधि-वाम न जाने कब होवे अनुकूल

अग्रसर होना चाहा किन्तु, किया माया ने प्रबल विरोध
अचानक पुलक उठे यह प्राण, भूल सब अपने मन का बोध

हृदय-मंदिर में तब से नाथ, तुम्हारी प्रतिमा है आसीन
उसीका करती पूजन और साधना में रहती हूँ लीन



जन्म-स्थान—अमीन नगर (मुजफ्फरनगर) उत्तर प्रदेश। जन्म-तिथि—अक्तूबर १९०७। निधन - तिथि— १९ नवम्बर १९४१। विशेष—हिन्दी के प्रख्यात पत्रकार और 'नया जीवन' मासिक के सम्पादक श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' की धर्मपत्नी। विवाह से पूर्व

स्व० रामकली 'प्रभा'

यद्यपि इनका अक्षर-ज्ञान पूरी वर्णमाला तक भी न पहुँचा था, परन्तु फिर भी श्री प्रभाकर जी के सम्पर्क-साहचर्य से बाद में वे कहानियाँ, लेख व कविताएँ बड़ी सफलता से लिखने लगी थीं। उनका जीवन व्यक्तित्व-निर्माण की साधना का एक श्रेष्ठ उदाहरण था।

समझूँगी इसको भी प्यार !

अन्धकारमय घनी निशा है, बैठी हूँ सरिता के कूल !
तेरे चरणों में अर्पण हित, छोड़ रही मानस के फूल !

जब चरणों में यह पहुँचेगी, पहुँचेंगे मेरे भी फूल !
देख इन्हें स्मर मुझको लेना, जाना जीवन-धन, फिर भूल !

मेरी स्मति में नष्ट न करना, सरिता-संगम-सुख हे प्राण !
हृदयांचल में ले स्मृति तेरी, होती हूँ द्रुत अन्तर्ध्यान !

अन्तिम भेंट समझकर प्यारे, फूलों को करना स्वीकार !
अथवा पग से ठुकरा देना, समझूँगी इसको भी प्यार !



रामकुमारी चौहान

जन्म - स्थान—सीसामऊ (कानपुर)। **जन्म-तिथि**—अगहन कृष्णा ६, संवत् १९५९। **विशेष**—इनके पिता तथा माता से इनमें काव्य-प्रतिभा प्रस्फुटित हुई। इनका विवाह सन् १९१४ में झाँसी के प्रसिद्ध राष्ट्र-सेवी कुँवर रत्नसिंह बी० ए० एल-एल० बी० एडवोकेट के साथ हुआ। सन् १९२९ में पति का दुःखद वियोग हो गया। वेदना-पूर्ण कविता लिखने में किसी समय आप महादेवी वर्मा के समकक्ष मानी जाती थीं। आपके 'निःश्वास' नामक काव्य-संग्रह पर सम्वत् १९९२ वि० में सम्मेलन का 'सेकसरिया पुरस्कार' दिया गया था। अनेक अप्रकाशित रचनाएँ प्रकाशन की प्रतीक्षा में हैं। **स्थायी पता**—महारानी लक्ष्मी बाई का मन्दिर, झाँसी (उत्तर प्रदेश)।

गीत कोई गा रहा है !

क्षीण टूटे तार उर के, क्यों बजाता जा रहा है ?
गीत कोई गा रहा है ?

सुप्त जीवन-स्वप्न मेरा, दीप जगमग जल रहे हैं ;
नील नभ के क्षीण तारे, विश्व-वैभव छल रहे हैं ;
रुद्ध उलझे तार मन के, मौन हो सुलझा रहा है !
गीत कोई गा रहा है !

मुग्ध मादक मोहिनी में, विश्व बेसुध सो रहा है ;
शान्ति, सन्ध्या का मिलन तम-कालिमा को धो रहा है ;
आज करुणा के उदधि में, ज्वार-सा कुछ आ रहा है !
गीत कोई गा रहा है !

सरस स्वर-लहरी हृदय की, यन्त्रिका के स्वर सजाती ;
शिथिल सोई भावना की, सुप्त पीड़ा को जगाती ;
शून्य मरुथल-मध्य मधु का, कौन रस बरसा रहा है !
गीत कोई गा रहा है !

शून्य तट पर शून्यता की लोल लहरों में समाया ;
विकल बीहड़ विषम वेला में पथिक यह कौन आया ;
कौन उर के क्षीण पथ पर चिह्न करता जा रहा है ?
गीत कोई गा रहा है ?

वेदना की छद्म छाया में प्रलोभन को छिपाता ;
मलिन अंचल में प्रणय का भार-सा क्यों झूम जाता ;
तिमिर में तिरती निशा पर, कौन यह मुसका रहा है ?
गीत कोई गा रहा है ?

तरल तृष्णा के झकोरे, और फेनिल गरल प्याली ;
भर रहा है सरस स्वर से, विरस जीवन-बीच लाली ;
हृदय के पीड़ित व्रणों को, दूर से सहला रहा है ?
गीत कोई गा रहा है ?

जन्म-स्थान—झाँसी (उत्तर प्रदेश) । **जन्म-तिथि**—११ फरवरी सन् १९१० । **निधन-तिथि**—सन् १९३५ । **शिक्षा**—प्रयाग विश्वविद्यालय से एम० ए० की परीक्षा सन् १९३२ में । **विशेष**—सुप्रसिद्ध प्रगतिशील आलोचक प्रो० प्रकाश चन्द्र गुप्त की पूर्व पत्नी । किसी समय



स्व० रामेश्वरी गोयल

आर्य कन्या पाठशाला प्रयाग की प्रधानाचार्या थीं । प्रारम्भ में छायावाद के प्रभाव में कविता और गद्यगीत लिखे । इन में से अनेक रचनाएँ 'सरस्वती' में प्रकाशित हुईं । इनके गीतों का एक संग्रह इनके निधन के उपरान्त 'जीवन का सपना' नाम से प्रकाशित हुआ ।

गायक यहाँ न छड़ो तान !

अभी-अभी तो सोया है मम शैशव का अवसान !
गायक यहाँ न छेड़ो तान !

इतराई-सी सकुचाई-सी
सुख-दुख-रंजित कलियाँ
बिखरी-सी मुरझाई-सी
स्वप्निल नभ-तारावलियाँ
बिलख रहे उर के प्रमाद में, प्राणों के चिर गान !
गायक यहाँ न छेड़ो तान !

सोने दे, हँसने दे मुझको
स्वप्न-मन्त्र के अभिनय में
गाने दे उर के तारों पर
मिलने दे उस लय में
जहाँ कूजती क्षण-भर भी तो हृदय-विजय की तान !
गायक यहाँ न छेड़ो तान !

भर लेने दे जीवन की—
रग-रग में वह उन्माद
भुला सके जो निर्दय की—
कटु मधुर निराली याद
पा लेने दो इसे वहीं उर के बदले उर दान !
गायक यहाँ न छेड़ो तान !

कम्पित उर के लघु प्रकाश में
जग के इन थालों को
ढूँढ़ रहा इस आला बलि में
छिपे हुए छालों को
जहाँ प्रीति का अन्त मिलाता, चिर बिछुड़े दो प्राण !
गायक यहाँ न छेड़ो तान !



जन्म-स्थान—ग्राम बेत्थर, जिला उन्नाव (उत्तर प्रदेश)।
जन्म-तिथि—सन् १९१३।
निधन-तिथि—सन् १९३५।
विशेष—आपकी शिक्षा लखनऊ के नरही नामक मुहल्ले में, (जहाँ उनकी ननिहाल थी) हुई थी और सन् १९२९ में आपका विवाह श्री लक्ष्मीशंकर मिश्र 'अरुण' के साथ हो गया था।

स्व० रामेश्वरी देवी 'चकोरी'

श्री अरुण जी स्वयं भी बड़े अच्छे लेखक और कवि हैं। चकोरी जी उनके सहयोग से कविता के क्षेत्र में अग्रसर हुईं और थोड़े-से ही समय में अच्छी ख्याति प्राप्त कर ली थी। **प्रकाशित रचनाएं**—'किंजल्क', 'मकरन्द' (काव्य-संग्रह), 'धूप छाँह' (कहानी-संग्रह)।

भग्न हृदय के किस कोने में !

क्या है छिपा, और क्या सुख है, मिलता जो तुमको रोने में ?
भग्न हृदय के किस कोने में ?

क्यों तुम पथ में श्रान्त-क्लान्त-सी
बैठी हो सखि ! व्यथित भ्रान्त-सी
शीतल उच्छ्वासों द्वारा तुम
किसे बुलाती हो अशान्त-सी ?

यह जीवन-पथ अकथ, अगम है, शान्ति नहीं किंचित् रोने में ?
भग्न हृदय के किस कोने में ?

अपना हास्य सहर्ष लुटाना
वैभव-सुख खो दिया, न जाना
सजनि ! अन्त में दीना-हीना
हो पथ में आँसू बरसाना

कोई सहृदय द्रवित न होगा, है असारता इस रोने में ?
भग्न हृदय के किस कोने में ?

हो समाधि-रत साधु व्यक्ति-सी
प्रिय, किस योगी की विरक्ति-सी
तन्द्रा में विलीन बैठी हो
मूर्तिमान आराध्य भक्ति-सी

मुक्ति-मार्ग क्या कभी सुलभ है, चिर-निद्रा में ही सोने में,
भग्न हृदय के किस कोने में;

आशा के प्रदीप धुंधले-से
कान्ति-हीन सम्पूर्ण जले-से
सब-के-सब निर्वाण पा चुके
उन्हें लगाओ अब न गले से

सोओ, अब सब नष्ट हो चुका, शान्ति मिले सखि ! यदि सोने में !
भग्न हृदय के किस कोने में ?

जन्म-स्थान—गाजियाबाद (मेरठ), उत्तर प्रदेश। **जन्म-तिथि**—१५ जुलाई, १९२३। **शिक्षा**—एम० ए० (हिन्दी) आगरा विश्वविद्यालय से। बी० एड० (दिल्ली)। **विशेष**—हिन्दी के प्रख्यात पत्रकार और कहानी-लेखक श्री महावीर अधिकारी



रामेश्वरी शर्मा

की पत्नी। **प्रकाशित रचनाएँ**—'काली छाया' (कहानी-संग्रह)। आजकल लेडी इरविन हायर सेकेण्डरी स्कूल में प्रधान हिन्दी-अध्यापिका हैं। **वर्तमान पता**—द्वारा श्री महावीर अधिकारी सम्पादक 'नवभारत टाइम्स' पो० बा० २१३, बम्बई—१।

दूर मेरा मीत है !

चाँदनी बिखरी धरा पर
चाँद हँसता है गगन पर
ढल रही है रात सारी, पर अधूरी प्रीत है !
दूर मेरा मीत है !

कल्पना की अर्चना में
भावना तल्लीन है
हूक उठती है हृदय में, पर न कोई गीत है !
दूर मेरा मीत है !

एक 'छाया' है नयन में
नीर भी भरपूर है
मिलन भी है, विरह भी है, क्या निराली रीत है !
दूर मेरा मीत है !

जन्म - स्थान— जबलपुर, (मध्य प्रदेश)। **जन्म-तिथि**— १ नवम्बर १९१७। **शिक्षा**— जबलपुर के सिटी कालिज तथा महाकौशल महाविद्यालय में; नागपुर विश्वविद्यालय से हिन्दी विषय लेकर एम. ए. (१९४१ में)। **विशेष**—विवाह से पहले आप 'रूपकुमारी वाजपेयी' नाम से लिखती थीं। सबसे



रूपकुमारी तिवारी

पहली कविता 'आकांक्षा' १९३८ की 'सरस्वती' में प्रकाशित हुई थी। तदुपरान्त 'वीणा', 'कमला', 'विशाल भारत' और 'नया समाज' में भी आपकी रचनाएँ प्रकाशित हुईं। आपके पति बिहार में 'मर्सिडीज बेंज' के प्रमुख व्यवसायी हैं। **स्थायी पता**—तिवारी बेचर एण्ड कम्पनी, जमशेदपुर।

समर्पण का अमिट अभिसार तो दो !

मिलन की रागिनी गाए, न गाए,
विरह को व्यथा पर अधिकार तो दो !

बजी जब राग-भीनी प्राण-वंशी
जगीं जब अलस किरणें स्वर्ण-अंशी
कि पग-नूपुर रँगीले बने चंचल
जगे चंचल ऊषा के मधुर तम छल
प्रणय की जय न देना, तो न देना,
समर्पण का अमिट अभिसार तो दो !

मिलन की रागिनी गाए, न गाए,
विरह की व्यथा पर अधिकार तो दो !

लहर में डूब जो सरिता-किनारा
कि सूखे कुछ तृणों का ले सहारा
थका चुपचाप सो जाता निमिष-भर
न पथ-दर्शक, न पंथ विराम कोई
न फूलों की कभी सिर छाँह आई,
खिज़ाँ की रंगमयी बहार तो दो !

मिलन की रागिनी गाए, न गाए,
विरह की व्यथा पर अधिकार तो दो !

विफल-सा शेष प्रायः आरती-पल
जली जो रात-भर अविराम, अविकल
निवेदित भक्ति की उस दीप-छवि पर
तपोज्वल साध की उस धूम-द्युति पर
कि नीरस, शुष्क, बासी ही पुरानी,
स्मृति की चार कलियाँ वार तो दो !

मिलन की रागिनी गाए, न गाए,
विरह की व्यथा पर अधिकार तो दो !

झुकी पलकें चरण-तल चूम लेतीं
कि प्रिय पग-धूलि धो बढ़ अर्घ्य देतीं
तरल दृग रूप-सिक्त विभोर होते
प्रतीक्षा के विकल सब ध्यान खोते
न देते तुम भले करुणा इशारा
ज़रा-सा एक बार निहार तो दो !

मिलन को रागिनी गाए, न गाए,
विरह की व्यथा पर अधिकार तो दो !

जन्म-स्थान— दिल्ली ।
जन्म-तिथि— सन् १९२९ ।
प्रकाशित रचना— 'तूलिका' ।
विशेष—हिन्दी की तरुण पीढ़ी के कवि श्री रामानन्द 'दोषी' (सम्पादक 'कादिम्बिनी') की



रेखा रामानन्द

सहधर्मिणी। हिन्दी की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में कविताएँ प्रकाशित होती रहती हैं। वर्तमान पता—१०।७ रमेश-नगर, नई दिल्ली—१५।

निगोड़े नैन को क्या हो गया है ?

उमड़ता सावन, उमड़ती हैं घटाएँ,
यह निगोड़े नैन को क्या हो गया है ?

कह दिया शायद हमारा राज़ तुमने,
पीर से पाषाण पिघले जा रहे हैं
इस तरह टूटा गगन से एक तारा,
चाँद के, लो, प्राण होठों आ रहे हैं

बिलखता अम्बर, बिलखती हैं दिशाएँ,
आज की इस रैन को क्या हो गया है ?
उमड़ता सावन, उमड़ती हैं घटाएँ,
यह निगोड़े नैन को क्या हो गया है ?

पाँव छू आए हमारे जिस डगर को,
धूल तक उसकी हुई है अगुरु-चन्दन
पर जहाँ विश्राम करना चाहते हैं,
छाँह तक देती वहाँ की दाह-दंशन

दहकता आँगन, दहकते द्वार, राहें,
यह अजाने चैन को क्या हो गया है ?
उमड़ता सावन, उमड़ती हैं घटाएँ,
यह निगोड़े नैन को क्या हो गया है ?

एक ध्वनि है, जो न आती पास अपने,
एक प्रतिध्वनि, जो न पीछा छोड़ती है;
ज़िन्दगी नाता जगत् से, जागरण से,
राम जाने, तोड़ती या जोड़ती है;

बहकते हैं स्वर, बहकती हैं सदाएँ,
यह हठीले बैन को क्या हो गया है ?
उमड़ता सावन, उमड़ती हैं घटाएँ,
यह निगोड़े नैन को क्या हो गया है ?

मुसकराएँ हम, चमन सब झूम जाए,
जोहती हैं बाट आने की बहारें;
आज सुधि शायद तुम्हें आई इधर की,
द्वार दस्तक दे रहीं हल्की फुहारें;

सहमता उपवन, सहमती हैं हवाएँ,
इस हठी उपरैन को क्या हो गया है ?
उमड़ता सावन, उमड़ती हैं घटाएँ,
यह निगोड़े नैन को क्या हो गया है ?

जन्म स्थान— लखीमपुर खीरी (उत्तर प्रदेश)। **जन्म तिथि**— ३ नवम्बर सन् १९३० । **शिक्षा**—बी० ए० (१९५०), एम० ए० (१९५४) लखनऊ विश्वविद्यालय से । १० मई १९५४ को विवाह । **विशेष**—रचनाएँ 'सरिता' तथा



लक्ष्मी त्रिपाठी

'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। आकाश वाणी के नई दिल्ली केन्द्र से भी आपकी रचनाएँ प्रसारित की जाती हैं। **वर्तमान पता**—बी० ४ ग्रीन पार्क, नई दिल्ली।

एक स्वर लगता भला !

एक तेरा गान, शत-शत गान बन बहता चला !

गिरि-शिखर से निकल निर्झर-
तरल द्रुत गति से चला,
किन्तु तेरी याद लेकर-
उफनता झर-झर झरा ;
एक बार बिछुड़ गया, बेबस बिछुड़ना ही पड़ा !
किन्तु आजीवन लगन के गीत ही गाता चला !

उदधि-उर में उमड़ बादल
दूर नभ में खो चला,
किन्तु ले तेरी कसक
कैसी चमकती चंचला ;
हो जलधि से दूर भी गर्जन वही करता चला !
गात ही अपना विलमकर, मिट गया, प्रिय में मिला !

पीर मधुरा धार ये-
विधुरा धरा पर बह रही,
खोजती-सी हर लहर
भूली-भटकती जा रही ;
एक लय है, एक गति है, एक स्वर लगता भला !
एक तेरा गान, शत-शत गान बन बहता चला !

जन्म-स्थान— आवाज (ईरान)। जन्म-तिथि—८ जून, १९२३ । शिक्षा—एम० ए० (हिन्दी), पी-एच० डी० ('आधुनिक हिन्दी-नाटकों में नारी-चित्रण' विषय पर)। प्रकाशित रचनाएँ—'दो राहें', 'बिखरे काँटे', 'बादरवा बरसन आए' (उपन्यास); 'दूब के फूल' (कहानी संग्रह); 'रेवा-प्रांगण'



लीला अवस्थी

(रेडियो-फ़ीचर-संग्रह); 'नीला लिफाफा' (एकांकी नाटक); 'मंगू भैया' (नव साक्षरों के लिए कहानी-संग्रह; दिल्ली-राज्य-शिक्षा-विभाग द्वारा पुरस्कृत)। पिछले कई वर्ष से आकाश वाणी के नागपुर तथा लखनऊ-केन्द्रों में प्रोग्राम-एग्जीक्यूटिव। वर्तमान पता—आकाश वाणी, लखनऊ।

कैसा प्यार तुम्हारा !

कैसा प्यार तुम्हारा, यह मैं समझ न पाई ?
क्यों वह खेले खेल प्रणय का, समझ न पाई ?

वह शत-शत जीवन का बन्धन,
वह शत अभिलाषा का दर्शन;
शत-शत जीवन का नवल प्यार,
है शत जीवन का नव दुलार;

कैसा प्यार तुम्हारा, यह मैं समझ न पाई ?
क्यों वह खेले खेल प्रणय का, समझ न पाई ?

कहाँ गये वे वचन तुम्हारे,
फिर आने की वाचा हारे ?
राह निहारूँ बैठी अपलक,
नेह सँजोऊँ बोलो कब तक ?

कैसा प्यार तुम्हारा, यह मैं समझ न पाई ?
क्या वह खेले खेल प्रणय का, समझ न पाई ?

जन्म-स्थान— देहरादून। जन्म - तिथि — १ अक्तूबर, १९०७। शिक्षा—एम० ए०, बी० टी० (हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी से)। विशेष— देहरादून के सामाजिक जीवन में विशेष भाग लेती रहीं और २५-३० वर्ष तक वहाँ की प्रसिद्ध



स्व० लीलावती भँवर 'सत्य'

महिला-शिक्षा-संस्था महादेवी कन्या पाठशाला की प्रधानाचार्या रहीं। माता-पिता की सेवा के लिए कोई भाई न होने के कारण आजन्म अविवाहित रहने का व्रत लिया और उसका अन्त तक पालन किया। ९ जनवरी १९५४ को निधन।

हमारे प्रियतम प्राणाधार !

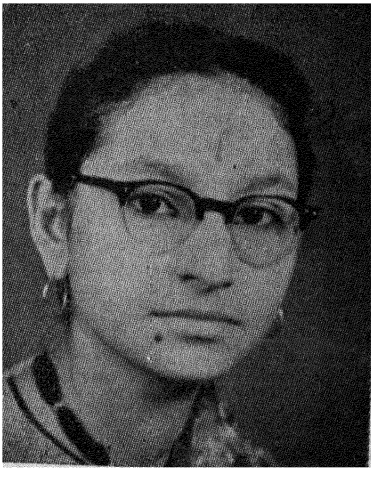
दिखाऊँ किसको जाकर आज, हृदय की अन्तर्ज्वाला नाथ
जले जाते हैं तन, मन, प्राण, शक्तियाँ दौड़ रही हैं साथ
सँभालोगे कब आकर प्यार ?
बता दो प्रियतम प्राणाधार !

नित्य-प्रति इस अन्तर में प्राण, न जाने होता क्या उत्पात
सँभाले नहीं सँभलता हाय, हृदय का यह भीषण परिताप
उतारोगे क्या आ यह भार ?
कभी हे प्रियतम प्राणाधार !

हृदय की विषम वेदना आज, हृदय ही में मैं कर लूँ बन्द
चाहती किन्तु शब्द बन हाय, निकल पड़ती क्यों वह स्वच्छन्द
हाय रोकूँ कैसे यह ज्वार ?
कहो कुछ प्रियतम प्राणाधार !

हाय भीतर-बाहर सब ओर, चल रहा है यह झंझावात
चाहता बुझना जीवन-दीप, न सह पाएगा अब आघात
तुम्हीं अब पहुँचा दो उस पार।
देवता, प्राणों के आधार !

जन्म -स्थान— कोरीघाट, होशंगाबाद (मध्य प्रदेश)। जन्म - तिथि—१५ नवम्बर, १९३२। शिक्षा—हाई स्कूल, हिन्दी विशारद। विशेष—सन् १९४५ से कविता प्रारम्भ



विजयकान्ता श्रीवास्तव

की। कुछ कहानियाँ भी लिखी हैं और अनेक कविताएँ बहुत-सी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। स्थायी पता—शान्ति-निकेतन, ६३ चेरीताल, जबलपुर।

मुझको तुम न सताओ

ऐसी जली हृदय की होली, राख हुए अरमान
सुख ने मोड़ लिया मुख अपना, शाप बने वरदान

मैंने गाया फाग, आग की लपट उठी दीवानी
मैंने फेंका रंग, नयन से बहा उमड़कर पानी

हर्ष, हुलास, हास की होली, राग-रंग की धारा
किन्तु व्यर्थ, जब मेरे मन का डूब गया ध्रुव तारा

मन में व्यथा, व्यथा में छाई पाहुन की परछाईं
जिस छलिए ने आकर मेरी यह दुनिया भरमाई

ओ पावस के मादक झोंको, मेरे पास न आओ
प्रिय मन्दिर सूना है, आकर मुझको तुम न सताओ

टूट गया वह मादक सपना, भग्न हुए अरमान
देकर मुझे गया है तिल-तिल जलने का वरदान

जन्म-स्थान—ग्राम बम्भौरा जिला सीतापुर (उत्तर प्रदेश)। **जन्म - तिथि**— सन् १९३४। **शिक्षा**—लखनऊ - विश्वविद्यालय से इतिहास विषय लेकर प्रथम श्रेणी में एम० ए० की उपाधि प्राप्त की। फिर उस्मानिया विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम० ए० किया। **कार्य**—कुछ समय तक लखनऊ-विश्वविद्यालय में ही अध्यापन



विद्या मिश्र

किया। बाद में गान्धी राष्ट्रीय हिन्दी विद्यालय नांदेड़ (महाराष्ट्र) में अध्यापिका रहीं। आजकल सर बंसीलाल बहुउद्देशीय बालिका विद्यालय हैदराबाद में प्रधान अध्यापिका हैं। **विशेष**—पी-एच० डी० की उपाधि के लिए अनुसन्धान में रत हैं। **स्थायी पता**—२१-४-९४५ चारमहल, हैदराबाद, (आन्ध्र)।

जान सकोगे क्या ?

मेरे दुख की गहराई को जान सकोगे क्या ?

मेरे हृदय-सिन्धु में भी जो समा न सका
जिसको मेरा नयन-नीर भी बहा न सका
आहों का बन्धन न जिसे बाँध सका
प्राणों का क्रन्दन न जिसे लाँघ सका
उस मेरी अनन्त पीड़ा को पहचान सकोगे क्या ?
मेरे दुख की गहराई को जान सकोगे क्या ?

जो नभ के वक्षस्थल पर तारे बनकर बिखरी
जो पुष्पों के आँचल पर शबनम बनकर निखरी
जो कोयल के स्वर की मधुमय पीर बनी
जो चातक के उर की उन्मादक टीस बनी
उसकी सीमा का कर अनुमान सकोगे क्या ?
मेरे दुख की गहराई को जान सकोगे क्या ?

जिस पीड़ा के तरु को हृत्तल में पाला-पोसा
आशाओं की बलि दे प्राणों के रस से सींचा
जिसके होने से मेरे जीवन का दुख दूना है
जिसको खो देने से मेरा जीवन ही सूना है
उसके प्रति मेरी ममता को जान सकोगे क्या ?
मेरे दुख की गहराई को जान सकोगे क्या ?

जन्म-स्थान—अमरावती। **जन्म-तिथि** — १६ जून सन् १९३५। **शिक्षा**—बी० ए०, बी० एड०। **विशेष**—विवाह से पूर्व विद्याध्ययन के दिनों में जब आगरा कालिज में पढ़ती थीं तो 'कुमुदिनी जोशी' के नाम से लिखती थीं। बी० ए० भी आगरा विश्वविद्यालय से



विद्या वसन्त मानेकर

किया। आजकल धुलिया के काणे कन्या विद्यालय में मुख्याध्यापिका हैं। बी० एड० विवाहोपरान्त १९५६ में किया, बचपन में कुछ नाटक तथा कहानियाँ भी लिखीं। **वर्तमान पता**—द्वारा डॉ० वसन्त केशव मानेकर, ५ वी गली, धुलिया, (महाराष्ट्र)।

तेरा ऋण आज चुका दूंगी !

जो जीवन में पाई विपदा
उससे आँसू-उपहार मिला
लौटाकर अश्रु सभी अब वे, मैं गिन-गिनकर बदला लूंगी !
तेरा ऋण आज चुका दूंगी !

है संगिनि मेरी जो पीड़ा
उससे जग ने पाई व्रीड़ा
मैं उसी विपद्-व्रीड़ा का अब, जग को फिर से प्याला दूंगी !
तेरा ऋण आज चुका दूंगी !

गीतों में भरकर आँसू-कण
हैं पाए मैंने पावन क्षण
प्रिय गीले गान सँजो स्वर में, पाहन को आज रुला दूंगी !
तेरा ऋण आज चुका दूंगी !

जन्म-स्थान— जोधपुर (राजस्थान)। **जन्म-तिथि**— ११ अगस्त, १९२६। **शिक्षा**— वनस्थली विद्यापीठ, जयपुर में प्रारम्भिक दिनों में। हिन्दी एम० ए० (आगरा) जे० डी० (पंजाब विश्वविद्यालय से); विशारद, सरस्वती; जे० जे० स्कूल ऑफ आर्ट्स बम्बई से आर्ट्स का डिप्लोमा। **विशेष**— भारतीय समाचार-पत्रों की



विद्या 'विभा'

प्रथम प्रमाणित महिला-संवाद-दाता; पहले प्रेस कमीशन में काम किया; आजकल 'नारी-समाज' नामक एक साप्ताहिक पत्र का सम्पादन कर रही हैं। आपके पति श्री बी० बी० सक्सेना 'पार्लियामेण्टरी टाइम्स' नामक अंग्रेजी साप्ताहिक के सम्पादक हैं। **वर्तमान पता**—२५ यार्क होटल, कनाट सरकस, नई दिल्ली।

गान लेकर क्या करूँगी !

शाप ही दो तुम मुझे, मैं दान लेकर क्या करूँगी ?
रागिनी ही खो गई जब, गान लेकर क्या करूँगी ?

आज स्वर्गिक रूप चाहे,
छाँह बन भू पर उतर ले;
और रवि की तप्त ज्वाला,
उर्मियों का रूप धर ले;
पर न मेरी हार को वह,
अब अधिक यों छल सकेगी;
बुझ गई जो आग, उसकी
राख कब तक जल सकेगी;
मृत्यु ही दो तुम मुझे, मैं प्राण लेकर क्या करूँगी ?
शाप ही दो तुम मुझे, मैं दान लेकर क्या करूँगी ?

भावना की पुण्य गंगा,
आज दोनों पार बहती;
डूब लूँ चाहे उतर लूँ
मुक्ति ही हर बार रहती;
फिर भला जग से मुझे क्या
दे, न दे मुझको अमरता;
दे रही है आज मुझको
गरल की कटुता प्रबलता;
ध्येय ही जब मिट चुका, तो ध्यान लेकर क्या करूँगी ?
शाप ही दो तुम मुझे, मैं दान देकर क्या करूँगी ?
रागिनी हो खो गई जब, गान लेकर क्या करूँगी ?

जन्म-स्थान— फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश)। **जन्म-तिथि**— २८ अप्रैल, १९२५। **प्रकाशित रचनाएँ**— 'जीवन-तरणि' (कविता-संग्रह)। **विशेष**— इनके इस कविता-संग्रह की प्रशंसा सर्व श्री सनेही, नारायणप्रसाद अरोड़ा, वृन्दावनलाल वर्मा, भगवतीचरण वर्मा



विद्या सक्सेना

तथा सोहनलाल द्विवेदी आदि हिन्दी के जाने-माने साहित्यकारों एवं कवियों ने की है। सुश्री सुभद्राकुमारी चौहान और महादेवी वर्मा से विशेष रूप से प्रभावित। **स्थायी पता**— १०७। १६० जवाहरनगर, कानपुर।

याद मेरी भूल जाना !

भूल पाओ, तो हृदय से याद मेरी भूल जाना !
आज होगा दूर जाना !

विश्व के स्वप्निल प्रलोभन-
में अचानक फँस गई थी,
मैं प्रणय के उन सुकोमल-
बन्धनों मे कस गई थी;

आज जीवन में मुझे है वह जटिल बन्धन छुड़ाना !
भूल पाओ, तो हृदय से याद मेरी भूल जाना !
आज होगा दूर जाना !

आज दृग में अश्रु कैसे,
प्राण ! यह कैसी उदासी,
याद है क्या विश्व-पथ पर,
मिल गए थे दो प्रवासी;

और हम-तुम गा उठे थे दो स्वरों से एक गाना !
भूल पाओ, तो हृदय से याद मेरी भूल जाना !
आज होगा दूर जाना !

माँग तुमने ही सजाई थी-
न प्रथम सुहाग भरकर,
मुसकराये थे दृगों में-
तुम प्रणय का राग भरकर;

आज भी उन ही करो से माँग को होगा सजाना !
भूल पाओ, तो हृदय से याद मेरी भूल जाना !
आज होगा दूर जाना !

देखना बुझने न पाए,
वह प्रणय-आलोक मेरा,
है तुम्हींको चिर समर्पित,
कल्पना का लोक मेरा;

निभ सके तो अन्त तक मेरी अमानत को निभाना !
भूल पाओ, तो हृदय से याद मेरी भूल जाना !
आज होगा दूर जाना !

दूर दृग से हो नहीं, मैं
दूर तुमसे जा रही हूँ,
मैं तुम्हारे प्राण में-
प्रतिबिम्ब अपना पा रही हूँ;

चिर मिलन का मार्ग है यह, मृत्यु तो जग का बहाना !
भूल पाओ, तो हृदय से याद मेरी भूल जाना !
आज होगा दूर जाना !



विद्यावती 'कोकिल'

जन्म-स्थान— हसनपुर, (मुरादाबाद) उत्तर प्रदेश। **जन्म-तिथि**— १६ जुलाई सन् १९१४। **प्रकाशित रचनाएँ**— 'अंकुरिता', 'माँ', 'सुहागिन', 'पुनर्मिलन', 'आरती' (कविता-संग्रह)। 'फ्रेम बिना तस्वीर' (नाटक)। **विशेष**—हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री और अनन्य साधिका। आपका रचनाओं का सर्वश्री माखनलाल चतुर्वेदी, हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ०धीरेन्द्र वर्मा तथा दिनकर आदि अनेक ख्यातिप्राप्त कवियों और आलोचकों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है। **वर्तमान पता**—श्री अरविन्द आश्रम, पाण्डिचेरी।

मुझको मेरी मुक्ति मिल गई है !

तेरे इंगित ही अब मेरे बने कर्म को धारा,
तेरी इच्छा ही पग-गति का मेरी बनी इशारा,
अब मेरे बन्धन-बन्धन की ग्रन्थि खुल गई है !
मुझको मेरी मुक्ति मिल गई है !

अन्तरतम के तल से यथा किसी ने मुझे गुहारा,
वस्तु-वस्तु में देख लिया वह मैंने रूप तुम्हारा,
मुझको मेरा कर्म, ज्ञान औ' भक्ति मिल गई है !
मुझको मेरी मुक्ति मिल गई है !

दुनिया के बल आकर मुझको, डिगा नहीं अब पाते,
रुक-रुककर मेरे अन्तर में, उलटे फिर जन्माते,
मुझको मेरी परम अचंचल शक्ति मिल गई है !
मुझको मेरी मुक्ति मिल गई है !

परम शान्ति का यहाँ एक साम्राज्य बिछ गया है,
तेरी पूर्ण विजय पर अब विश्वास जम गया है,
मुझे अमर बनकर मेरी अनुरक्ति मिल गई है !
मुझको मेरी मुक्ति मिल गई है !

अमिट प्रेम की लहर निरन्तर बहती छिन-छिन है,
मैं न जानती, मैं हूँ, तुम हो, या जग-जीवन है !
जीवन-स्रोत खिल गए, सारी भुक्ति खिल गई है !
मुझको मेरी मुक्ति मिल गई है !

मेरा तो सखि अंग-अंग डूबा तुम भी डूबो हे,
देश और देशान्तर डूबो, डूबो जन-जन हे,
आओ देखो यहाँ तुम्हारी तृप्ति मिल गई है !
मुझको मेरी मुक्ति मिल गई है !

जन्म-स्थान— देवबन्द (सहारनपुर) उत्तर प्रदेश। जन्म-तिथि— सम्वत् १९७३ विक्रमी। विशेष—पारिवारिक संस्कारवश शैक्षणिक संस्थाओं में उच्च शिक्षा तो प्राप्त नहीं कर पाईं, पर जीवन-दर्शन और अनुभव में बहुत-सी डिग्रियाँ



विद्यावती कौशल

प्राप्त कीं। संगीत में विशेष रुचि है। मध्य प्रदेश के महू नामक स्थान से आपके पति श्री कौशलप्रसाद जैन 'रजत पट' नामक एक सिने-पत्र सम्पादित कर रहे हैं। स्थायी पता— 'रजत पट' कार्यालय, महू कैण्ट (मध्य प्रदेश)।

मुसकान देने ही चली हूँ !

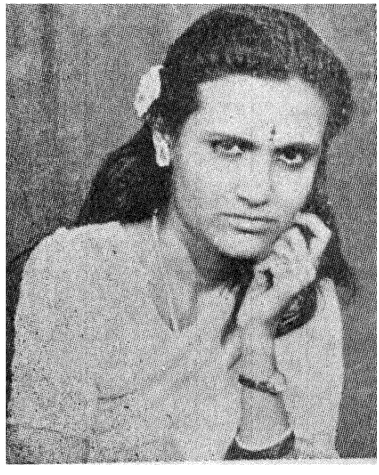
देव, तुमको आज मैं मधु गान देने ही चली हूँ !
हार हो या जीत, मैं मुसकान देने ही चली हूँ !

मदभरे सपने सजाए, कल्पना के इन क्षणों में,
एक दिन साकार होंगे, स्वर्णमय वे उन पलों में,
आज तो प्रिय जान लो, पहचान देने ही चली हूँ !
हार हो या जीत, मैं मुसकान देने ही चली हूँ !

देव, जीवन है समर्पण, लो खुशी के राग गाएँ,
विश्व में उल्लास भर दें, औ' नई दुनिया बसाएँ,
थाम लो कर आज, जीवन-दान देने ही चली हूँ !
हार हो या जीत, मैं मुसकान देने ही चली हूँ !

श्रान्त होंगे, क्लान्त होंगे, भ्रान्त होंगे क्या न मग में,
पर शिथिलता आ सकेगी एक पल को भी न पग में,
लक्ष्य पाने का सबल अनुमान देने ही चली हूँ !
हार हो या जीत, मैं मुसकान देने ही चली हूँ !

जन्म - स्थान— भिलाई (मध्य-प्रदेश)। **जन्म-तिथि**— १४ अप्रैल, सन् १९३० । **शिक्षा**—एम. ए., साहित्यरत्न। **प्रकाशित रचनाएँ**— 'श्रद्धा के फूल', 'पूर्णिमा', 'अर्चना', 'कामना', 'नारी हृदय', 'बौद्ध कला-कृतियाँ', 'आदर्श बौद्ध महिलाएँ' आदि । **विशेष**—



विद्यावती मालविका

इनमें से अन्तिम उत्तर प्रदेश-सरकार द्वारा पुरस्कृत हो चुकी है। 'अर्चना' पर मध्य प्रदेश-सरकार ने प्रथम पुरस्कार प्रदान किया था । आपकी रचनाएँ हिन्दी के सभी प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं । **वर्तमान पता**— बैरक न० ४, मार्तण्ड लान्सर, रीवा (मध्य प्रदेश)।

विरह-गीत ही गाया !

मन के विकल भाव ने आखिर, विरह-गीत ही गाया !

पल-भर रुक जा नभ के बादल ! रुँधती मेरी बोली,
आज आँसुओं में है मैंने, अपनी प्रीति सँजो ली ;
तेरी पाँखों के सँग मेरी, साथ चलेगी भोली,
पहुँचाना सन्देश सलोने ! भरे आश की झोली;
तेरी ही गति में तो मैंने, है अनुराग बँधाया !
मन के विकल भाव ने आखिर, विरह-गीत ही गाया !

तप्त रेणु में नहीं कहीं भी, दूर्वा-दल की आशा,
तेरी छाया में ओ राही ! रहे न मन यह प्यासा;
समझ अरे सकेत नयन के, जिसमें मौन निराशा,
आँसू से भीगी पलकों में, छिपी कौन-सी भाषा;
प्राणों का सन्देश यही है, एक साँस दुहराया !
मन के विकल भाव ने आखिर, विरह-गीत ही गाया !

इन आँखों में सदा रहेगा, प्रिय का रूप सलोना,
एक लाज में सिमट रहा है, मन का कोना-कोना;
ओह स्वय की ममता में ही, क्या पाना, क्या खोना,
नहीं हार या जीत अरे ! जब कोई अपना हो ना;
कह देना दो बोल विकल ये, 'तूने प्रिय पथ पाया !'
मन के विकल भाव ने आखिर, विरह-गीत ही गाया !

जन्म-स्थान—गौर(पुखरायाँ) कानपुर । **जन्म-तिथि**—सन् १९१८ । **शिक्षा**—घर पर ही। विवाह के कुछ समय बाद ही वैधव्य । **विशेष**— पितृ-वश की भाँति ससुराल के सब लोग भी विद्या-व्यसनी । कविता लिखना ३३-३४ से प्रारम्भ। पहली कविता १९४७ मे काशी से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'चेतना' में प्रकाशित हुई । अभी तक लगभग दो हजार



विद्यावती मिश्र

कविताएँ प्रकाशित । कविताओ के अतिरिक्त सामयिक रचनाएँ संगीत रूपक, अवधी रचनाएँ, बालकों के लिए पद्य कथाएँ भी लिखी । **प्रकाशित रचनाएँ**— 'ज्योति', 'प्रतीक्षा', 'श्रद्धा', 'मुक्ति', 'कठोपनिषद्' (पद्यानुवाद) । 'प्रतीक्षा' तथा 'मुक्ति' उत्तर प्रदेश-सरकार द्वारा पुरस्कृत । **वर्तमान पता**—द्वारा श्री शिवशंकर मिश्र, २२३ राजेन्द्रनगर, लखनऊ ।

प्रिय मन्दिर की राह न बदले !

इस जग का कण-कण बदले पर,
प्रिय मन्दिर की राह न बदले !
पूजा का उत्साह न बदले !

अङ्कित हुई यहीं पर मेरे,
अन्तर के भावों की भाषा
इसे स्वाति-सा समझ, तृषा को
तुष्टि समझता चातक प्यासा

जीवन का कण-कण बदले पर,
दृग का पुण्य प्रवाह न बदले !
प्रिय मन्दिर की राह न बदले !

यह अर्चन के फूल, सुकोमल
अक्षत, शुचि वन्दन अभिनन्दन
श्वासों की रोली आँसू की-
अञ्जलि, प्राणों का आमन्त्रण

मन्दिर का कण-कण बदले पर,
मेरे प्रभु की चाह न बदले !
प्रिय मन्दिर की राह न बदले !

वहाँ पहुँचने से प्रिय मुझको
प्रतिदिन चलने की तैयारी
और मधुर आशा आएगी
एक दिवस मेरी भी बारी

मधुर मिलन का कण-कण बदले,
किन्तु विरह की आह न बदले!
प्रिय मन्दिर की राह न बदले!

जन्म - स्थान— कानपुर (उत्तर-प्रदेश) **जन्म-तिथि**–सन् १९१४ । **निधन-तिथि**—२४ मई १९५१ (दिल्ली में) । **शिक्षा**—साहित्यरत्न । **विशेष**— 'तेज' दैनिक (उर्दू) के भूतपूर्व सम्पादक और दिल्ली-राज्य के



स्व० विद्यावती वर्मा

वर्तमान जन-सम्पर्क-अधिकारी श्री रामलाल वर्मा की धर्मपत्नी। दिल्ली की प्रमुख सामाजिक कार्यकर्त्री। आप अ० भा० हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति की सदस्या भी रही थीं ।

आज जीवन-प्राण आए !

हो रहा मम उर तरंगित, आज फिर मधु गान गाए !
आज जीवन-प्राण आए !

जुड़ गए जो तार टूटे,
बज उठी फिर मूक वीणा ;
मिट गए सन्ताप हिय के,
साधना कर नित नवीना,

मिल गए दो उर वियोगी, नेह का वरदान पाए !
आज जीवन-प्राण आए !

दूर कर घन कालिमा को,
लालिमा छाई गगन में ;
हो रहा अनुराग अनुभव—
आज कितना शुभ मिलन में,

नृत्य करते मोर भू पर, व्योम में घनश्याम छाए !
आज जीवन-प्राण आए !

टिमटिमाते दीप की लौ,
जगमगाई स्नेह पाकर ;
मुग्ध हो आए शलभ फिर,
प्यार की आशा लगाकर ;

जो विकल थे भाव उर में, आज फिर वे खिलखिलाए !
आज जीवन-प्राण आए !

बन गई अभिसारिका-सी,
खिल उठीं आशा-लताएँ,
पवन बह-बह प्रेम-निधि से,
ले रहा अगणित बलाएँ;

मधुप ने मंजुल स्वरों में, राग फिर नूतन सुनाए !
आज जीवन-प्राण आए !

जन्म-स्थान—आरा(बिहार)।
जन्म-तिथि—सन् १९०३।
शिक्षा—घर पर ही। विशेष—डुमराँव स्टेट के निवासी स्व० मुन्शी लक्ष्मीप्रसाद के द्वितीय पुत्र श्री मदनमुकुन्द से विवाह। आपका परिवार अब भी 'मुन्तज़िम स्टेट' कहलाता है। पटना विश्वविद्यालय के 'बोर्ड आफ स्टडीज़' की सदस्या मनोनीत



विमला देवी 'रमा'

होने वाली बिहार में सर्व प्रथम महिला। आपकी लिखी हुई कई पुस्तकें 'पटना विश्वविद्यालय' में पाठ्य-पुस्तक रह चुकी हैं। काशी-महिला-मण्डल की ओर से 'साहित्य चन्द्रिका' उपाधि से विभूषित। वर्तमान पता—७० नई बस्ती, कीटगंज, इलाहाबाद—३।

प्रिय धीरे से तू आना !

ठहर-ठहर कर करुण वेदना, ठण्डी आहें भरती है,
किसका कौन कहाँ पर बसता, किसको खोजा करती है;

निर्मोही झरने से झरकर विरह नीर नित झरता है,
सबको पीड़ा को वह अहरह, निज अञ्चल में भरता है;

किसको छवि को हिय में रखकर, फूला नहीं समाता है,
किसका स्मरण आज व्याकुल कर पागल हाय बनाता है;

सिवा देखने के वह प्रतिमा, और न मैं कुछ कर पाई,
साथ लिये लज्जा को अपने मैं अबोध घर से आई;

यहाँ देखकर दृश्य निराले मैं अपने को भूल गई,
प्रीति, प्रतीति पुनीत देखकर, मानस-कलियाँ फूल गईं;

दुख है देव तुम्हारा पूजन, सविधि न मैंने कर जाना !
किन्तु विनय, अन्तर में मेरे, प्रिय धीरे से तू आना !

जन्म-स्थान—रायपुर (मध्य-प्रदेश)। **जन्म-तिथि**—३ सित-म्बर १९३६। **शिक्षा**—साहित्य-रत्न, नागपुर विश्वविद्यालय से एम० ए० (हिन्दी)। आगरा विश्व-विद्यालय से 'रामचरित-मानस का लोकतात्विक अध्ययन' विषय पर शोध-कार्य कर रही है। **विशेष**—सन् १९५५ से ५९ तक बड़ौदा और वल्लभ-



विमला राजेन्द्र

नगर के विश्वविद्यालयों में प्राध्यापिका रहीं। सन् १९५९ में बिहार के लोकप्रिय कवि श्री राजेन्द्रकिशोर से विवाह हो जाने के उपरान्त जयप्रकाश महिला कालिज छपरा में प्राध्या-पिका हैं। **रचनाएँ**—'ओ प्रियम्वद' (कविता-संग्रह) प्रेस में है। **स्थायी पता**—हरेन्द्र भवन, सलेमपुर, छपरा (बिहार)।

मौन तोड़ो पिया !

छन्द खोलो पिया, बोलो अर्थ के स्वर में !

अभी तक जो कहा
जैसे अनकहा रह गया,
फूटकर आवेग—
मन में अनबहा रह गया;
द्वार खोलो पिया, आने दो हवा घर में !
छन्द खोलो पिया, बोलो अर्थ के स्वर में !

बहुत पीड़ा-सुख सँजोया
तृपा पीती रही,
आह इस सुख की अधिकता
अब न जाती सही ;
मौन तोड़ो पिया, बहने दो तृषा वर में !
छन्द खोलो पिया, बोलो अर्थ के स्वर में !

हमें कितने पर्व
उठ-उठकर बुलाते रहे,
हम निरर्थक वीतरागी
मन मनाते रहे ;
चलो डूबें पिया, दोनों कामना-सर में !
छन्द खोलो पिया, बोलो अर्थ के स्वर में !

जन्म-स्थान—गोंडा (उत्तर प्रदेश)। जन्म-तिथि—सन् १९३०। शिक्षा—एम० ए० (हिन्दी), साहित्यरत्न, सरस्वती, साहित्य-सुधाकर। विवाह—सन् १९४८ में एक प्रसिद्ध इंजीनियर के साथ,



विमला श्रीवास्तव

किन्तु सन् १९५० में उनकी असामयिक मृत्यु। विशेष—आजकल सेकसरिया गर्ल्स इण्टर कालिज गोंडा में प्राध्यापिका हैं। वर्तमान पता—के० एस० हास्पिटल बनकटवा, गोंडा, उत्तर प्रदेश।

सपना कब साकार हुआ रे !

खिली एक दिन मन-उपवन की कलिका सुरभित आश से,
झूम उठा था कोना-कोना, स्नेह-सुरभि विश्वास से;
मस्त हृदय की हुई सारिका, मधु ऋतु की मनुहार से—
भावो के अलि-कुल उठ झूमे, कवि के मन के भाव से;
किन्तु खुले जब चेतनता-दृग, दूर तुरत मधुमास हुआ रे !
सपना कब साकार हुआ रे !

एक दिवस मन की धरती पर, आई थी बरसात भी,
मिटी जलन क्षण-भर सपना बन, मिटा तपन का घात भी;
कूक उठी गीतो की कोयल, नाचा मन का मोर भी—
मोती बनकर बरस रही थी, नभ से घन की बात भी;
किन्तु खुले बहते नैनों से, पावस का खिलवार मिटा रे !
सपना कब साकार हुआ रे !

एक दिवस मिल गई हृदय को, अचल हिमाचल-सी दृढ़ता,
नभ-सा था विस्तार मिल गया, धरती-जैसी स्थिरता;
अपना दम्भ समेटे, अपना लक्ष्य स्वयं मन गढ़ता—
लगा कि बाधाओं से जीवन, सदा रहेगा लड़ता,
किन्तु चेतना ने झकझोरा, दूर तुरत विश्वास हुआ रे !
सपना कब साकार हुआ रे !

जन्म-स्थान—मुरादाबाद। **जन्म-तिथि**—संवत् १९५९ वि०। **निधन-तिथि**— २९ नवम्बर, १९५५। **शिक्षा**—साहित्य-रत्न, हिन्दी-प्रभाकर। **विशेष**—कानपुर में विवाह के कुछ काल बाद ही वैधव्य-दुःख भोगना पड़ा। तदुपरान्त कुछ काल तक नवाबगंज, कानपुर में सनातन धर्म कन्या विद्यालय में प्रधाना-



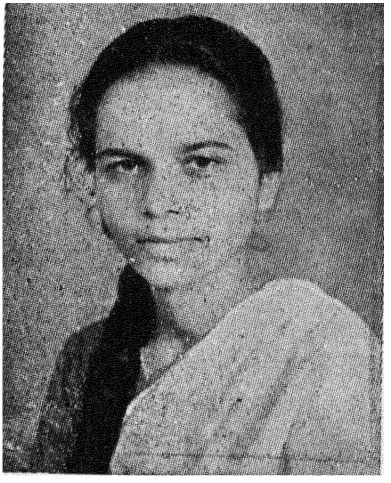
स्व० विष्णुकुमारी श्रीवास्तव 'मंजु'

ध्यापिका रहीं,। **साहित्यिक कार्य**—सं० १९९१ वि० में 'मीरा पदावली' का सम्पादन किया, जो हिन्दी भवन लाहौर से प्रकाशित हुआ। **अप्रकाशित रचनाएँ**—'किंकिणी' (काव्य-संग्रह) और 'दुखिया दुलहिन' (नाटक)।

सूनेपन में तुम आए !

आशा के भग्न भवन में,
प्राणों का दीप जलाए !
उत्सुक हो स्वागत-पथ पर
बैठी थी ध्यान लगाए !
उठती तरंग-माला में,
शरदिन्दु-किरण फँसती थी !
हिलती, मिलती, इठलाती,
पगली सरिता हँसती थी !
थे नील गगन में तारे,
मुक्ता का तार पिरोते !
मेरी सूनी कुटिया में,
आँखों से झरते सोते !
स्नेह-सिन्धु उफनाता,
जर्जर है तरणी मेरी !
क्या कभी लगेगी तट पर,
जब छाई रात अँधेरी !
प्रियतम क्या भूल सकूँगी,
सूनेपन में तुम आए !
सुरभित पराग को लेकर,
कलियों के दल बिखराए !

जन्म-स्थान—लखनऊ । जन्म-तिथि—१९४१। शिक्षा—बदायूं से हाई स्कूल करने के उपरान्त शेष शिक्षा लखनऊ में। १९६० में लखनऊ-विश्वविद्यालय से दर्शन-शास्त्र में एम० ए० किया है। आजकल रिसर्च में व्यस्त हैं। विशेष—



वीणा मिश्र

अपनी माता श्रीमती तारा मिश्र से प्रभावित और प्रेरित। चित्र-कला और शिल्प-कला में भी रुचि। स्वभाव से एकान्त-प्रिय। कान्यकुब्ज कालिज लखनऊ में जीव-विज्ञान के प्राध्यापक श्री विद्याराम मिश्र की सुपुत्री। स्थायी-पता—४ नील रोड, लखनऊ।

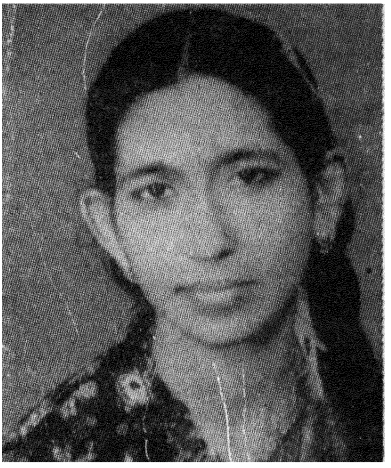
प्रिय तुम्हें कैसे मनाऊँ ?

मौन ही अभिव्यक्ति मेरी
भूल मेरी भावनाएँ,
अचल निस्पन्दित हुई हैं
हृदय की सब कल्पनाएँ;
रुँध गया है कण्ठ, कैसे गीत मै तुमको सुनाऊँ ?
प्रिय तुम्हें कैसे मनाऊँ ?

कुछ अनोखी उलझनें
मन को किये आक्रान्त-सी है,
नयन-जल में डूबते-से
शब्द खो जाते कही है ;
किस तरह कैसे तुम्हें मैं, हृदय की भाषा सुनाऊँ ?
प्रिय तुम्हें कैसे मनाऊँ ?

प्रबल झंझावात लघुतम
दीप की लौ काँप जाती,
सिर पटकती लहर फिर भी
कूल से कुछ कह न पाती ;
प्रिय तुम्हें मैं आज कैसे, बात मन की कह सुनाऊँ ?
प्रिय तुम्हें कैसे मनाऊँ ?

जन्म - स्थान—लखनऊ। **जन्म-तिथि**—१९३८। **शिक्षा**—इण्टर, साहित्य-रत्न। **विशेष**—दैनिक 'हिन्दुस्तान' के सह-सम्पादक श्री शक्ति त्रिवेदी की धर्मपत्नी। ताकुला (नैनीताल) और प्रयाग में क्रमशः प्रसिद्ध



वीणा त्रिवेदी

नाटककार श्री गोविन्दवल्लभ पन्त तथा श्रीमती महादेवी वर्मा के सान्निध्य में रहने का अवसर मिला। **स्थायी पता**—दही वाली गली, भरतपुर (राजस्थान)।

आज भेजती तुमको पाती !

ओ मेरे तन-मन के साथी !
आज भेजती तुमको पाती
तुमको काश भुला मैं पाती
मैं भी अनजाने खो जाती !

दूर गए तुम आस दे गए
धीर-भरी दो साँस दे गए ;
मुसकानों की राह बताकर
मंज़िल का विश्वास दे गए ;
'आऊँगा कल' यह कह करके
मीठी-मीठी प्यास दे गए ;
बीते दिन, औ' बीती रैना
बाट निहारत थक गए नैना ;

सावन आया, सजन न आए
कैसे मुझको रिमझिम भाती ?
ओ मेरे तन-मन के साथी !
ओ मेरे जीवन की बाती !

जब आई गीतों की बेला
रोए मन का मीत अकेला ;
कूल-कूल पर नौका पूछे
किसने देखा वह अलबेला ;

पाँव थके, औ' पन्थ न बीते
मेरी बोझिल पाँख थक गईं ;
भीना आँचल रोक न पाया
जीवन की सब साध मिट गई !

मत भटकाओ अब, आ जाओ;
पीड़ा मुझसे सही न जाती !
ओ मेरे तन-मन के साथी !
आज भेजती तुमको पाती !



वीरा

जन्म-स्थान—इलाहाबाद।
जन्म-तिथि—सन् १९३२।
शिक्षा—गुरुकुलीय। अब एम० ए० करने का विचार है।
विशेष—हिन्दी के ख्यातिप्राप्त कवि और साहित्यकार डॉ० धर्मवीर भारती की बहन। एक उपन्यास 'मौत का फूल' अभी हाल ही में प्रकाशित हुआ है। कहानियाँ, लेख और कविताएँ प्रायः पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। पूरा नाम 'वीरबाला' है, पर लिखती 'वीरा' नाम से ही हैं।
वर्तमान पता—द्वारा डॉ० शतेन्द्रकुमार, २३४५ धर्मपुरा, दिल्ली।

मेरे आँगन श्वेत कबूतर !

उड़ आया ऊँची मुँडेर से, मेरे आँगन श्वेत कबूतर !

गर्मी की हल्की सन्ध्या यों—
झाँक गई मेरे आँगन में,
झरीं केवड़े की कुछ बूँदें
किसी नवोढ़ा के तन-मन में ;

लहर गई सतरंगी चूनर, ज्यों तन्वी के मृदुल गात पर !
उड़ आया ऊँची मुँडेर से, मेरे आँगन श्वेत कबूतर !

मेरे हाथ रची मेंहदी, उर-
बगिया में बौराया फागुन,
मेरे कान बजी बंसी-धुन
घर आया मनचाहा पाहुन ;

एक पुलक प्राणों में, चितवन एक नयन में, मधुर-मधुरतर !
उड़ आया ऊँची मुँडेर से, मेरे आँगन श्वेत कबूतर !

कोई सुन्दर स्वप्न सुनहले—
आँचल में चन्दा बन आया,
कोई भटका गीत उनीदा
मेरी साँसों से टकराया ;

छिटक गई हो जैसे जूही, मन-प्राणों में महक-महक कर !
उड़ आया ऊँची मुँडेर से, मेरे आँगन श्वेत कबूतर !

मेरा चंचल गीत किलकता
घर-आँगन देहरी-दरवाजे,
दीप जलाती साँझ उतरती
प्राणों में शहनाई बाजे ;
अमराई में बिखर गए री, फूल सरीखे सरस-सरस स्वर !
उड़ आया ऊँची मुंडेर से, मेरे आँगन श्वेत कबूतर !

जन्म-स्थान—कानपुर । जन्म-तिथि—अप्रैल सन् १९३६ । शिक्षा—बी० ए० । विशेष—कविता लिखना बहुत बचपन से ही प्रारम्भ कर दिया था। पहले 'श्यामा श्रीवास्तव' नाम से लिखती थीं, बाद में हिन्दी के तरुण कवि और गीतकार श्री जगदीश सलिल से विवाह होने



श्यामा सलिल

के उपरान्त इस नाम से लिखने लगीं । अब इन दोनों का संयुक्त संकलन 'धूल तल रंगोली' नाम से शीघ्र ही प्रकाशित हो रहा है । आकाशवाणी के लखनऊ, इलाहाबाद, भोपाल और इन्दौर केन्द्रों से रचनाएँ प्रसारित होती रहती हैं । वर्तमान पता — दानावली, लश्कर, (ग्वालियर) ।

मैं छन्दों की रानी हूं !

मैं छन्दों की रानी हूँ, गीतों के राजकुमार तुम !

आज पपीहे की बोली में, प्यार-भरा संगीत है
सावन बनी बरसने आई, मेरे मन की प्रीत है,
जब कि बादलों में भी सौ-सौ शहनाई के राग हैं
कैसे कह दूँ हार उसे, जो मेरे मन की जीत है ;
मैं मतवाली बूँद गगन की, बादल राग मल्हार तुम !
मैं छन्दों की रानी हूँ, गीतों के राजकुमार तुम !

तुम आए, आ गई बहारें, पतझर में मधुमास मिला
प्राण, तुम्हारे पथ पर पल-पल, मेरे मन का दीप जला,
प्रहर-प्रहर बन गए प्रतीक्षा के युग, जब तक तुम न मिले
शब्द-शब्द हो गया तुम्हारा गायन, जो भी स्वर निकला;
मैं चिर प्यास प्रगति की, मेरी मंज़िल के आधार तुम !
मैं छन्दों की रानी हूँ, गीतों के राजकुमार तुम !

राह सँवारेगी धरती, चूमेगी हारे-थके कदम
चलते-चलते भार तिमिर का, कभी कहीं तो होगा कम,
सच मानो उस अन्धकार में, तुम जिस दिन मुसका दोगे
मुसका देगा चाँद गगन का, रात लुटा देगी शबनम;
आए हो, तो लौट न जाना, आकर मेरे द्वार तुम !
मैं छन्दों की रानी हूँ, गीतों के राजकुमार तुम !

रोज मनाएँगे दीवाली, मेरे आँगन चाँद-सितारे
उड़े चलेंगे गीत-गगन में, हम आशा के पख पसारे,
सातों स्वर्ग निछावर होंगे छोटी-सी कुटिया पर मेरी
नित्य नीड़ पर मेरे आकर फेरी देंगे साँझ-सकारे ;
तोड़ न देना मेरी आँखों का सपना सुकुमार तुम !
मैं छन्दों की रानी हूँ, गीतों के राजकुमार तुम !



शकुन्त माथुर

जन्म-स्थान— दिल्ली । जन्म-तिथि—मार्च, १९२२ । शिक्षा—दिल्ली में ही हिन्दी-प्रभाकर, साहित्य रत्न, बी. ए. । विशेष—सन् १९४० में हिन्दी के प्रमुख गीतकार और कवि श्री गिरिजाकुमार माथुर से विवाह । बचपन से ही तुकबन्दी करने और गाने लिखने का शौक़ था । कुछ प्रारम्भिक रचनाएँ 'अर्जुन' में प्रकाशित हुई थीं । 'नई कविता' की कवयित्रियों में अग्रणी । रचनाएँ—'चाँदनी चूनर' । स्थायी पता—५२/४१ देशबन्धु गुप्ता रोड, करौल बाग, नई दिल्ली–५ ।

डर लगता है !

मधु से भरे हुए मणि-घट को खाली करते डर लगता है !
जिसमें सारा सिन्धु समाया
मेरे छोटे जीवन-भर का
दूजे बरतन में उँडेलते
एक बूँद भी छिटक न जाए
कहीं बीच में टूट न जाए
छूने भर से जी कंपता है !
मधु से भरे हुए मणि-घट को खाली करते डर लगता है !

इस धरणी की प्यासी आँखें
लगीं इसीकी ओर एकटक
आई जग में सुधा कहाँ से
जल का भी तो काल पड़ा है
प्राण बिना मिट्टी-सा यह तन
भार उठाऊँ इसका कैसे
छोड़ नहीं पाती फिर भी तो
जरा उठाते जी हिलता है !
मधु से भरे हुए मणि-घट को खाली करते डर लगता है !

तन गरमाया, दुख-लपटों से
धीरे-धीरे जला जा रहा
अभी बहुत बाकी जलने को
घट में मेरे पड़ी दरारें
साहस आज दूर भगता है !
मधु से भरे हुए मणि-घट को खाली करते डर लगता है !



जन्म-स्थान—ग्राम बिलहरी (जबलपुर)। **जन्म-तिथि**—दीपावली, सन् १९११। **शिक्षा**—बचपन में ही पिता का बिछोह हो जाने के कारण अधिकांश शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई। **विशेष**—सन् १९३३ में हिन्दी के मधुर गीतकार श्री नर्मदाप्रसाद खरे के साथ विवाह हुआ। अभी तक कोई कविता-संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ; किन्तु

शकुन्तला खरे

'हिन्दी काव्य की कोकिलाएँ' तथा 'हिन्दी काव्य-गगन की तारिकाएँ' नामक पुस्तकों में विस्तार से चर्चा हुई है। श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी ने अपनी पुस्तक 'कवि और काव्य' में भी आपके कृतित्व को सराहा है। **स्थायी पता**—द्वारा श्री नर्मदाप्रसाद खरे, लोक चेतना प्रकाशन, जबलपुर (म० प्र०)।

मैं तो उन पर बलिहार गई !

वेणी में तारक-फूल गूँथ,
निशि ने मेरा शृङ्गार किया ;
राका-शशि ने बन शीश-फूल,
छवि का मोहक संसार दिया ;
ऊषा उनकी पद-लाली से, हँस मेरी माँग सँवार गई !
मैं तो उन पर बलिहार गई !

बिन माँगे प्यार-दुलार दिया,
सम्मान और सत्कार दिया ;
रह गई मुक्ति करबद्ध खड़ी,
मैंने बन्धन स्वीकार किया ;
वे हार-हारकर जीत गए, मैं जीत-जीतकर हार गई !
मैं तो उन पर बलिहार गई !

उनकी छाया में पली सदा,
उनके पीछे ही चली सदा ;
उनके ही जीवन-मन्दिर में,
मैं मोम-दीप-सी जली सदा ;
मैं उनको पा जग भूल गई, अपने को स्वयं बिसार गई !
मैं तो उन पर बलिहार गई !

कब चाहा प्यार-दुलार मिले,
फूलों का मृदु गल-हार मिले ;
पूजा-अर्चन ही ध्येय रहा,
बस, पूजा का अधिकार मिले ,
उनके श्री चरणों पर हँसकर, मैं तन-मन सब-कुछ वार गई !
मैं तो उन पर बलिहार गई !

जन्म-स्थान— काशी ।
जन्म-तिथि—१ जुलाई १९२९
शिक्षा—हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी से एम० ए० ।
विशेष—हिन्दी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार, तथा कहानी-लेखक श्री कृष्णचन्द्र शर्मा 'भिक्खु' की पत्नी । आजकल आप लेडी श्रीराम कालिज



शकुन्तला शर्मा

फॉर विमेन नई दिल्ली में हिन्दी-प्राध्यापिका हैं । **प्रकाशित रचनाएँ**— 'अंजलि' (कविता-संग्रह); 'चाँद खो गया' (कहानी-संग्रह); 'आधुनिक काव्य में सौन्दर्य-भावना' (समीक्षा) । **वर्तमान पता**—लेडी श्रीराम कालिज फॉर विमेन, लाजपत-नगर, नई दिल्ली ।

कौन वह पुकार गई ?

अँधियारे अँगना में दिवरा-सा बार गई !
कौन वह पुकार गई ?

सूख दो तिनकों में गुम-सुम-सा बैठा है
पाँखों में ढाँपे मुख जीवन से रूठा है
नीड़ विटप ठूँठा है
ऐसे मन-सुगना को चुगना-सा डार गई !
कौन वह पुकार गई ?

पेड़ों की फुनगी पर सिहरन अँधियारे की
टहनी पर सुगबुग है पंछी बनजारे की
पंथी मनहारे की
सबकी मनचीती भिनसार को गुहार गई !
कौन वह पुकार गई ?

आँखों की शाखों पर आँसू का झूला है
होंठों के दोले पर प्रान बहुत झूला है
पेंगों में झूला है
साँसों की छिटकी लट प्यार से सँवार गई !
कौन वह पुकार गई !

बेला के गजरे ले सागर भा दौड़ा था
तट की चट्टानों ने फूल-फूल तोड़ा था
गति ने मुख मोड़ा था
रेत की गलबाँही दे चुप-चुप दुलार गई !
कौन वह पुकार गई !

सपनों के मड़वे पर भावों के चारे पर
आशा के बिरवे पर, प्यार के टिकोरे पर
बौर के निहोरे पर
रूप, रस औ' गन्ध के फुहारे फुहार गई !
कौन वह पुकार गई ?

रह-रहकर गिरते हैं जाले उदासी के
दुख से धुँधियाए-से भाप की उसासी से
काले - से, बासी - से
अन्तस् के मटियाले बासन खंगार गई !
कौन वह पुकार गई ?

ऐसी फुलचुग्गी को पाना - भर जीवन है
बैठे जिस डाली पर उसमें ही कम्पन है
गीतों का नन्दन है
मुट्ठी में बाँधो तो पारे-सी पार गई !
अँधियारे अँगना में दिवरा-सा बार गई !
कौन वह पुकार गई ?



शकुन्तलाकुमारी 'रेणु'

जन्म-स्थान— झालरा-पाटन (राजस्थान)। **जन्म-तिथि**—२४ जून, १९२१। **शिक्षा**—साहित्यरत्न, एम० ए० (राजस्थान-विश्वविद्यालय से)। **प्रकाशित रचनाएँ** — 'उन्मुक्ति' (गद्य-काव्य), 'सती सीता और आश्रम ज्योति' (काव्य-रेखाएँ)। **विशेष**—द्विवेदी-काल के प्रमुख साहित्यिक स्व० गिरिधर शर्मा नवरत्न की सुपुत्री। अपने अध्ययनशील पिता की छत्र-छाया में आपने संस्कृत-साहित्य का भी पारायण किया है। मातृभाषा गुजराती होने के कारण गुजराती में भी लिखती हैं। **वर्तमान पता**— 'नवरत्न सरस्वती भवन' झालरा पाटन, (राजस्थान)।

इतनी कृपा कर दो !

पा तुम्हारा स्नेह अविचल
जायँ धुल सब पाप-पकिल
विमल अपना ध्यान दे, भव-ताप सब हर लो !
इतनी कृपा कर दो !

दो मुझे पद-रेणु पावन
हो उठे यह धन्य जीवन
पद-नमित मम विनत सिर पर, निज चरण धर दो !
इतनी कृपा कर दो !

पा तुम्हें हो प्राण निर्भय
चरण में हो चेतना लय
भव-थकित मेरे सुतनु को, निज शरण में लो !
इतनी कृपा कर दो !



शकुन्तला श्रीवास्तव

जन्म-स्थान — जबलपुर
जन्म-तिथि—सन् १९१४।
विशेष—प्रख्यात मज़दूर-नेता स्व० हरिहरनाथ शास्त्री की धर्म-पत्नी। स्व० सुभद्राकुमारी चौहान और अपनी बड़ी बहन राजकुमारी श्रीवास्तव के द्वारा साहित्यिक और राजनीतिक भावनाओं का प्रस्फुटन। १० वर्ष की आयु में 'सावित्री सत्यवान' नामक छोटा सा काव्य लिखा। **प्रकाशित पुस्तकें**—'रज कण' नामक कविता-संग्रह और 'बालसुधा' बालोपयोगी कविताएँ। अभी तक लगभग ३० कहानियाँ, ३५ लेख और लगभग २०० कविताएँ लिखी हैं। 'माधुरी', 'सुधा', 'चाँद', 'प्रेमा', 'सरस्वती', 'समाज', 'अजन्ता' और 'आजकल' आदि पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं। **स्थायी पता**—११।३६४ ग्वाल टोली, कानपुर।

कितना लम्बा पथ जीवन का !

चलते-चलते पैर थक गए, पर न रुका क्रम इसका !
कितना लम्बा पथ जीवन का !

वह बढ़ने को कहता प्रतिपल,
किन्तु नष्ट हो चुका सकल बल,
अश्रु नयन से झरते अविरल,
अग्नि-परीक्षा का है आदी करता कष्ट सहन का।
कितना लम्बा पथ जीवन का !

क्या जीवन-भर होगा चलना,
उफ विधि की यह कैसी छलना,
इच्छा - रहित सर्वदा जलना,
तारे क्षीण ज्योति से दिखलाते हैं मार्ग विपिन का।
कितना लम्बा पथ जीवन का !

किन्तु घटा नभ में घिर आई,
कुछ भी देता नहीं दिखाई,
चारों ओर अँधेरी छाई,
प्रश्न उपस्थित है सम्मुख अब, जीवन और मरण का !
कितना लम्बा पथ जीवन का !

प्राण विकल रह-रह घबराते,
हिंसक जन्तु उधर मुँह बाते,
कटक पग में चुभ-चुभ जाते,

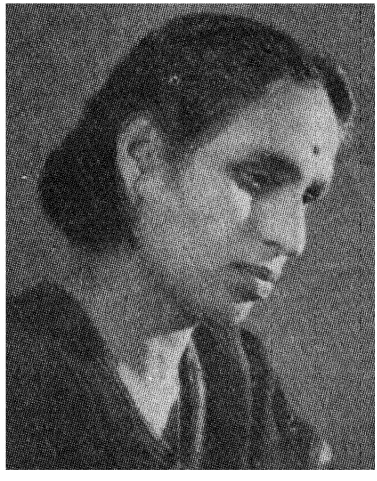
मन आहत है छिन्न-भिन्न है, अंग थकित इस तन का !
कितना लम्बा पथ जीवन का !

लौट पड़ूं, पर पथ है बाकी,
संगी-सखा न, हूँ एकाकी,
है निशीथिनी हाय अमा की,
कहीं नहीं अवलम्ब, दिखाई पड़ता मुझको तिनका !
कितना लम्बा पथ जीवन का !

किस मतलब से मानव आया ?
क्यों इस पथ पर कदम बढ़ाया ?
अपना साहस सकल गँवाया !
आवाहन किस भाँति करूँ, लेकर अधीर मन उनका !
कितना लम्बा पथ जीवन का !

प्राची में जब आए दिनकर,
उठ होऊँ चलने में तत्पर,
रुक न कहो भी जाऊँ थककर,
पहुँच केन्द्र तक सदुपयोग कर डालूँ अन्तिम क्षण का !
कितना लम्बा पथ जीवन का !

शकुन्तला सिरोठिया



जन्म-स्थान—कोटा (राजस्थान)। **जन्म-तिथि**—१५ दिसम्बर, १९१५। **शिक्षा**—एम० ए० (हिन्दी) आगराविश्वविद्यालय से। पेंटिंगडिप्लोमा (प्रयाग विश्वविद्यालय से) **प्रकाशित रचनाएँ**—'दीप', 'सुधि के स्वर', 'चाँद इतना हँसा' (कविता-संग्रह)। इनके अतिरिक्त लगभग ३० बालोपयोगी तथा प्रौढ़ोपयोगी पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। **विशेष**—सन् १९३८ से अध्यापन-कार्य में निरत हैं। पिछले ९ वर्ष से राजकीय शिशु प्रशिक्षण महाविद्यालय इलाहाबाद में कला की अध्यापिका है। **वर्तमान पता**—६८ बी० बाई का बाग, इलाहाबाद।

मुझे प्राण, तब तुम बहुत याद आते !

घनी जब अँधेरी, गगन मेघ छाते
मुझे प्राण, तब तुम बहुत याद आते !

उदासी लिये चाँदनी लौट जाती,
घिरी मेघ से रात भी छटपटाती,
दुखी हो पपीहा, पिया को बुलाते !
मुझे प्राण, तब तुम बहुत याद आते !

सिहरती उमंगों-भरी वायु आती,
किसी की मधुर सुधि-भरी गुनगुनाती,
जहाँ धूलि-कण फूल बन मुसकराते !
मुझे प्राण, तब तुम बहुत याद आते !

घुमड़ती घटाएँ, अँधेरा डराता,
कहीं का पथिक पन्थ भी भूल जाता,
किसी के नयन अश्रु - बरसात लाते !
मुझे प्राण, तब तुम बहुत याद आते !

रजत चूनरी ऊर्मियों की पहनकर,
नदी चल पड़ी विघ्न सारे सहन कर
उमड़कर किनारे उसे अंक लाते !
मुझे प्राण, तब तुम बहुत याद आते !

जन्म-स्थान—झंग (पश्चिमी पाकिस्तान)। **जन्म-तिथि**—१५ अगस्त, १९४१। **शिक्षा**—मैट्रिक, हिन्दी प्रभाकर। **विशेष**—कविताएँ, गीत लिखने



शान्ता त्यागी

और गाने में विशेष अभिरुचि। पुस्तकें खरीदने और पढ़ने का भी शौक है। **स्थायी पता**—२९।८ शक्ति नगर, दिल्ली-६।

करो स्वीकार मेरी आरती !

देवता ! अब तो करो स्वीकार मेरी आरती,
अर्चना के दीप की लौ काँपकर बुझने लगी !

रात-भर जगकर सितारे सो गए
साथ रह सपने विदा अब हो गए,
बन्द कलरों की पंखुरियाँ खुल गईं
मुक्त भौरे कोहरे में खो गए;

एक मैं ही हूँ तिमिर की बाँह में अब तक घिरी,
दर्द में डूबी हुई, खोई हुई-सी अधजगी !
देवता ! अब तो करो स्वीकार मेरी आरती,
अर्चना के दीप की लौ काँपकर बुझने लगी !

वायु ने सुन ली कहानी फूल की
धार ने सुन ली कहानी कूल की,
पर कथा अपनी कही पाषाण से-
हाय मैंने यह अनोखी भूल की ;

मौन सब मुखरित हुए, पर देव तुम बोले नहीं,
वन्दना के फूल की मुरझा गई है ताज़गी !
देवता ! अब तो करो स्वीकार मेरी आरती,
अर्चना के दीप की लौ काँपकर बुझने लगी !

मौन तोडो इस तरह मत चुप रहो
और मैं कितना सहूँ, यह तो कहो,
याचना मेरी मरुस्थल हो गई-
चेतना की धार बनकर तुम बहो;

तुम न पिघलो तो अधूरा जन्म लेकर क्या करूँ ?
कर रही अर्पित तुम्हारे द्वार पर लो ज़िन्दगी !
देवता ! अब तो करो स्वीकार मेरी आरती,
अर्चना के दीप की लौ काँपकर बुझने लगी !

जन्म-स्थान—भागलपुर। **जन्म-तिथि**—१४ नवम्बर सन् १९२६। **शिक्षा**—एम० ए० (मनोविज्ञान)। **विशेष**—सन् १९४३ में डॉ० नर्मदेश्वर-प्रसाद से विवाह। **रचनाएँ**—



शान्ता सिनहा

'समानान्तर सुनें' (कविता-संग्रह) प्रकाशित। 'सिम्फनी' (कहानी-संग्रह) प्रेस में। **वर्तमान पता**—द्वारा डॉ० नर्मदेश्वरप्रसाद, रोड नं० ६ बी०, राजेन्द्रनगर, पटना।

द्वार एक, अनेक मैं !

नयन पवन डोले, मन के बाजूबन्द खोले
ओ बन्धु रे !
इन्द्र-धनु छाँव में, नैया को बाँध दे !

चाँद झनझना उठा
उन्मन है गगन-गगन
गुनगुना रही नदी
दीप जले नयन-नयन

जय-जयवन्ती स्वप्न-तले, अंग अल्पना आलाप ले
इन्द्र-धनु छाँव मे, नैया को बाँध दे !

ऊँघता क्षितिज थाम
स्वप्न आँक रही पहाड़ियाँ
बावरा अहेरी चाँद
टेर रहा परछाइयाँ

यमुना निकुञ्ज-छाँव, भटका हिरण बाँध दे
इन्द्र-धनु छाँव में, नैया को बाँध दे !

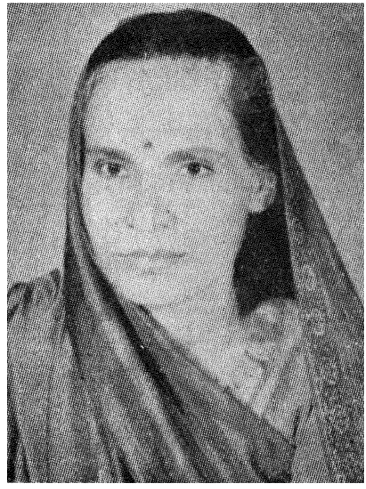
तलहटी में सूर्य लिये
डोल रही आकाश-वन
कब आवेगा अतिथि प्रिय
अरुण होगा श्याम वदन ?

उन्मत्त रक्त-सिन्धु-पार, मुक्ति-द्वार खोल दे !
इन्द्र-धनु छाँव में, नैया को बाँध दे !

द्वार एक, अनेक मैं
नैन एक, दृष्टि अनेक
युग-युग की प्यास लिये
नीद एक, स्वप्न अनेक

कर दे मुझे एक स्वर, अँग-अँग तार बाँध दे
इन्द्र-धनु छाँव में, नैया को बाँध दे !

शान्ता सिनहा



जन्म-स्थान—ग्राम रामपुर (जौनपुर), उत्तर प्रदेश। **जन्म-तिथि**—१७ जुलाई १९२२। **शिक्षा**—घर पर ही। उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकीं। **विशेष**—बचपन से ही घर में शिक्षा का वातावरण मौजूद था। उसका लाभ इन्हें भी मिला। ब्रजभाषा, अवधी, और खड़ी बोली में अनेक कविताएँ लिखी हैं। 'राष्ट्र पिता महात्मा गांधी' पर बहुत-से गीत लिखे हैं। जिन्हें शीघ्र ही पुस्तकाकार प्रकाशित किया जायगा। **वर्तमान पता**—द्वारा श्री ब्रजभान सिनहा, पर्ल्स एण्ड बीड्स (इण्डिया), जी० टी० रोड, अलीगढ़।

भला मुझसे दूर कब थे ?

याचना भी स्वयं ही मैं, स्वयं ही वरदान हूँ मैं !

भक्ति भी हूँ, भावना भी
सिद्धि भी हूँ, साधना भी
अर्चना भी, वन्दना भी, स्वयं ही भगवान् हूँ मैं !

वह अटल विश्वास हूँ मैं
और प्रणयोच्छ्वास हूँ मैं
देवता हूँ, किन्तु मैं ही, स्वय ही पाषाण हूँ मैं !

पुष्प हूँ उपहार की मैं
भाव हूँ मनुहार की मैं
वेदना हूँ चिर, निरन्तर व्यथित उर का गान हूँ मैं !

भूलती हूँ आप ही में
खोजती हूँ आप ही में
और पाकर आप ही में, एक बेसुध प्राण हूँ मैं !

सदय थे, तुम क्रूर कब थे ?
भला मुझसे दूर कब थे ?
देव दो से हम न दूषित, स्वयं में रतिवान हूँ मैं !
याचना भी स्वयं ही मैं, स्वयं ही वरदान हूँ मैं !

जन्म-स्थान— बरेली (उत्तर-प्रदेश)। **जन्म-तिथि**—२३ जुलाई सन् १९२०। **शिक्षा**—अपने पति श्री विश्वम्भरनाथ अग्रवाल एम० ए०, साहित्य-विशारद के सहयोग से गृहस्थ-जीवन में भी साहित्य-रत्न तथा एम०ए० की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। **साहित्यिक कार्य**—आपके लेख आदि भी 'शिक्षा',



शान्ति अग्रवाल

'हिन्दुस्तान' और दैनिक 'आज' आदि पत्रों में छपते रहे हैं। 'बाल सखा' तथा 'खिलौना' में भी बाल कविताएँ लिखती रहीं हैं। **प्रकाशित पुस्तकें**—'स्वतन्त्रता-संग्राम', 'बालवीणा' (बालोपयोगी कविताओं के संग्रह); 'गौरव पथ' (लेखों का संग्रह)। **स्थायी पता**—३५ ई० ५ सिविल लाइन्स, बरेली।

डगर मिल गई !

तुम मिले, प्यार की साधना खो गई,
तुम गए, भावना को डगर मिल गई !

भावना के विहग आज उन्मुक्त हो
कल्पना के परों को पसारे हुए,
चल पड़े नील नभ में चहकते हुए
उड़ धारा से गगन के किनारे छुए;
कामना कौन-सी शेष, खोई हुई–
चेतना यह युगों की अगर मिल गई !
तुम मिले, प्यार की साधना खो गई,
तुम गए, भावना को डगर मिल गई !

सिन्धु से भी विशद, व्योम से भी विमल
नीर से भी तरल, आज मेरा हृदय,
वायु से भी सजग, कुन्द से भी सुभग
इन्दु से भी धवल आज मेरा हृदय ;
प्यार खोया किसी एक का, प्रेरणा–
विश्व के प्रेम की तो मगर मिल गई !
तुम मिले, प्यार की साधना खो गई,
तुम गए, भावना को डगर मिल गई !

प्राण ने एक ही साँस में पी लिया
विश्व के प्रेम से भर हृदय का चषक,

खो गई चेतना ही अहम् की, चढ़ा—
रंग जब, मिट गई युग-युगों की कसक;
आ अधर तक रा नीर का पात्र था,
पर अचानक सुधा की गगर मिल गई !
तुम मिले, प्यार की साधना खो गई,
तुम गए, भावना को डगर मिल गई !

हट गया आवरण मोह-माया-जनित
ब्रह्म से जीव की भिन्नता मिट गई,
यों युगों से भटकते हुए जीव का—
लक्ष्य पूरा हुआ, खिन्नता मिट गई ;
लोक-परलोक की कामना लुट गई,
ज्योति जगमग अलौकिक अमर मिल गई ।
तुम मिले, प्यार की साधना खो गई,
तुम गए, भावना को डगर मिल गई !



शान्ति मेहरोत्रा

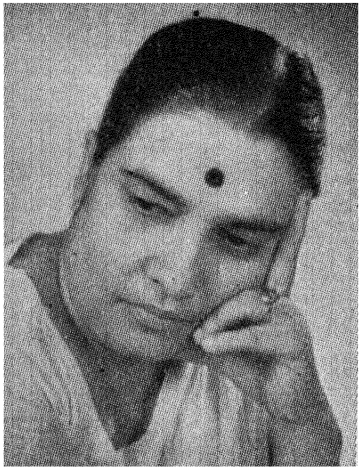
जन्म-स्थान—नेनवाँ (राजस्थान)। **जन्म-तिथि**—सन् १९२६। **शिक्षा**—एम० ए० (अर्थशास्त्र) लखनऊ विश्वविद्यालय से। **विशेष**—हिन्दी की सशक्त गीतकर्त्री और लेखिका। आपकी 'रेखा' नामक काव्य-कृति पर हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन द्वारा सेकसरिया-पुरस्कार दिया जा चुका है। **प्रकाशित रचनाएँ**—'निष्कृति', 'मरीचिका', 'रेखा', 'विदा', 'पग ध्वनि', 'पंच प्रदीप' तथा 'चाणक्य'। **प्रेस में**—'सुरख़ाब के पर' (हास्य-व्यंग्यपूर्ण रचनाएँ), 'खुला आकाश', 'मेरे पंख', (कहानियाँ, हास्य-व्यंग्य, कविताएँ, लघु कथाएँ)। इधर कहानियाँ और हास्य-व्यंग्यपूर्ण रचनाएँ ही विशेष रूप से लिखी हैं। **वर्तमान पता**—आकाशवाणी केन्द्र, इलाहाबाद।

आराध्य न अब साकार बनो !

प्रतिमा में और पुजारी में, थोड़ा अन्तर अनिवार्य सदा
नीरव नयनों में, अधरों में, थोड़ा अन्तर अनिवार्य सदा
कुछ अन्तर तो होता ही है, अभिव्यक्ति और अनुभव में भी-
फिर सत्य कल्पना में भी तो थोड़ा अन्तर अनिवार्य सदा
मैं सीमित हूँ, तुमको असीम रखने में हो अभिमान मुझे,
ससार बसा सकने वाले, बस स्वयं न तुम ससार बनो !
आराध्य न अब साकार बनो !

हो कभी पूर्णता पाई है, दुख-सुखमय जग में मूर्तिमान
मिट्टी की प्रतिमा मानव का मन्दिर कब कर पाई महान्
भावों के स्वप्निल रगों से, मैं रूप सदा भर लिया करूँ
तुमको जो-जो करना चाहूँ, बस पूज-पूज कर लिया करूँ
अनुमान सत्य से होता है वैसे भी ज्यादा आकर्षक
मैं तुम्हें सजाऊँ, बदले में तुम मेरे ही शृङ्गार बनो !
आराध्य न अब साकार बनो !

वासन्ती कोयल कहती है—'मुझको मेरा मधुमय बन्धन'
मधुवन की कलियाँ कहती हैं—'मुझको मेरा यौवन बन्धन'
यौवन कहता—'मैं शैशव के कोमल भावों से मुक्त नही'
भावों ने आकर कहा, 'हमें कविता का आमन्त्रण बन्धन'
आमन्त्रण की दृढ़ कड़ियों से पद-कमल तुम्हारे कब स्वतन्त्र
फिर मेरी श्वासों के बन्दी, मत मेरे कारागार बनो !
आराध्य न अब साकार बनो !



जन्म-स्थान—वाराणसी । **जन्म-तिथि**—१० अप्रैल १९२३। **शिक्षा**—बी० ए० । डिप-इन-एड० करने पर लन्दन गई और लन्दन-विश्वविद्यालय से 'एसोसिएटशिप इन एजुकेशन' करके सन् १९५६ में भारत लौटीं । **कार्य**—आजकल बिहार-सरकार के शिक्षा-विभाग में पटना में प्रथम श्रेणी के जिला शिक्षा-पदाधिकारी के पद पर कार्य कर रही हैं **रचनाएँ**—लगभग

शान्ति रमण

५० कहानियाँ प्रकाशित । बाल-मनोविज्ञान पर इनके दर्जनों लेख प्रकाशित हो चुके हैं । 'प्रकाश की रेखा'(कहानी-संग्रह), 'बच्चे और अनुशासन', तथा 'बच्चों निर्माण' आदि प्रकाशित पुस्तकें । **विशेष**—स्व० श्री देवकीनन्दन खत्री की पौत्री और बिहार के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री रमण की सहधर्मिणी । **स्थायी पता**—पोस्ट गुलज़ार-बाग, पटना—७ ।

मुसकुराने को न कहना !

वेदनामय विश्व के सन्ताप, प्रिय चुपचाप सहना !
मुसकुराने को न कहना !

फूल काँटों में खिलेगे,
और मस्ती में हँसेगे,
एक दिन झड़ डालियों से–
धूल में आकर मिलेगे;

देखना उस रोज कोमल पत्तियों का विकल होना !
मुसकुराने को न कहना !

रात को अमराइयों में,
कोयलों की कूक सुनकर,
गुदगुदी अनुभव करोगे,
दर्द थोड़ा साथ लेकर ;

हँस न देना केतकी-सा, कुमुदिनी-सा रो न देना !
एक क्षण के विश्व में, सन्ताप प्रिय चुपचाप सहना !
मुसकुराने को न कहना !



शान्ति सिंहल

जन्म - स्थान — दिल्ली। **जन्म-तिथि**—२ मार्च सन् १९२२। **शिक्षा**—इन्द्रप्रस्थ हाई स्कूल दिल्ली और क्रिश्चियन कालेज इन्दौर में। बाद में 'हिन्दी-प्रभाकर' किया। **विशेष**—१३ वर्ष की अवस्था से ही, जब आप हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन प्रयाग की 'प्रथमा' परीक्षा की तैयारी में तत्पर थीं, काव्या-राधना प्रारम्भ की। **प्रकाशित रचनाएँ** — 'बिखरे प्रसून' (१९३७), 'उर्म्मिमाला' (१९३९), तथा 'अलका' (१९५०)। **स्थायी पता**—२४ दरियागंज, असारी रोड, दिल्ली

जब तुम्हीं अनजान बनकर रह गए !

जब तुम्ही अनजान बनकर रह गए,
विश्व की पहचान लेकर क्या करूँ ?

जब न तुमसे स्नेह के दो कण मिले,
व्यथा कहने के लिए दो क्षण मिले ;
जब तुम्हीने की सतत अवहेलना,
विश्व का सम्मान लेकर क्या करूँ ?
जब तुम्ही अनजान बनकर रह गए,
विश्व की पहचान लेकर क्या करूँ ?

एक आशा, एक ही अरमान था,
बस तुम्ही पर हृदय को अभिमान था;
पर न जब तुम ही हमें अपना सके,
व्यर्थ यह अभिमान लेकर क्या करूँ ?
जब तुम्ही अनजान बनकर रह गए,
विश्व की पहचान लेकर क्या करूँ ?

दूँ तुम्हें कैसे जलन अपनी दिखा
दूँ तुम्हे अपनी लगन कैसे दिखा,
जो स्वरित होकर न कुछ भी कह सके,
मैं भला वे गान लेकर क्या करूँ ?
जब तुम्ही अनजान बनकर रह गए,
विश्व की पहचान लेकर क्या करूँ ?

शलभ का था प्रश्न दीपक से यही,
मीन ने यह बात जीवन से कही;
हों विलग तुमसे न जो फिर भी मिटें,
मैं भला वे प्राण लेकर क्या करूँ ?
जब तुम्हीं अनजान बनकर रह गए,
विश्व की पहचान लेकर क्या करूँ ?

अर्चना निष्प्राण की कब तक करूँ,
कामना वरदान की कब तक करूँ;
जो बना युग-युग पहेली-सा रहे,
मौन वह भगवान् लेकर क्या करूँ ?
जब तुम्हीं अनजान बनकर रह गए,
विश्व की पहचान लेकर क्या करूँ ?

जन्म-स्थान—उत्तरी बिहार के सहर्षा जिले का कासिमपुर ग्राम। **जन्म-तिथि**—सितम्बर १९४२। **शिक्षा**—सम्प्रति बी० ए० (ऑनर्स) की छात्रा। **रचनाएँ**—'नव पुष्प', 'मधुरिमा', 'चन्दन', 'शेफालिका', 'जल जात' (कविता-संग्रह); 'रागिनी' (कहानी-संग्रह); 'नीलिमा', 'हार', (उपन्यास); 'पराग'



शान्तिकुमारी सुमन

(नाटक-संग्रह) तथा 'नीरजा' (मैथिली काव्य-संग्रह); सभी रचनाएँ अप्रकाशित। **विशेष**—'आर्यावर्त', 'बिहार', 'समाज कल्याण', 'युग वाणी', 'रश्मि', 'सनीचर', 'राका' तथा 'दृष्टि' आदि पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित होती रहती है। **वर्तमान पता**—श्री जागेश्वर-लालदास रेलवे मेल सर्विस, मुजफ्फरपुर (बिहार)।

पुण्यतम क्षण है।

मानिनी, सब-कुछ निछावर चरण पर तेरे—
वरण कर पुण्यतम क्षण है!

खोल दे निज नयन-पाटल
युग-युगों से स्निग्ध उर-तल,
वेदना बन जाय यमुना—
एक सुधि की साँस से गल;
रागिनी, सुर-लय निछावर भजन पर तेरे—
ध्वनन कर पुण्यतम क्षण है!
वरण कर पुण्यतम क्षण है!

आज बन्दी-सा बना है
धड़कनों की आह का स्वर,
अधर का संगीत खोया—
कहरती-सी है लहर;
मादिनी, मन-प्राण नूपुर-झनन पर तेरे—
किरण कर पुण्यतम क्षण है!
वरण कर पुण्यतम क्षण है!

आज स्वप्निल-सा पुरातन
एक अभिनव मधुर नूतन,

विगत-आगत सब लिये—
थिरकन-भरे तेरे सुकंकण ;
रंगिनी, मृदु नेह अर्पित मिलन पर तेरे—
सृजन कर पुण्यतम क्षण है !
मानिनी, सब-कुछ निछावर चरण पर तेरे—
वरण कर पुण्यतम क्षण है !



शारदा गुप्ता

जन्म स्थान— अजमेर (राजस्थान)। **जन्म-तिथि**—१६ नवम्बर सन् १६३५। एम० ए० (हिन्दी)। **विशेष**— अपने पिता श्री चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय से अधिक प्रभावित। कविता के क्षेत्र में लाने का श्रेय भी इनके पारिवारिक साहित्यिक वातावरण को है। अभी तक प्रायः प्रेम-गीत ही लिखे हैं, और वे भी विशेषतः विरह-प्रधान ही। **वर्तमान पता**—कला भवन, कबीर मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राजस्थान)।

द्वार तुम मेरे आओगे !

जब से सुना, द्वार मेरे आओगे,
नई-नई नित बन्दनवार बँधाती हूँ !

प्राण तुम्हारे स्वागत में द्वार, देहरी,
अंगना देखो, सारा सदन बुहारा है;
कोमल हैं प्रिय चरण तुम्हारे इसीलिए,
पंखुरियों से सारा पन्थ सँवारा है ;
जब से सुना, सहन तक तुम आ जाओगे,
चौक पूरती, मंगल-कलश भराती हूँ।
जब से सुना, द्वार तुम मेरे आओगे,
नई-नई नित बन्दनवार बँधाती हूँ !

वीराना-सा जीवन समझा था मैंने,
सोचा, कोई भी तो मेरा मीत नहीं है ;
अनजाने अधरों पर सहसा आ जाए,
ऐसा कोई भी तो मेरा गीत नहीं है ;
जब से सुना, गीत तुम मेरे गाओगे,
नये-नये नित छन्द बनाकर लाती हूँ !
जब से सुना, द्वार तुम मेरे आओगे,
नई-नई नित बन्दनवार बँधाती हूँ

इन नयनों में नये सपन का मेला है,
सतरंगी ये चाह हृदय में मुसकाती ;

कैसे काटूँ पंख कल्पना के सुन्दर,
मन की सोन-चिरैया देखो अकुलाती ;
जब से सुना, प्राण पर मेरे छाओगे;
नये-नये नित मादक सपन सजाती हूँ !
जब से सुना, द्वार तुम मेरे आओगे,
नई-नई नित बन्दनवार बँधाती हूँ !

चौराहे पर खड़ी हुई हूँ सोच यही,
पता नही तुम किस पथ पर होकर आओ;
मैं दीवानी बनी तुम्हारी, जग कहता,
साँवरिया इस पागलपन को दुलराओ ;
जब से सुना, अजाना पथ अपनाओगे,
डगर-डगर पर दीपक रोज जलाती हूँ !
जब से सुना, द्वार पर मेरे आओगे,
नई-नई नित बन्दनवार बँधाती हूँ !

जन्म - स्थान — बिहार शरीफ (पटना)। **जन्म-तिथि**— १७ सितम्बर १९१९ । **शिक्षा**—बी० ए० (पंजाब से)। एम० ए० पटना-विश्वविद्यालय से १९४३ में। **प्रकाशित रचनाएँ**—'भीखू की टोली' कहानी-संग्रह(१९४९); 'जीवन का सत्य' (दूसरा कहानी-संग्रह अभी अप्रकाशित)। 'स्मृति दीप'



शारदा वेदालंकार

कविता-संग्रह भी अप्रकाशित। १९५५ में पटना-विश्वविद्यालय से 'हिन्दी साहित्य का विकास' (सन् १८०० से १८५६) शीर्षक शोध-प्रबन्ध पर पी-एच० डी० उपाधि प्राप्त। यह प्रबन्ध शीघ्र ही बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् से प्रकाशित होगा। **स्थायी पता**— प्रधानाचार्या सुन्दरवती महिला महाविद्यालय, भागलपुर (बिहार)।

तुम मुझको पहचान न पाए !

संचय कर सरसिज पराग को
पखुड़ियों के अरुण राग को
अलि अब तक भी जान न पाए ;
तुम मुझको पहचान न पाए !

दीप-शिखा से जग आलोकित
स्नेह-तैल से मन अनुप्राणित
दीप, प्रभा को देख न पाए ;
तुम मुझको पहचान न पाए !

दिवा-रात्रि का अद्भुत संयम
हो पाया कब उनका संगम
रहते अपनी व्यथा छिपाए ;
तुम मुझको पहचान न पाए !

विश्वासों पर मौन समर्पण
आस लगाए जीवन के क्षण
मेरे मन की थाह न पाए ;
तुम मुझको पहचान न पाए !



शीला

जन्म - स्थान— बिजौली, जिला अलीगढ़। **जन्म-तिथि**— १ सितम्बर १९३६। **शिक्षा**— मैट्रिक, यू०पी० बोर्ड (१९५३), विद्याविनोदिनी, प्रयाग महिला विद्यापीठ (१९५१), एच०टी० सी०, राजकीय दीक्षा विद्यालय आगरा से (१९५३-५४)। **विशेष**— सन् १९४८ से लिखने में रुचि। 'नवभारत', 'हिन्दुस्तान' और 'सैनिक' आदि पत्रों में रचनाएँ प्रकाशित। प्रसिद्ध कवि और साहित्यकार श्री शैलेन्द्रकुमार पाठक से सन् १९५६ में विवाह हुआ था, किन्तु अब सम्बन्ध-विच्छेद हो गया है। **स्थायी पता**—बिजौली, जिला अलीगढ़।

मेरी आँखों से देखो तुम !

मेरी आँखों से देखो तुम, कैसा होता प्यार ?

दीप-शिखा पर मतवाले हो, आते मस्त पतंग
निष्ठुर होकर दीप जलाता कोमल-कोमल अंग
अपने अंग जलाकर जब वे इधर-उधर उड़ते हैं—
तब आमन्त्रण देता दीपक, अपनी बाँह पसार !
मेरी आँखों से देखो तुम, कैसा होता प्यार ?

विह्वल होकर फूल हृदय के देता है पट खोल
प्रेम-पावना करते भौंरे मीठा-मीठा बोल
कुछ दिन तक चलता रहता है, गुप-चुप प्रेमालाप
उड़ जाते नीरस फूलों से, भौंरे पंख पसार !
मेरी आँखों से देखो तुम, कैसा होता प्यार ?

चातक स्वाति-बूँद पाने को, अपनी चोंच उठाए
तरुण तपस्वी-सा बैठा रहता है ध्यान लगाए
किन्तु नीर के बदले उसको जब मिलते हैं पत्थर—
तब स्वभाग्य को कोसा करता, रह जाता मन मार !
मेरी आँखों से देखो तुम, कैसा होता प्यार ?

जन्म-स्थान— कानपुर ।
जन्म-तिथि—१४ जून १९४३ ।
विशेष—कानपुर नगर महा-
पालिका के असिस्टेण्ट अटेण्डेन्स



शीला अग्निहोत्री

आफिसर (शिक्षा-सुपरिंटेंडेण्ट)
श्री जमुनाप्रसाद अग्निहोत्री की
सुपुत्री । शिक्षा—बी० ए० ।
स्थायी पता—१० विद्यार्थी रोड,
कानपुर ।

और तुम जाने कहाँ हो ?

चाँद तो घर आ गया है, और तुम जाने कहाँ हो ?

एक दीपक ने दसों दीपक जलाए,
एक दूरी से विहग घर लौट आए ;
मैं स्वय को एक मेला लग रही हूँ—
आँख में सुकुमार सपने डबडबाए ;

प्राण यह घबरा गया है, और तुम जाने कहाँ हो ?
चाँद तो घर आ गया है, और तुम जाने कहाँ हो ?

रात-रानी गन्ध के स्वर फूँकती है,
प्राण में उन्मन पिकी-सी कूकती है ;
क्या कहूँ, मैंने हृदय पाया अजब है—
ज़िन्दगी हर बार यों ही चूकती है ;

मधु मुझे नहला गया है, और तुम जाने कहाँ हो ?
चाँद तो घर आ गया है, और तुम जाने कहाँ हो ?

कण्ठ में संगीत बैठा बुदबुदाता,
होंठ पर आता न, पीछे लौट जाता ;
पायलों में एक कम्पन-सा विलय है-
आरती में दीप रह-रह झिलमिलाता;

रूप रस बरसा गया है, और तुम जाने कहाँ हो ?
चाँद तो घर आ गया है, और तुम जाने कहाँ हो ?

जन्म - स्थान— रुड़की (सहारनपुर)। **जन्म-तिथि**— ३१ अगस्त सन् १९२७। **शिक्षा**—सन् १९५३ में आगरा-विश्वविद्यालय से भूगोल विषय में एम० ए० और उसके बाद सन् १९५६ में एल० टी०



शीला गुप्ता

परीक्षा उत्तीर्ण की। **विशेष**— भूगोल-जैसे शुष्क विषय की प्राध्यापिका होते हुए भी काव्य-रचना मे अग्रसर हैं। **वर्तमान पता**—भूगोल-प्रवक्ता जे० बी० एस० महिला विद्यालय, सहारन-पुर।

जाने क्या बात हुई ?

मौन हो गए तुम, जाने क्या बात हुई ?

मेरा एक चरित्र, निगाहें लाखों हैं
भिन्न-भिन्न कोणों से दुनिया आँक रही ;
अपनी मन-मरजी के काले परदों को—
उठा-उठाकर लघु छिद्रों से झाँक रही ;

कोई कहता है, मैं घन-अँधियारी हूँ,
कोई कहता, सूरज पर बलिहारी हूँ ;
कोई कहता, जगी नहीं मैं सोई हूँ,
कोई कहता, रात - रात - भर रोई हूँ ;

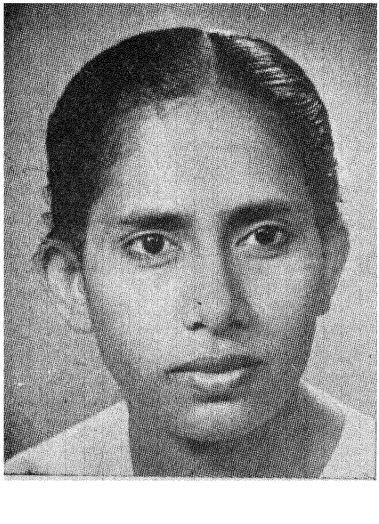
मैंने तुमसे पूछा—'राय तुम्हारी क्या ?'
मौन हो गए तुम, जाने क्या बात हुई ?

सारा जीवन गढ़ी एक ही मूरत थी
लेकर पहुँची लेकिन जब बाजारों में ;
सोने, चाँदी, सँगमरमर की दूकानें—
व्यंग लगीं करने कुछ मुखर इशारों में ;

एक लगी पूछने—'कहो कितने पैसे ?'
हँसी दूसरी 'मिट्टी के पैसे कैसे ?'
तुम चुपके से बोले—'इन्हें तमीज़ नहीं,
मन्दिर की मूरत बाज़ारू चीज़ नहीं !'

मैंने सोचा, 'तुम्हें मुफ़्त दे दूँ मूरत'
तभी खो गए तुम, जाने क्या बात हुई ?

धूप चमन में रूप बाँटने आई जब
मैं शूलों की छाँव-तले चुप पड़ी रही ;
मेरी गन्ध चहकती थी मन्दिर में—
मैं कुछ बोली नहीं, द्वार पर खड़ी रही ;
भीड़ समझती रही, भिखारिन कोई है—
कोई आँख न मेरी ख़ातिर रोई है ;
मैंने अपने मन को यों समझाया है—
आज देवता ने स्वयं तुझे बुलाया है ;
लेकिन पद-रज छूकर नज़र उठाई जब,
देव सो गए तुम, जाने क्या बात हुई ?



शुभा वर्मा

जन्म-स्थान—इलाहाबाद। **जन्म - तिथि**— १२ नवम्बर १९३७। **शिक्षा**—बी० ए०। एम० ए० मे अध्ययन कर रही है। **विशेष**— प्रख्यात तरुण साहित्यकार श्री रमेश वर्मा की धर्मपत्नी। अपने पति के लेखन में सहयोग देने के अतिरिक्त इन्होंने अनेक बालोपयोगी तथा प्रौढ़ोपयोगी पुस्तके भी लिखी हैं, जिनमें से कई भारत-सरकार के शिक्षा-मंत्रालय और उत्तर प्रदेश सरकार से पुरस्कृत भी हो चुकी हैं। **प्रमुख कृतियाँ**— 'चीनी बोध-कथाएँ', 'इंग्लैण्ड की लोक-कथाएँ', 'अमेरिका की लोक-कथाएँ','सूडेन की लोक कथाएँ', 'आयरलैण्ड की लोक-कथाएँ', 'जिस देश में गंगा बहती है' **पता** 'सत्यमेव जयते'। **स्थायी** पता — जे-३ कृष्णनगर, दिल्ली ३१।

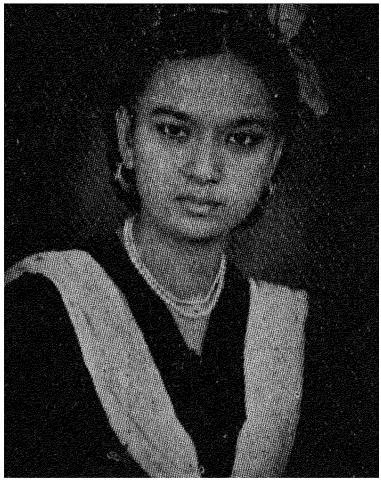
याद करती हूँ तुम्हें !

याद करती हूँ तुम्हें, बस एक ही क्षण !

जब किरन की डोर से प्राची उतरकर
अवनि-तल पर मोतियों का थाल भर-भर
महज सकुचाती सँभलती भूल गति से—
नाप लेती है धरा - आकाश - गह्वर
ढूँढ़ती हूँ मैं तभी आगत - विगत में
व्यथित हो तुमसे मिले अनुभूति के कण !
याद करती हूँ तुम्हें, बस एक ही क्षण !

तुम न मिलते जब नियति के भाव सोते
विगत-आगत जब परस्पर एक होते
मूक हो संवर्धना में भूलकर ही
हैं नहीं मानव कभी क्या बैठ रोते ?
मैं अपरिचित-सी कहीं हत चेतना में
प्राप्त कर लेती तुम्हारी व्यथा के व्रण !
याद करती हूँ तुम्हें, बस एक ही क्षण !

दूर हो पथ से बहुत, यह जानती हूँ
मिल न पाऊँ मैं कदाचित् मानती हूँ
भूलकर भी तुम न पहचानो मुझे, पर
याद रखना मैं तुम्हें पहचानती हूँ
ढूँढ़ लूँगी तुम जहाँ भी जा छिपोगे
बस हृदय की एक आशा, एक ही प्रण !
याद करती हूँ तुम्हें, बस एक ही क्षण !



जन्म-स्थान—कानपुर । **जन्म-तिथि**— ५ जुलाई सन् १९४३ । **शिक्षा**—बी० एस-सी० परीक्षा उत्तीर्ण। **विशेष**—विज्ञान की छात्रा होते हुए भी कविता की ओर विशेष रुचि । पूरा नाम शैलबाला श्रीवास्तव ।

शैल कली

पहली कविता 'आज' में प्रकाशित । 'आज' के साहित्य-सम्पादक श्री मोहनलाल गुप्त से विशेष प्रोत्साहन मिला । पिता श्री अम्बिकाप्रसाद श्रीवास्तव एक कुशल इंजीनियर हैं। **स्थायी पता**—२३।७५ कबीर चौरा, वाराणसी ।

पीर बन आए हो !

सुनती हूँ दूर कहीं कोयल की 'कूक' रे
डोलता है तन, मन उठती है 'हूक' रे
सुधियों की नौका पै गीत के वितान तान
मदमाती घड़ियों में पीर बन आए हो !
डूबती तरी के तुम तीर बन आए हो !

लहर उठा मन पिया ! लहराते आँचल-सा
छहर उठा प्राण, हिया, बल खाते बादल-सा
तड़प उठी बिजली है, नाचता है मन-मयूर
चातक के प्राण प्रिय नीर बन आए हो !
डूबती तरी के तुम तीर बन आए हो !

स्वागत में देव मेरा नेह-दीप जल गया
चाँद मुस्कराया, सन्ध्या का मान गल गया
खिली कली नन्दन की, गली-गली नाच उठी—
मन के निकुञ्ज में, समीर बन आए हो !
डूबती तरी के तुम तीर बन आए हो !



शैलकुमारी चतुर्वेदी

जन्म-स्थान— मेरठ । **जन्म-तिथि**— १० जुलाई १९२३ । **शिक्षा**— मैट्रिक, हिन्दी-प्रभाकर, साहित्य-विशारद । **विशेष**—सन् १९३८ में विवाह के उपरान्त अपने पति श्री उमेश चतुर्वेदी के सहयोग से साहित्य-निर्माण की ओर अग्रसर हुई । **प्रकाशित-रचनाएँ**—'वीर सेनानी' (उपन्यास) सन् १९५० से ५५ तक राजस्थान-विश्वविद्यालय की हाई स्कूल कक्षाओं में पाठ्य-पुस्तक रहा । आकाश वाणी के जयपुर केन्द्र से वार्ता, कविता, नाटक आदि प्रसारित होते रहते हैं। **स्थायी पता**—द्वारा श्री उमेश चतुर्वेदी, एफ-७१७, गान्धीनगर, जयपुर ।

प्रेममय अभिसार भूली !

प्रेम के आवेश में मैं, प्रेम का उपहार भूली !
मधुर स्मृति-सुख-स्वप्न भूली, प्रेममय अभिसार भूली !

आह उस मधुमास की मधु से भरी चिर मदिर रातें
हृदय-हारी मुग्धकारी सुधा-वर्षक मधुर बातें
आह उन शशि-रश्मियों की चपल-चंचल सुखद घातें
एकधा ही प्रेम की तल्लीनता में प्यार भूली !
प्रेम के आवेश में मैं, प्रेम का उपहार भूली !

प्रेम की मृदु कल्पनाओं से भरा ससार क्या है ?
रे ! मुझे कोई बता दे, क्षितिज के उस पार क्या है ?
प्रेम है यदि, तो बताओ प्रेम का शुचि सार क्या है ?
हृदय-वीणा को बजाते प्रीति के मृदु तार भूली !
मधुर स्मृति-सुख-स्वप्न भूली, प्रेममय अभिसार भूली !



शैलबाला

जन्म-स्थान— इन्दौर (मध्य प्रदेश)। **जन्म-तिथि**— मार्च, सन् १९२२। **शिक्षा**— काशी-विश्वविद्यालय से बी० ए० बाद में नागपुर-विश्वविद्यालय से एम० ए० किया। **विशेष**—इनके पूर्वज उत्तर प्रदेश के रहने वाले थे। पिता श्री मंगल-प्रसाद पाण्डेय इनके जन्म से पहले ही इन्दौर में आकर बस गए थे। २० वर्ष की आयु से ही काव्य-रचना प्रारम्भ। आजकल गवर्नमेण्ट ट्रेनिंग कालिज हैदराबाद में हिन्दी की अध्यापिका है। प्रथम काव्य-संग्रह शीघ्र ही प्रकाशित होने-वाला है। **स्थायी पता**—१४-७-२६१ बेगम बाजार, हैदरा-बाद (आन्ध्र)।

गीत अपने गा रही हूँ !

मैं तुम्हारे ही स्वरों में, गीत अपने गा रही हूँ !
औ' तुम्हारे स्नेह से ही, यह प्रदीप जला रही हूँ !

फिर रही थी यामिनी
आसावरी की वेदना ले
आ गए तुम सजग दीपक–
राग की नव चेतना ले
मैं तुम्हारी ज्योति से, आलोक अपना पा रही हूँ !
मैं तुम्हारे ही स्वरों में, गीत अपने गा रही हूँ !

बँध गए निर्बन्ध जलधर
क्षीण विद्युत्-बन्धनों में
भर उठे आमोद के स्वर
जीर्ण जीवन-स्पन्दनो मे
मैं तुम्हारी मूर्च्छना में, लीन होती जा रही हूँ !
औ' तुम्हारे स्नेह से ही, यह प्रदीप जला रही हूँ !

आज कुसुमित हो उठी है,
कटकित मरुभूमि सारी
सजल झुकते आ रहे हैं
ये जलद अम्बर-विहारी
मै तुम्हारी चेतना सर्वत्र बिखरी पा रही हूँ !
मैं तुम्हारे ही स्वरों में, गीत अपने गा रही हूँ !



शैल रस्तौगी

जन्म-स्थान— मेरठ । **जन्म-तिथि**—१ सितम्बर, सन् १९२७ । **शिक्षा**— आगरा-विश्वविद्यालय से एम० ए० । काशी-विश्वविद्यालय से 'हिन्दी उपन्यासों में नारी' विषय पर शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत करके पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त की । **विशेष**—बचपन से ही कहानी, कविता, नाटक, निबन्ध लिखने की ओर अभि-रुचि रही है । आजकल मेरठ के रघुनाथ गर्ल्स कालिज में हिन्दी की प्राध्यापिका हैं । **प्रकाशित रचना**— 'पराग' (कविता–संग्रह) । **स्थायी पता**— ११० मोरीपाड़ा, मेरठ ।

तुम न आए पर !

निरखती ही रही मैं बाट आशा, तुम न आए पर !

दृगों की शून्यता यह—
भर न पाई, नींद रानी भी,
तुम्हारी छाँह छू बसती—
रही स्मृतियाँ बिरानी भी;
शमा जलती रही निशि-भर सजल-सी, तुम न आए पर !

सकुचता पन्थ पर फैला—
श्रमा का मौन नीराजन,
गगन के नील आँगन में—
चमकते स्वर्ग के कुछ कण;
यहाँ छलती रही मुझको निराशा, तुम न आए पर !

तुम्हारा चिह्न चरणों के—
बिछे पाथेय बन मुझ तक,
बिखर उन पर गई पलकें—
मचलते आँसुओं में थक;
दिशाएँ प्राण में भरती रहीं तम, तुम न आए पर !

रहा लग आज मुझको—
विश्व-सारा एक सपना-सा,
गया बुझ आह मेरा स्नेह-दीपक
स्नेह का प्यासा;
व्यथा पलती रही मन में, नयन में, तुम न आए पर !
निरखती ही रही मैं बाट आशा, तुम न आए पर !



स्नेहमयी चौधरी

जन्म - स्थान— मौरावाँ (उन्नाव)। **जन्म-तिथि**—९ मई, १९३५। **शिक्षा**—आगरा-विश्व-विद्यालय से हिन्दी में एम० ए० (१९५५ में)। **विशेष**—कविता और कहानी-लेखन में अधिक रुचि है। प्रारम्भ से ही घर का वातावरण साहित्यिक था। सन् १९५९ में हिन्दी की नयी कविता के चुने हुए कवियों में से एक श्री अजितकुमार से विवाह; अर्थात् हिन्दी की प्रख्यात कवयित्री श्रीमती सुमित्राकुमारी सिनहा की पुत्रबधू बनीं। पिछले कुछ वर्षों में अनेक कविताएँ और कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है। 'गुलाब के रंग' नामक कहानी-संग्रह प्रकाशन-पथ पर है। **वर्तमान पता**—जी. आई. ७३७ सरोजिनी-नगर, नई दिल्ली—३।

मन मेरे, उनकी बात कहो !

उनकी छवि की तुलना में,
सब रंग-रूप है फीके ;
तृप्त हो गई हूँ उनकी—
करुणा के जल को पीके ;
उनकी लहर-लहर पर तिरकर, उनके संग बहो !
मन मेरे, उनकी बात कहो !

उनकी तरल चपल गतिविधियाँ,
दुनियाँ-भर से न्यारी ;
उनकी मधुर मदिर वाणी—
कितनी है मुझको प्यारी ;
उनकी छाया बनकर, प्रतिपल उनके पास रहो !
मन मेरे, उनकी बात कहो !

उनकी सहज निकटता का सुख,
जीवन की थाती है ;
पर यदि कोई वेला प्रिय की—
बिछुड़न की आती है ;
तो भीतर-भीतर उनसे, दूरी का ताप सहो !
मन मेरे, उनकी बात कहो !



स्नेहलता प्रसाद

जन्म-स्थान—ग्राम पुरानी सराय, जिला भागलपुर (बिहार)। **जन्म-तिथि**—५ जून १९३६। **शिक्षा**—बी. ए.। **विशेष**—राजकीय महिला शिल्प-कला विद्यालय मुन्दीचक में प्रधानाचार्या। कालिज-जीवन के प्रारम्भ से ही लेखन में रुचि। पहले-पहल १३ वर्ष की अवस्था में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के एक अधिवेशन में कविता-पाठ। **स्थायी पता**—द्वारा श्री सूर्य-नारायणप्रसाद वकील, मुन्दीचक, भागलपुर।

भूल गए क्यों निर्मम मेरे ?

मैं सावन की बूँद धरा पर,
अकुलाए हैं घन तम घेरे !
भूल गए क्यों निर्मम मेरे !

नयनों के मिलने की आशा
व्याकुल अन्तर की है भाषा
कैसे स्वर पहुँचा दूँ तुम तक,
जग-बन्धन के अनुपम फेरे !
भूल गए क्यों निर्मम मेरे !

चंचल जग की क्या माया है
छलती अपनी ही छाया है
छलनाओं के भ्रम में भूलूँ,
क्षीण प्यार के रहे बसेरे !
भूल गए क्यों निर्मम मेरे !

आओ देख जुड़ा लूँ मन को
अर्पित कर निज स्वर्णिम धन को
भूल निशा-सपनों में जाऊँ,
खो हँस लूँ, क्षण क्यों न सवेरे !
भूल गए क्यों निर्मम मेरे !

जन्म-स्थान—लखनऊ।
जन्म-तिथि—सन् १९३२।
शिक्षा—बी० ए०, एल० टी०।
कार्य—महिला हिन्दी विद्यापीठ लखनऊ में अध्यापन। **प्रकाशन**—'रजनीगन्धा' (कविता-संग्रह) १९५३। सम्पादन—



स्नेहलता 'स्नेह'

'वर्तिका' मासिक (फरवरी, १९५३ से मार्च १९५७ तक लगभग चार वर्ष)। आजकल 'कर्मलोक' साप्ताहिक का सम्पादन कर रही हैं। **स्थायी पता**—बताशे वाली गली, लखनऊ।

तुम मिलोगे ही कभी !

तुम मिलोगे ही कभी सुधि की डगर में,
मैं तुम्हारी याद को अपना बना लूँ !
तुम मिटा दोगे कभी मन की घुटन को,
मैं तुम्हारी ज्योति को अपना बना लूँ !

सुबह-सी मुस्कान, चन्दन-सा हृदय-धन,
ओस-सा पावन नयन का नीर ढाला;
सुमन को सौरभ, भ्रमर को गूँज देकर,
स्वयं को छलती रही, पी मदिर हाला,

तुम सजा दोगे कभी बिखरे सपन को,
मैं तुम्हारी नींद को अपना बना लूँ !
तुम मिलोगे ही कभी सुधि की डगर में,
मैं तुम्हारी याद को अपना बना लूँ !

मैं अकिंचन-सी किनारे पर खड़ी हूँ,
और उफनाता जलधि ललकारता है;
साथ देने को लहर बेकल बढी है,
और तट का धैर्य भी हुंकारता है;

तुम मिलोगे ही कभी स्नेहिल लहर में,
मैं विकल मँझधार को अपना बना लूँ !
तुम मिटा दोगे कभी मन की घुटन को,
मैं तुम्हारी ज्योति को अपना बना लूँ !

रात लम्बी है, मगर तारों-भरी है,
हर दिशा का दीप पलकों ने जलाया;
साँस छोटी है, मगर आशा बड़ी है,
ज़िन्दगी ने मौत पर पहरा लगाया;

तुम मिलोगे ही कभी पिछले पहर में,
मैं सिसकती माँग शबनम से सजा लूँ!
तुम मिलोगे ही कभी सूधि की डगर में,
मैं तुम्हारी याद को अपना बना लूँ!
तुम मिटा दोगे कभी मन की घुटन को,
मैं तुम्हारी ज्योति को अपना बना लूँ!

जन्म-स्थान — लखनऊ। **जन्म-तिथि**— जून, १९१९। **शिक्षा**—एम० ए०, (अंग्रेजी तथा संस्कृत-साहित्य मे, लखनऊ-विश्वविद्यालय से)। **प्रकाशित रचनाएँ**—'कौड़ियों का नाच' (सन् १९५६), 'रेडियम के अक्षर' (१९६१); दोनों कहानी-संग्रह। 'अनन्त का पक्षी' (१९६१ में प्रकाशित कविता-संग्रह)। **विशेष**—नारी शिक्षा निकेतन इण्टर कालिज लखनऊ की प्रधानाचार्या। **स्थायी पता**—राज भवन, टेलीफोन एक्सचेंज रोड, लखनऊ।



स्वरूपकुमारी बक्शी

रूप एक मीनार है !

केश यह घने-घने,
इत्र में सने-सने,
खुले, ढले अनमने,
यह नहीं मृदु रात है,
रिमझिमी बरसात है,
यह लटें जंजीर काली, रूप इक मीनार है !

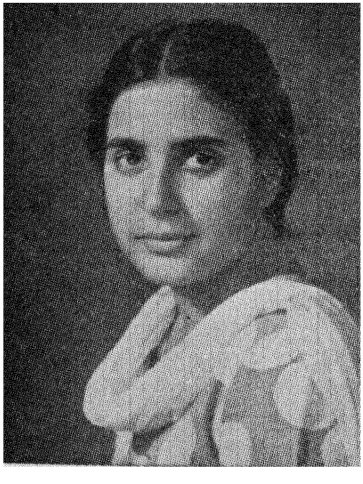
नयन यह डरे-डरे,
अधखुले, भरे-भरे,
मस्त-से परे-परे,
मत समझ यह जाम है,
या नशीली शाम है,
नयन उनके हैं झरोखे, देह कारागार है !

फिर सुरा ढले-ढले,
अंग हर जले-जले,
हम रहें छले-छले,
हम बहक जायँ कभी,
हम छलक जायँ कभी,
ज़िन्दगी ऐसी गुफ़ा है, भूल जिसका द्वार है !

मस्त हो पिये-पिये,
एक पल जिये-जिये,

रंग-सा लिये-लिये,
बह चलो सिहर–सिहर,
उमड़ रही लहर-लहर,
ज़िन्दगी का दूसरा तट, चेतना के पार है !

उड़े चलो कहीं-कहीं,
एक पल रुको नहीं,
मंज़िलें बुला रहीं,
दूर कितनी राह है,
आज क्या परवाह है,
क्यों मनुज बन्दी, खुला जब विश्व का विस्तार है !
रूप इक मीनार है !



संयुक्ता

जन्म - स्थान— अम्बाला छावनी । **जन्म-तिथि**—३ जनवरी १९३८ । **शिक्षा**— एम० ए० (संस्कृत) सन् १९६१ में पंजाब यूनिवर्सिटी से । साहित्यरत्न (१९५६) । दिल्ली विश्वविद्यालय में 'जर्मन डिप्लोमा' कोर्स का अध्ययन । पी - एच० डी० की उम्मीदवार । **विशेष**—लिखने से अधिक पढ़ने का व्यसन । कुछ कविताएं 'सरिता' में प्रकाशित हुई हैं । **वर्तमान पता**—१०६ सी, वर्किंग गर्ल्स होस्टल, कर्ज़न रोड, नई दिल्ली ।

अब तो नाव लहर में आई !

क्या देखूँ विस्तार जलधि का,
क्या नापूँ उसकी गहराई ?
अब तो नाव लहर में आई !

रह-रहकर मन अकुलाता है,
परिचित तट छूटा जाता है ;
एक अपरिचित का आमन्त्रण,
जीवन-गान हुआ जाता है ;
इक धीमे-से स्वर ने युग की,
संचित सब सुध-बुध बिसराई !
अब तो नाव लहर में आई !

मैं जल को अवगाह न जानूँ,
कैसी तेरी राह न जानूँ,
मैं वर्षा - आतप की मारी,
कहाँ मिलेगी छाँह न जानूँ ?
जाने किस तट वह वंशी-वट,
तूने बंसी जहाँ बजाई !
अब तो नाव लहर में आई !

छूटे सभी सहारे पीछे,
उजियारे - अँधियारे पीछे ;
इसीलिए हूँ सबसे आगे,
दो पग चलूँ तुम्हारे पीछे ;
फिर उस जल से पाँव पखारूँ,
जो मैं लोचन में भर लाई !
अब तो नाव लहर में आई !



सत्यवती शर्मा

जन्म - स्थान— लुधियाना (पंजाब)। **जन्म-तिथि**--१८ अप्रैल सन् १९११। **शिक्षा**— हिन्दी प्रभाकर, इण्टरमीडिएट। **विशेष**--हिन्दी के विख्यात उपन्यासकार, कहानीकार और नाटककार श्री पृथ्वीनाथ शर्मा की धर्मपत्नी। सबसे पहली कविता सन् १९३३ में लिखी, जो उन दिनों 'चाँद' के 'विदुषी अंक' में प्रकाशित हुई। तदनन्तर

आपकी रचनाएँ 'विश्वमित्र', 'विशाल भारत', 'सरस्वती', तथा 'नया समाज' आदि पत्र-पत्रिकाओं में सम्मान प्रकाशित हुईं। कविता-संग्रह 'प्रथम सुमन' नाम से सन् १९५५ में प्रकाशित हुआ। कहानियाँ इनके पति श्री पृथ्वीनाथ शर्मा के कहानी-संग्रह 'विवाह चक्र' में संग्रहीत हैं। **वर्तमान पता**---६ बी. माडल टाउन, पटियाला (पंजाब)।

प्यास बढ़ती क्यों हृदय की !

आज क्यों नभ खेल रचता ?
वेदना का ले निमन्त्रण, वे उठीं पीली घटाएँ,
रज-कणों के आवरण में, थरथरातीं सब दिशाएँ ;
विश्व-वीणा के स्वरों में, कौन भैरव-राग भरता ?
आज क्यों नभ खेल रचता ?

भावनाओं के सपन-से, घिर चले फिर श्याम बादल,
मधुर स्मृति-सी कौंध जाती, दामिनी की रेख चंचल
भय-त्रसित इस विरस उर में, नेह क्यों सहसा बरसता?
आज क्यों नभ खेल रचता ?

स्नेह की दो बूँद पाकर, प्यास बढ़ती क्यों हृदय की ?
ज्वलित होतीं क्यों शिखाएँ, वात बहती जब मलय की ;
चूमने जब घन बढ़ो मैं, ओट से क्यों चन्द्र हँसता ?
आज क्यों नभ खेल रचता ?

चीरकर उर बादलों का, क्यों हँसे मदमत्त तारे ?
चाह को उर में लिये जब, भटकते जुगनू बिचारे ;
मृदुल उर की साधना का, कौन यह उपहास करता ?
आज क्यों नभ खेल रचता ?

क्षुद्रतम ये खेल रचकर, आज नभ किसको रिझाए ?
सुप्त हैं सारी व्यथाएँ, क्यों वृथा उनको जगाए ?
आँक क्या यह नभ सकेगा, सिन्धु के उर की विकलता ?
आज क्यों नभ खेल रचता ?

जन्म-स्थान— दिल्ली ।
जन्म-तिथि—७ जून १९३४ ।
शिक्षा—हिन्दी प्रभाकर, एम० ए० (हिन्दी), दिल्ली विश्वविद्यालय से । आजकल दिल्ली के केन्द्रीय शिक्षण-



सन्तोष अग्रवाल

संस्थान में बी०एड० की छात्रा। **विशेष**—कविता के अतिरिक्त कहानी, लेख, निबन्ध और आलोचना आदि लिखने में भी विशेष रुचि रखती हैं। **स्थायी पता**— २४९४ चूड़ीवालान, बाजार सीताराम, दिल्ली ६ ।

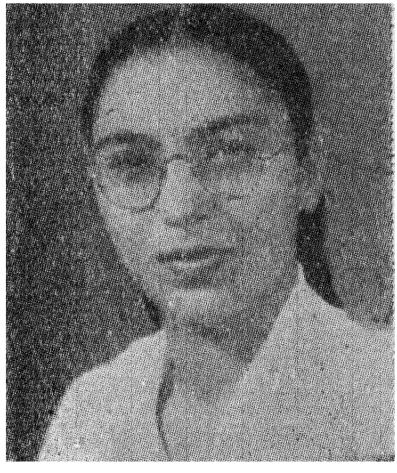
हास्य भी तो रूठ जाता !

रूठते हैं प्राण प्रियतम,
है धरा के श्वास में तम ;
पर न जाने क्यों विकल है--
आज मुझसे दीप का मन ;
इस अँधेरे-से जगत् में, स्नेह भी तो टूट जाता !
हास्य भी तो रूठ जाता !

दे दिया मुझको नियति ने,
कठिन चिन्तन का सहारा ;
प्रथम इंगित में न जाने-
भर दिया क्यों गरल प्यारा ;
मृत्यु के शृङ्गार मे यह गरल भी तो छूट जाता !
हास्य भी तो रूठ जाता !

मैं दुखी थी दीप लेकर,
व्यथित थी मै हास्य खोकर ;
क्यों लगा तुमने मुझे दी—
आज फिर यों प्राण ठोकर ;
क्रन्दनों के भूलने को, अश्रु भी तो रूठ जाता !
हास्य भी तो रूठ जाता !

जन्म-स्थान—नई निल्ली। **जन्म - तिथि**— १५ दिसम्बर १९३४। **शिक्षा**—प्रभाकर व साहित्य-रत्न। **प्रकाशित कविताएँ**— 'रज-कण' (कविता-संग्रह), 'रूप और छाया' (उपन्यास) सन् १९५६ में प्रकाशित। **विशेष**—गद्यगीत,



सन्तोष बालूपुरी

कहानी और स्फुट रचनाएं 'सैनिक समाचार', 'नवभारत टाइम्स', 'विश्व-दर्शन', 'धर्मयुग' और 'भविष्य' आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। **स्थायी पता**—६ ए। २३ वैस्टर्न एक्सस्टेंशन एरिया, करोलबाग, नई दिल्ली।

तुमसे मीठी याद तुम्हारी !

मुझको यह मालूम नही था—
मिलन-पर्व भी ला सकता है, आँसू की जल-धार ज़िन्दगी !

इतना मुझे रुलाया तूने, बीता बचपन, भरी जवानी
बन्द हो गए सरगम के स्वर, सूख गया आँखों का पानी
मुझे कभी मालूम नही था—
मधुरिम प्यार कभी ला सकता, आहों-भरी कगार ज़िन्दगी !

नींद चुरा ली क्यों पलकों की, भटक रहे आवारा सपने
मैं एकाकी, तुम निर्मोही, कैसे वचन तोड़ते अपने
मुझको यह मालूम नहीं था—
तूफ़ानों में बिक सकती है, किश्ती की मासूम ज़िन्दगी !

सुख की सेज बन गई शूलो, सींच रही हूँ दुख की क्यारी
सच मानो, या मत तुम मानो, तुमसे मीठी याद तुम्हारी
मुझको यह मालूम नहीं था—
भूल जवानी भी बन सकती भीषण पारावार ज़िन्दगी !
मिलन-पर्व भी ला सकता, है आँसू की जल-धार ज़िन्दगी !

जन्म-स्थान — जौनपुर। **जन्म-तिथि** — २ जुलाई सन् १९४०। **शिक्षा**—प्रारम्भ से ही दिल्ली-निवासिनी रहीं और **दिल्ली-विश्वविद्यालय** से ही सन् १९६१ में एम० ए० किया। **विशेष**—साहित्य में प्रारम्भ से



सन्तोष सकसेना

ही रुचि रही है और आजकल तेलुगु कहानियों का हिन्दी-अनुवाद करने में व्यस्त हैं। कविता के अतिरिक्त निबन्ध-लेखन में भी रुचि है। **वर्तमान पता**— १२३ लक्ष्मण गंज, झाँसी (उत्तर प्रदेश)।

अभी से मन घबराया !

साँझ हुई, धरती पर घिर आया अँधियारा
अभी यामिनी शेष, अभी से मन घबराया !

ओठों से मुसकान गई, चन्दा से किरनें
मन बुझ गया, दिलों से भी छिन गई रोशनी
आँखों से उल्लास गया—सूना घर-आँगन
एक उदासी मन की, घेरे जग का कन-कन
दूर कहीं खोए नयनों का चित्र बनाता
बादल का दल सिमट क्षितिज के काले कोने
आँसू से बिखरे तारों की जलती छाया
जली रही आशा नगरी की स्वर्णिम काया
सहे युगों तक प्राण विकल उन्माद पीर की
अभी प्रतीक्षा शेष—मूक उर क्यों भर आया ?
अभी यामिनी शेष, अभी से मन घबराया !

उड़ती जोड़ी खग की, कलरव कहीं न मिलता
खिलते सुमनों के दल, सौरभ नहीं बिखरता
बिछुड़ गए जो, उनकी सुधि में खोने वाले
दुखी हृदय को छल जाते मुसकाने वाले
बैरिन पीड़ा के पहरे में बन्दी सपने
रोज मचलते प्राणों पर आँसू की मोहरें

पूजा के फूलों पर चट्टानों का गिरना
आने वाले तुमको इनका मूल उलहना
हर क्षण पागल हो पुकारते मेरे स्पन्दन
अभी जिन्दगी शेष, अभी खोया क्या पाया ?
अभी यामिनी शेष, अभी से मन घबराया !

जन्म - स्थान— दिल्ली। २४ अप्रैल, सन् १९३२। **शिक्षा**—आगरा विश्व-विद्यालय से एम० ए० (हिन्दी) करने के उपरान्त उसी विश्वविद्यालय



सरला गुप्ता

से हिन्दी-साहित्य में डाक्टरेक्ट'। **विशेष** — प्राध्यापिका हिन्दी विभाग रघुनाथ गर्ल्स कालिज, मेरठ। स्थायी पता—प्रहलाद वाटिका, ५१६ सिविल लाइन्स, मेरठ।

जीवन-भरी गुञ्जार दो !

मैं दर्द लेकर क्या करूँ बस तुम मुझे झंकार दो—
जीवन-भरी गुञ्जार दो !

दो दीप-जैसी भावना, जिससे अमर मैं हो सकूँ,
पाकर तुम्हारा प्यार मैं, चिर आत्म-विस्मृत हो सकूँ,
नित पास रहकर भी मुझे तुम दूर का उपहार दो—
जीवन-भरी गुञ्जार दो !

बेध दे जो प्राण को, वह पीर तो मिलती नहीं है,
पीर को सुलझा सके, वह रागिनी मिलती नहीं है ;
जो प्राण का स्वर गा सके, उस राग की झंकार दो—
जीवन-भरी गुञ्जार दो !

भावना लेकर मिलन की दीप-सा है प्राण जलता,
चाहना की भावना में, प्यार का संसार मिटता ;
मिट रहा है दीप, उसको ज्योति का संसार दो—
जीवन-भरी गुञ्जार दो !

दान दो तो प्रेम का पाकर जिसे कुछ कह सकूँ मैं,
कण्टकित निज राह की सब पीर को भी सह सकूँ मैं ;
कुछ नहीं तो आँख में आँसू-भरी ही हार दो—
जीवन-भरी गुञ्जार दो !



जन्म-स्थान—गोटे गाँव (नरसिंहपुर) मध्य प्रदेश। **जन्म-तिथि**— सन् १९२५। **शिक्षा**—मैट्रिक, डिप० टी०, विशारद। **विशेष**—छात्र-जीवन से ही इन्हें सर्व श्री स्व० गंगा विष्णु पाण्डेय, स्व० मातादीन शुक्ल, माखनलाल चतुर्वेदी रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' आदि उच्चकोटि के साहित्य-मर्मियों

सरला तिवारी

का निर्देश मिलता रहा है। वैसे आप मीरा, महादेवी और सूर की पीर से प्रभावित हैं। नागपुर के आकाश वाणी केन्द्र से इनके गीत और कविताएँ प्रसारित होती रहती हैं। आजकल आप हितकारिणी कन्या उच्चतर माध्यमिक शाला में अध्यापन-कार्य करती है। **स्थायी पता**—३९२ ओपरेनगंज, जबलपुर।

मैं उनकी ही होती !

जिनके चरणों में नत यह जीवन,
मैं उनकी ही होती !

जिनकी प्रीति पली साँसों में, आँखों में छवि अनुपम
जिनकी एक किरण अति उज्ज्वल मिटा रही जीवन-तम
जिनको जपती उर की कम्पन,
मैं उनकी हो होती !

रोम-रोम में लहराता है, जिनका प्यार लजीला
जिनके सुधि-कण युग-युग से भर, भीना आँचल गीला
जिनके सपने जीवन का धन,
मैं उनकी ही होती !

नेह-भरी बरसात मिलन की, उमड़-घुमड़ रह जाती
उन्मन भीग-भीग मैं प्रतिक्षण फिर भी भीग न पाती
मेघों में जिनकी द्युति चितवन,
मैं उनकी ही होती !



सरला भारती

जन्म-स्थान— जौनपुर। **जन्म-तिथि**—१५ मार्च, १९२६। **शिक्षा**—बी० ए०, बी० एड० (१९५२)। **विशेष**— १६-१७ वर्ष की अवस्था में इनकी पहली कविता प्रस्फुटित हुई थी। वेदना की गायिका महादेवी वर्मा से आप विशेष प्रभावित हैं। इनकी अधिकांश रचनाएँ भी नारी-जीवन की पीड़ा से ओत-प्रोत है। साहित्यिक जीवन में आपको श्रीमती विद्यावती 'कोकिल' से विशेष प्रोत्साहन मिला है। आजकल गोरखपुर में अध्ययन-रत हैं और विश्व-विद्यालय की विमेन डेलगेसी की मन्त्रिणी हैं। **स्थायी पता**— श्री राय कृष्णचन्द्र सैण्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, बैंक रोड, गोरखपुर।

मुझे रीत जग की, निभाना न आया !

मुझे रीत जग की, निभाना न आया !
स्वयं को जगत् से मिलाना न आया !

निठुरता ने कितने मिटाए है जीवन,
कहीं मिट गए तन, कही लुट गए मन,
मुझे पर न भाई निठुरता जगत् की
स्वयं मिट गई पर मिटाना न आया !
मुझे रीत जग की, निभाना न आया

मुझे छू न पाए जगत् के कपट-छल
सदा वेदनामय इसीसे मेरे पल,
जगत् जो भी समझे, मिटे लाख जीवन
मुझे बात साँची छिपाना न आया !
मुझे रीत जग की, निभाना न आया !

छलों से भरे इस जगत् में भी पल-भर,
कपट अग्नि में अब तलक नित्य जलकर
मिली चोट पग-पग सदा, किन्तु मुझको
कभी भी तो अपना बेगाना न आया !
मुझे रीत जग की, निभाना न आया !

अगर दृढ़ चरण, तो जगत् क्या करेगा,
कहाँ तक असत् सत्य से ही लड़ेगा,
सहूँगी सभी कुछ डगर में तुम्हारी
मगर बात देकर भुलाना न आया!
मुझे रीत जग की, निभाना न आया!

जन्म-स्थान—फैजाबाद ।
जन्म-तिथि—३ मार्च, १९३६ ।
शिक्षा—लखनऊ-विश्वविद्यालय से बी० ए० ; प्रयाग-संगीत-समिति से संगीत तथा गायन की परीक्षा दे रही है ।
विशेष—आकाश वाणी लख-



सरला श्रीवास्तव

नऊ के संगीत और नाटक-विभाग में सन् १९४९ से भाग लेती रही हैं। आजकल जनता गर्ल्स कालिज, लखनऊ मे अध्यापिका हैं । **स्थायी पता**—द्वारा—श्री बी० एम० भट्टाचार्य, नवाब कोठी के सामने, नरही, नखनऊ ।

वह न मिला !

जीवन-भर उसको ढूँढ थकी,
एक टीस मिली, पर वह न मिला !
आँसू बरसाए इधर - उधर,
कुछ शान्ति मिली, पर वह न मिला !

रोते-रोते मैं हार थकी, आँखें भी लाल शराब हुई
बरसात-थकी फिर विरह-जगी रातों की नींद खराब हुई
इस व्यथित प्रेम की छाया में देने को टीस अमर दे दी
जब टीस मिटाना चाहा तो,
शमसान दिखा, पर हल न मिला !
जीवन-भर उसको ढूँढ थकी,
एक टीस मिली, पर वह न मिला !

हमने भी क्या-क्या सोचा था मन में कल्पित एक महल बना
पर आँधी-पानी से उसको, तुम बहा गए जो कुछ था बना

दिन-रात बनाए स्वप्न-महल,
केवल मिलने की आशा में
जब मिलना चाहा तुमसे तो,
पद-चिह्न मिले, पर पद न मिला
आँसू बरसाए इधर-उधर,
कुछ शक्ति मिली, पर वह न मिला !

हर प्यार यहाँ बदनाम रहा, गुमराह यहाँ हर प्रीति रही
सर्वस्व लुटाकर मर जाना, बस इस जग की यह रीति रही
क्या क्षीण शरीर सिंगार करे, क्या जाए प्रियतम की नगरी

जब प्यार के बदले हर पग पर,
नैराश्य मिला, पर वह न मिला !
जीवन-भर उसको ढूँढ थकी,
एक टीस मिली पर वह न मिला !
आँसू बरसाए इधर-उधर,
कुछ शान्ति मिली, पर वह न मिला !



जन्म-स्थान—बदायूँ (उत्तर प्रदेश) । जन्म - तिथि—३० अगस्त, १९१९ । निधन-तिथि—सन् १९४८ । विशेष—घर पर ही अपनी माता श्रीमती दुर्गादेवी के निरीक्षण में साहित्य तथा संगीत की शिक्षा प्राप्त की । हिन्दी के ख्याति-प्राप्त गीतकार और कवि श्री निरंकारदेव 'सेवक' की पूर्व पत्नी । विवाहोपरान्त हिन्दी के अनेक सुप्रसिद्ध

स्व० सरला सेवक

कवियों—स्व० निराला जी, श्रीमती सुमित्राकुमारी सिनहा, डॉ० हरिवंशराय बच्चन तथा श्री सोहनलाल द्विवेदी के सम्पर्क में वे आईं । ऐसे वातावरण में उन्होंने कविता के अतिरिक्त अनेक लेख तथा कहानियाँ लिखीं । आपके निधन पर जोधपुर (राजस्थान) की पत्रिका 'क्षत्राणी' ने अपना विशेषांक भी प्रकाशित किया था ।

क्यों मुझको जीवन भार न हो ?

जो सबकी प्यास बुझाती है
जीवन का ताप मिटाती है
वह धार सुधा की मेरे ही
अधरों पर आ विष बन जाती।
क्यों मुझको जीवन भार न हो।

पथ एकाकी सूनी मंजिल
उत्साह-रहित तन, पाँव शिथिल
जीवन की अन्तिम निद्रा भी
मेरी छाया से घबराती।
क्यों मुझको जीवन भार न हो ?

लिखकर ही दिल हल्का कर लूँ
उर अन्तर गीतों से भर लूँ
पर पीड़ा तो प्राणों में ही
घुट-घुटकर प्रतिपल अकुलाती।
क्यों मुझको जीवन भार न हो ?



सरस्वती चौधरी

जन्म-स्थान—मेरठ (उत्तर प्रदेश)। **जन्म-तिथि**—१९३५। **शिक्षा**—एम० ए०, बी० टी०। **विशेष**—आपके पति श्री जे० एस० चौधरी डी० ए० वी० कालिज देहरादून मे रसायन-शास्त्र के प्रोफेसर हैं और आप स्वयं 'कानवेण्ट आफ जीसस एण्ड मेरी स्कूल' देहरादून में अध्यापिका हैं। गीत थोड़े ही लिखे हैं। कहानी और लेखों की ओर अधिक झुकाव है। कुछ कविताएँ 'सरिता' 'धर्मयुग' और 'नवभारत टाइम्स' में प्रकाशित हुई हैं। **स्थायी पता**—१८ ओल्ड सर्वे रोड, देहरादून।

ज़िन्दगी फिर साथ लाओ !

कौन जाने तुम स्वयं ही, राह के उस पार जाओ !

ज़िन्दगी से दूर हूँ, पर चरण बढ़ते जा रहे हैं
मौन आँखें रो रहीं, पर गीत बनते जा रहे हैं
है वही मंजिल पुरानी, राह तो बदली हुई है
क्या हुआ जो पथ अजाना, हर नज़र संभली हुई है
कौन जाने किस जगह तुम, ज़िन्दगी फिर साथ लाओ !
कौन जाने तुम स्वयं ही, राह के उस पार जाओ !

ले शिथिल विश्वास इस पथ, आज फिर से चल रही हूँ
मैं बुझी-सी ध्वनि हुई हूँ, राख बनकर गल रही हूँ
पूछते निर्वाण के क्यों दीप बुझकर जल रहे हैं—
आज ये क्यों अश्रु उनके चरण धोने चल रहे हैं
कौन जाने साँझ को तुम, प्रीत का इक गीत गाओ !
कौन जाने तुम स्वयं ही, राह के उस पार जाओ !

प्रिय तुम्हारे गीत थे जो, बन गए उपहास मेरा
प्राण, मेरी कल्पना ही ले गई मधुमास मेरा
मिल रहा आह्वान मुझको अब अधूरे गान लेकर—
पग निरन्तर बढ़ रहे पर मौत को मुसकान देकर
कौन जाने अन्त में तुम अश्रु की दो बूँद लाओ !
कौन जाने तुम स्वयं ही, राह के उस पार जाओ !



सरोजिनी कुलश्रेष्ठ

जन्म-स्थान—मथुरा जिले का एक गाँव। **जन्म-तिथि**—सन् १९२३। **विशेष**—एम० ए० (हिन्दी) करके १९५१ में रघुनाथ गर्ल्स कालिज मेरठ में अध्यापन-कार्य। १९५४ में अजमेर के सावित्री गर्ल्स कालिज की अध्यक्षा। आजकल मथुरा के किशोरीरमण गर्ल्स कालिज की प्रधानाचार्या। जयपुर तथा लखनऊ के आकाश वाणी-केन्द्रों पर आयोजित 'स्वर वेला' तथा 'रसवन्ती' कार्यक्रमों में भाग लिया। रेडियो से गीत भी प्रसारित होते रहते हैं। बच्चों के लिए कुछ लोरियाँ, प्रभातियाँ और गीत भी लिखे हैं। 'साधना' नाम से एक कविता-संकलन भी प्रेस में जा रहा है। **स्थायी पता**—किशोरी रमण गर्ल्स डिग्री कालिज, मथुरा।

अपने द्वार मुझे आने दो !

मेरे द्वार न आओ तो प्रिय, अपने द्वार मुझे आने दो !

कभी न मुझको 'प्रेयसि' कहकर,
तुमने अपने पास बुलाया,
पाती भी निष्ठुर कब भेजी,
नित्य प्रतीक्षा में तरसाया ;

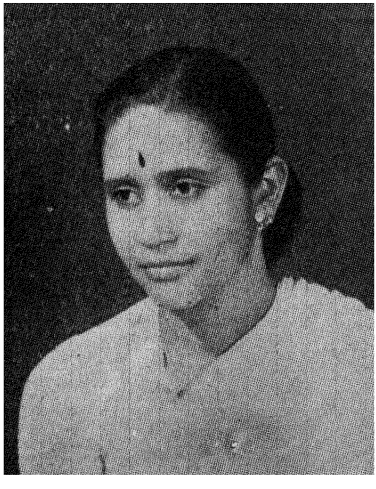
मेरी याद न तुमको आई, अपनी याद मुझे आने दो !
मेरे द्वार न आओ तो प्रिय, अपने द्वार मुझे आने दो !

जब-जब याद तुम्हारी आई,
नैना बरसे जैसे बदली,
हँसी सुबह की बदल गई है,
स्वर्ण लुटाती सन्ध्या बदली;

मेरी पीड़ा मिली न तुमको, अपनी पीर मुझे पाने दो !
मेरे द्वार न आओ तो प्रिय, अपने द्वार मुझे आने दो !

तुमने कहा, 'न आना मुझ तक',
सुनकर प्राण विकल थे कितने,
हुआ मुझे आभास उसी क्षण,
तुम प्राणों को प्रिय थे कितने;

तुम नैनों में रमे न आकर, मुझे जरा-सा रम जाने दो।
मेरे द्वार न आओ तो प्रिय, अपने द्वार मुझे आने दो !



जन्म-स्थान— मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश)। **जन्म-तिथि**— २५ दिसम्बर, १९२६। **शिक्षा**— प्रयाग महिला विद्यापीठ से मैट्रिक करने के उपरान्त 'विशारद' किया। **विशेष**— प्रयाग महिला विद्यापीठ के छात्रावास में रहने के कारण श्रीमती महादेवी वर्मा की छत्रछाया में काव्य की ओर विशेष रुचि हो गई।

सावित्री जायसवाल

विवाह के बाद परिस्थितिवश कुछ वर्ष तक इस क्षेत्र से अलग रहीं। इनकी रचनाएँ प्राय: 'सुधा' में प्रकाशित हुआ करती थीं। आजकल 'सैनिक' तथा 'युवक' में प्रकाशित होती रहती हैं। **स्थायी पता**—द्वारा श्री नरोत्तमदास जायसवाल वकील, नारायण कॉटेज, स्टेशन रोड, इटावा। (उत्तर-प्रदेश)।

मुझे मिले थे प्रियतम रात !

कितना सुन्दर आज प्रभात, मुझे मिले थे प्रियतम रात !

पाते ही प्रिय का सन्देश
आया फिर आनन्द अशेष
पूजन के हित चली थाल ले,
पुलक रहे थे सखि, मम गात !
कितना सुन्दर आज प्रभात !

जब ले चुकी चरण की धूल
हँसे कुसुम शाखा पर झूल
चँवर डुलाती मन्द पवन थी,
झूम रहे थे सब तरु-पात !
मुझे मिले थे प्रियतम रात !

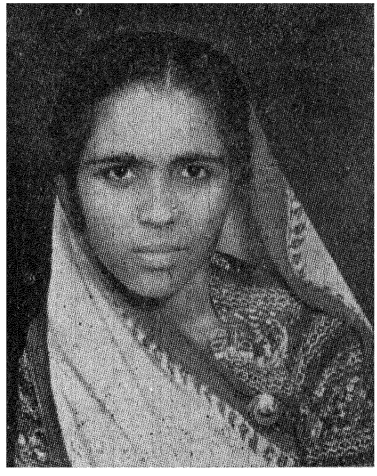
चरणोदक पाने को सत्वर
लहरें लड़ने लगीं परस्पर
ज्वार लगा उठने सागर में,
सखि, प्रिय हैं ऐसे अभिजात !
कितना सुन्दर आज प्रभात !

गीले चरण समीर सुखाती
वारिद बना उसे बरसाती

बुझ जाती सब प्यास धरा की,
यों मेरे प्रिय! सबके तान!
मुझे मिले थे प्रियतम रात;

उस दिन हम बैठे थे तट पर
द्वैत हट गया तब पनघट पर
स्नेह-सुधा से आप्लावित हो,
बीता कितना समय, न ज्ञात!
कितना सुन्दर आज प्रभात,
मुझे मिले थे प्रियतम रात!

जन्म-स्थान—बीकानेर (राजस्थान)। **जन्म-तिथि**—सन् १९३७। **शिक्षा**—एम० ए० (हिन्दी)। **विशेष**—लिखना आठवीं तथा नवी कक्षा से ही शुरू कर दिया था। जब नवी कक्षा में आई तो इनकी रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं में छपनी प्रारम्भ हो गई थीं। पहले आप 'सावित्री सोलंकी' नाम से लिखती थी। **प्रकाशित रचनाएँ**— 'अमिट



सावित्री डागा

निशानी' (कविता-सग्रह), और 'मुक्तावली' (मुक्तक संग्रह)। **अप्रकाशित कृतियाँ**—'कविता की मौत पर' (कहानी-संग्रह) तथा 'दो तार : एक झंकार' (कविता-संग्रह)। आजकल आप गवर्नमेण्ट डिग्री कालिज कालाडेरा (राजस्थान) में हिन्दी की प्राध्यापिक हैं। **स्थायी पता**—मोती चौक, जोधपुर।

तुम आशा बनकर आते हो !

मेरे इस सूने जीवन में, तुम आशा बनकर आते हो !

आ जाती जब नैराश्य-निशा
छा जाता है तम आस-पास,
जीवन का पथ छिप-छिप जाता
हो जाता मेरा मन उदास;
ऐसे में तुम राका-शशि-से, आ मन्द-मन्द मुसकाते हो !
मेरे इस सूने जीवन में, तुम आशा बनकर आते हो !

जीवन के इस सूने नभ में
घनघोर घटा छा जाती है,
सज-धज कर नूतन साज सजा
जब अमा निशा आ जाती है;
ऐसे में तुम खद्योत बने, जगमग जग-ज्योति जगाते हो !
मेरे इस सूने जीवन में, तुम आशा बनकर आते हो !

जीवन के नीरव सपनों को
दुख-शिशिर शून्य कर जाता है,
दावा की जलती लपटों से
जब मृदु उपवन जल जाता है ;
ऐसे में तुम ऋतुराज बने, कोयल-सी कूक सुनाते हो !
मेरे इस सूने जीवन में, तुम आशा बनकर आते हो !

आतुर जग के सब साज क्षणिक
नश्वरता का नर्त्तन होता,
यह देख चकित हो मेरा मन
जग की नादानी पर रोता;
तब तुम्हीं प्रेरणा राग छेड़, नवजीवन-गीत सुनाते हो!
मेरे इस सूने जीवन में, तुम आशा बनकर आते हो!



सावित्री रस्तौगी

जन्म-स्थान—जवाहरनगर, मेरठ छावनी। **जन्म-तिथि**—१६ नवम्बर सन् १९१६। **शिक्षा**—हिन्दी प्रभाकर, साहित्य-रत्न। **विशेष**—सन् १९४२ के आन्दोलन में जेल गई। विशेष रूप से वीर रस, हास्य रस और शृंगार रस की कविताएँ लिखने में अधिक सफलता मिली। रचनाएँ 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान', 'सरिता', 'पराग' तथा 'किरण' आदि पत्र-पत्रिकाओं में ससम्मान प्रकाशित होती रही हैं। आकाश वाणी के नई दिल्ली केन्द्र पर भी रचनाएँ प्रसारित हुई है। **वर्तमान पता**—द्वारा श्री विद्यासागर रस्तौगी, जवाहरनगर, मेरठ छावनी।

तुम न जाओ !

तुम न जाओ प्यार की मनुहार की थाती चुराए,
प्रीति का बादल बलैया ले रहा है !

कौन कहता है कि अनबन की सजा इतनी बड़ी है
मान का पर्दा उठाए मानिनी कब से खड़ी है
तुम न जाओ रेशमी घूँघट बिना कर से उठाए,
नैन का काजल बलैया ले रहा है !
तुम न जाओ प्यार की मनुहार की थाती चुराए,
प्रीति का बादल बलैया ले रहा है !

मौन मुखरित हो उठा अब रागिनी के छन्द फूटे
कोर भीगी आँसुओं से, लोचनों के बन्द टूटे
तुम न जाओ अधभरी गागर पटक पनघट लुटाए,
भीगता आँचल बलैया ले रहा है !
तुम न जाओ प्यार की मनुहार की थाती चुराए,
प्रीति का बादल बलैया ले रहा है !

सो गया उन्माद, हलचल से भरी सुधि की गली है !
चूमने प्रिय के चरण अब लाज की डोली चली है
तुम न जाओ चाह की मृतप्राय-सी अर्थी सजाए,
नेह का द्रुम-दल बलैया ले रहा है !
तुम न जाओ प्यार की मनुहार की थाती चुराए,
प्रीति का बादल बलैया ले रहा है !

जन्म-तिथि—१३ दिसम्बर, १९३१ । **शिक्षा** — इंटर मीडिएट, साहित्य विशारद (हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन) । **विशेष** — एक मध्यमवर्गीय



सावित्री शुक्ल

कान्यकुब्ज मिश्र-परिवार में जन्म । **स्थायी पता**—शुक्ल सदन, देशबन्धुपुरा, इटारसी (मध्य प्रदेश) ।

मीत तुम्हारी सुधि आती है !

दूर चले जाते हो, मुझको मीत तुम्हारी सुधि आती है !

मुझको तुम पर श्रद्धा ऐसी,
जैसे सागर लहराता हो ;
पूनम में जैसे नीला नभ,
अमित विभा से भर जाता हो ;
आँखों से ओझल होने पर, केवल सुधि ही उर भाती है !
दूर चले जाते हो, मुझको मीत तुम्हारी सुधि आती है !

परिभाषा से हीन मीत रे,
मेरा स्नेह सदा जगता है ;
पूर्ण चन्द्र-सा सदा चमकता,
नहीं ज्वार-भाटा बनता है ;
मेरे मन की मीत कहीं पर, कोकिल आम-तले गाती है !
दूर चले जाते हो, मुझको मीत तुम्हारी सुधि आती है !

कौन किसी को सुख दे जाता,
सुख-दुख तो मन में रहते हैं ;
चाहे हँस लो, या सखि रो लो,
हास्य-रुदन सँग-सँग पलते हैं ;
कभी विहँसती, कभी सिहरती, जलती जीवन को बाती है !
दूर चले जाते हो, मुझको मीत तुम्हारी सुधि आती है !



सीता भटनागर

जन्म-स्थान—फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश)। **जन्म-तिथि**—सन् १९२०। **शिक्षा**—एम० ए० (हिन्दी)। **विशेष**—हिन्दी के विख्यात साहित्यकार श्री शम्भूदयाल सकसेना की सुपुत्री और राजस्थान के ज्वलन्त पत्रकार स्व० श्री सम्पत्तिराय भटनागर की पत्नी। राजस्थान-विश्वविद्यालय से राज्य की समस्त छात्राओं में एम० ए० में प्रथम स्थान प्राप्त करने के कारण स्वर्णपदक प्राप्त किया। आजकल बीकानेर के महारानी सुदर्शन कालिज में प्राध्यापिका। इनके गद्य-गीत, गीत, कविताएं और लेख आदि विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। गद्य-गीतों का एक संकलन प्रेस में है। **स्थायी पता**—नवयुग ग्रंथ कुटीर बीकानेर।

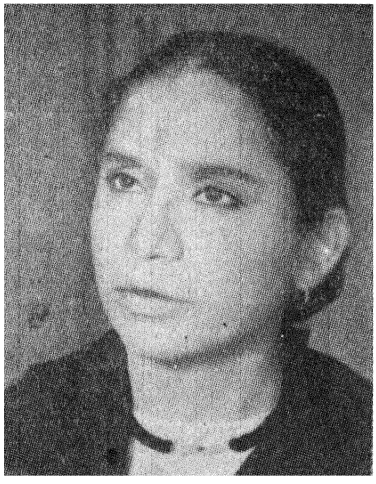
आया कौन रिझाने !

मेरे गीतों की पीड़ा को आया कौन सुलाने ?

आज व्यथा उन्मन सन्ध्या का आँचल रही सँवार
लहर-लहर के अन्तर में है जाने कितना प्यार ?
आज जगी है नयनों के सम्पुट में सोई पीर—
बहते आँसू की लड़ियों को आया कौन हँसाने ?
मेरे गीतों की पीड़ा को आया कौन सुलाने ?

मेरे जीवन के उपवन में पतझड़ की नीरवता
तनहाई में सिसक रही मेरे अन्तर की कविता
अपनी सुरभित मलय-समीरी साँसों के जादू से—
कौन उजड़ते उपवन में आया मधुमास सजाने ?
मेरे गीतों की पीड़ा को आया कौन सुलाने ?

जब तक पीड़ा है तब तक जीने का मोह बना है
अभिलाषा प्रकाश की तब तक जब तक तिमिर घना है
'कोई आएगा' इस आशा में साँसों को पाला—
मेरी तुतलाती आशा को आया कौन रिझाने ?
मेरे गीतों की पीड़ा को आया कौन सुलाने ?



सुदर्शन बाहरी

जन्म-स्थान— स्यालकोट (पाकिस्तान)। **जन्म-तिथि**— २६ अक्तूबर १९२६ **शिक्षा**— प्रभाकर, साहित्य-रत्न, एम० ए० (पंजाब यूनिवर्सिटी से)। **विशेष**—अपनी माता श्रीमती सुशीला पुरी के साहित्य तथा संगीत के प्रति प्रेम के कारण इनका झुकाव भी कविता की ओर हुआ। विवाह से पहले आप 'सुदर्शन पुरी' नाम से लिखती थी। आजकल आप सी० आर० ए० कालिज सोनीपत में प्राध्यापिका है। **वर्तमान-पता**—सी० आर० ए० कालिज, सोनीपत (पंजाब)।

बेसुध प्रीत-कहानी चलती !

रात-रात-भर दीप-शिखा-सी, मन की यह नादानी जलती !
नभ पर चलता चाँद, धरा पर बेसुध प्रीत-कहानी चलती !

युग-युग से वे पहचाने-से,
किन्तु न बनकर आए अपने;
छवि-सुषमा के रंग-बिरंगे,
जाग रहे पलकों में सपने ;
रात-रात-भर विरह-मिलन की, दुनिया सौ-सौ रंग बदलती !
नभ पर चलता चाँद, धरा पर बेसुध प्रीत-कहानी चलती !

पिय को कैसे देखूँ, आगे—
है सुख-दुख का ताना-बाना;
अनजानों को इस बस्ती में,
कौन यहाँ जाना-पहचाना ;
रात-रात-भर नया रूप धर, भ्रान्ति मुझे अनजानी छलती !
रात-रात-भर दीप-शिखा-सी, मन की यह नादानी जलती !

भरकर पगली आस प्राण में,
रस के मधुर गीत मैं गाती ;
सूनेपन में खोई-खोई ,
काँटों की राहें अपनाती ;
रात-रात-भर सुधि-सपनों की, अविरल आनाकानी चलती !
नभ पर चलता चाँद, धरा पर बेसुध प्रीत-कहानी चलती !



सुदेश प्रतिमा

जन्म-स्थान— कामोकी मण्डी, गुजरानवाला (पाकिस्तान)। **जन्म-तिथि**— सन् १९३६। **शिक्षा**—शास्त्री, साहित्य-रत्न; इंगलिश का स्वतंत्र अध्ययन। **विशेष**—संस्कृत साहित्य के प्रकाण्ड पंडित श्री हरनारायण शास्त्री के निरन्तर १० वर्ष के सान्निध्य से साहित्य-क्षेत्र मे पदार्पण। 'मल्लिका' नामक मासिक पत्रिका की सहायक सम्पादिका। **रचनाएँ**— 'स्वप्नवधू' नामक सामाजिक उपन्यास 'मल्लिका' मे धारावाहिक रूप से प्रकाशित हो रहा है। 'अनुभूति पुष्पाजलि' नामक गीत-संग्रह अभी अप्रकाशित है। **स्थायी पता**—द्वारा 'मल्लिका' प्रकाशन, झंडेवालान स्टेट, रानी झाँसी रोड, नई दिल्ली।

कौन मन की पीर जाने !

जो न प्रिय की पीर जाने !
तो भला किनको कहें अपने, तथा किनको बिराने !
जो न प्रिय की पीर जाने !

नयन के निर्मल मुकुर मे,
है लिखी मन की कहानी .
कल्पनाओं के बिरंगे—
फूल-कुल से है सुहानी :
वदन-पट पर हो लिखित, उसको न पढ़ भी सत्य माने !
जो न प्रिय की पीर जाने !

जो हृदय-तल में प्रतिष्ठित,
जो बना सर्वस्व अपना ;
तारिकाओं में बसा रहता–
बना नित एक सपना;
हो वही निष्ठुर पराया, भाव यदि हठ जोड़ ठाने !
कौन मन की पीर जाने !

रट सतत पी-पो जिसे,
अनुराग-युत स्वर से पुकारा;
हो तृषा-बाधित कठिन था–
स्वाति-व्रत-संकल्प धारा ;

दृढ़-व्रती चातक यति को, हाय घन अपना न माने !
कौन मन की पीर जाने ?

बन अधिप तन और मन का,
नित्य जो सन्ताप देता ,
अश्रु अक्षय धार के–
अभिषेक से गुरु दीप्ति लेता ;
अब भला कैसे मनाएँ, जो न फिर भी नेह माने !
कौन मन की पीर जाने !

सुधा जैन



जन्म-स्थान—बिजनौर। **जन्म-तिथि**— फरवरी सन् १९३५। **शिक्षा**—सन् १९५५ में लखनऊ-विश्वविद्यालय से बी० ए०। इसके दो वर्ष बाद आगरा-विश्वविद्यालय से एम० ए०। **विशेष**—बिजनौर के प्रसिद्ध समाज-सेवी श्री रतन-लाल जैन की सुपुत्री। १२-१३ वर्ष की आयु से ही साहित्य में रुचि। तभी से कविताएँ तथा कहानियाँ लिखने लगीं। लेख और गद्य-गीत भी लिखे हैं। चित्र-कला में भी विशेष रुचि है। इनके पति डॉ० इन्द्रसेन जैन पोस्ट ग्रेजुएट इन्स्टीट्यूट फॉर मैडिकल साइन्सेज चण्डीगढ़ में हैं। **वर्तमान पता**—सैक्टर १६ए, हाउस १८ बी, चण्डीगढ़ (पंजाब)।

साँसों का यह रथ चलता है !

प्राण ! तुम्हारे स्मरण-मात्र से,
साँसों का यह रथ चलता है !
प्रिय ! तुम स्नेह-छाँह देते हो,
मेरा सुधि-प्रदीप जलता है !

नयनों में है जितने सपने
पद्म-पत्र-से लगते कँपने
और तुम्हारी निष्ठुरता का,
हिम खण्डित होकर गलता है !
प्राण ! तुम्हारे स्मरण-मात्र से,
साँसों का यह रथ चलता है !

तुमसे ही मन-वीणा वन्दित
तुमसे ही जीवन है स्पन्दित
शून्य क्षणों में नेह तुम्हारा,
जल बन पलकों से ढलता है !
प्रिय ! तुम स्नेह छाँह देते हो,
मेरा सुधि-प्रदीप जलता है !

सुधा बलबीर



जन्म-स्थान—मेरठ। **जन्म-तिथि**—१८ मई, सन् १९३५। **शिक्षा**—एम० ए०, पी-एच० डी० (आगरा विश्वविद्यालय से)। **विशेष**—'विभिन्न युगों में सीता का चरित्र-चित्रण और तुलसीदास में उसकी चरम परिणति' विषय पर शोध निबन्ध लिखा। जुलाई १९६१ से वर्धमान कालिज बिजनौर में हिन्दी की प्राध्यापिका। **स्थायी पता**— सुमति सदन, महात्मा गाँधी रोड, मेरठ।

मुसकाने को इन्सान बना !

मुझसे मुरझाया चाँद कहा करता है यों
'आँसू पी-पी मुसकाने को इन्सान बना !'

जब निशा कालिमामय अंचल
फैला देती है धरती पर
जब सूने पथ हो जाते हैं
रो देता है जब यह अम्बर

तब राही का भीगा-सा स्वर यह कहता है—
'सुनसान डगर में गाने को ही गान बना !'
मुझसे मुरझाया चाँद कहा करता है यों—
'आँसू पी-पी मुसकाने को इन्सान बना !'

मैं आँसू के खारे जल से
प्रस्तर प्रतिमा को नहलाती
उसके कानों तक यह मेरी,
पागल पुकार कब जा पाती ?
देवालय के घंटे मुझसे यों कहते हैं—
'मानव को छलने ही को तो पाषाण बना !'
मुझसे मुरझाया चाँद कहा करता है यों—
'आँसू पी-पी मुसकाने को इन्सान बना !'

जब एक मृत्यु के अंचल में
सौ-सौ आशाएँ सो जातीं

जब क्रूर मृत्यु के आँचल में
सपनों की लड़ियाँ खो जाती
तब जलती-बुझती चिता सिसकती-सी यों कहती है—
'जल-जलकर मिट जाने ही को अरमान बना !'
मुझमें मुरझाया चाँद कहा करता है यों—
'आँसू पी-पी मुसकाने को इन्सान बना !'

जन्म - स्थान— दिल्ली। **जन्म - तिथि**— २८ फरवरी १९३३। **शिक्षा**—दिल्ली-विश्व-विद्यालय से एम० ए० (हिन्दी) प्रथम श्रेणी में। **विशेष**—



सुधा शर्मा

आकाश वाणी नई दिल्ली से महिलाओं के कार्यक्रम के अन्त-र्गत रचनाएँ प्रसारित होती रहती हैं। **स्थायी पता**—अध्या-पिका मिराण्डा हाउस, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

न छलक जाया करते हैं !

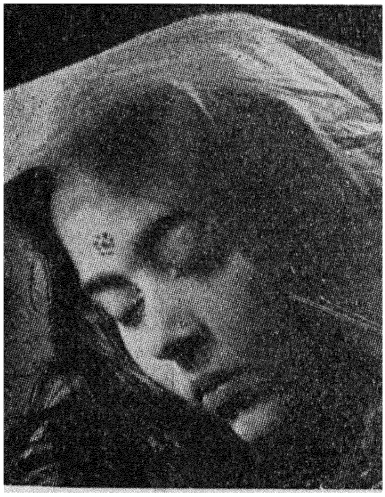
मादक सपनों में अलसाती
रजनी जब इठलाती आती
तारों के मिस किसके दोनों नैन चमक जाया करते हैं !
नैन छलक जाया करते हैं !

बीत गई वह स्वर्णिम बेला
जब यौवन-संग यौवन खेला
और याद कर बिगत दिनों को, रोम पुलक जाया करते हैं !
नैन छलक जाया करते हैं !

दूर कहीं बजती शहनाई
पीड़ा उर में बड़ी समाई
शबनम के मिस युगल दृगों से, अश्रु ढुलक जाया करते हैं !
नैन छलक जाया करते हैं !

आँसू का इतिहास छिपाए
जीवन का परिहास समाए
निठुर धरा पर किसके बिछुड़े, गान सुबक जाया करते हैं !
नैन छलक जाया करते हैं !

जन्म - स्थान— बिजनौर (उत्तर प्रदेश)। **जन्म-तिथि**— अक्तूबर १९३२। **शिक्षा**— प्रारम्भिक शिक्षा बिजनौर में और बाद की बनारस मे। बी० ए०। आजकल हिन्दू-विश्व-



सुधारानी शर्मा

विद्यालय मे संगीत की उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही है। **वर्तमान स्थायी पता**—द्वारा श्री के० सी० शर्मा, डी० एस० पी० (सी० आई० डी०) नवाबगंज, वाराणसी।

मृदु प्यार लुटा बैठी हूं !

जीवन का सचित प्यार लुटा बठी हूँ,
जीवन का सब व्यापार लुटा बैठी हूँ ;
मेरा हँसना, मेरा रोना ही क्या है—
जीवन का अपने सार लुटा बैठी हूँ !

मै मिटी, मगर उन्माद न मिटने पाया ,
मैं गिरी, मगर अभिमान न गिरने पाया,
अधखिली कली भी सूख चली जीवन की—
मृदु सौरभ का मृदु प्यार लुटा बैठी हूँ !

बन विश्व-लांछना आज जिया करती हूँ ,
बन भ्रान्त पथिक-सी आज चला करती हूँ;
आशा जिसकी करने पर भी मुश्किल है—
वह जीवन का उपहार लुटा बैठी हूँ !

सन्दिग्ध दृष्टि जो गड़ी, गड़ी रहने दी,
अँगुली जो उठी, उठी मैंने रहने दी ;
सब-कुछ तो सहा, रहा अब क्या सहने को—
आँखों का पानी आज लुटा बैठी हूँ !

अपना अतीत कैसे भूलूँ, जो देखा,
जो रही याद वह, बनी भाग्य की रेखा;

तुममें ही सारा विश्व, विश्व की झाँकी—
तुममें ही तो उद्‌गार लुटा बैठी हूँ !

गर शान्ति नहीं, चिर शान्ति भले मिल जावे,
गर तुम्हें नहीं, तो प्यार अमरता लावे ;
किस आशा पर यह शुष्क हृदय लहराए—
जीवन का जब आधार लुटा बैठी हूँ !

जन्म - स्थान— दिल्ली। **जन्म-तिथि**—१९ जुलाई, सन् १९३७। **विशेष**—संगीत और काव्य में विशेष अभिरुचि रखती हैं तथा काव्य को जीवन की अनिवार्य आवश्यकता के रूप



सुप्रभा व्यास

में समादृत करती हैं। आजकल आर्य हायर सेकेण्डरी स्कूल चावड़ी बाज़ार में संगीत-शिक्षिका हैं। **वर्तमान पता**—२६/२९ ईस्ट पटेलनगर, नई दिल्ली।

अपना संसार लुटा बैठी हूँ !

एसा अन्धड़ आया, मै सब होश गँवा बैठी हूँ !
किस पथ जाना था मुझको, मै किस पथ आ बैठी हूँ ?

मेरा जो कुछ है उसको मुझ तक सीमित रहने दो !
प्रश्न करो मत, किसी तरह दो क्षण जीवित रहने दो !
मत पूछो, मै क्यों अपना जीवन उलझा बैठी हूँ ?
क्यों अपने पाँवों में बेड़ी खुद पहना बैठी हूँ ?

दर्द तुम्हीने दिया, तुम्ही अब लौटाओगे कैसे ?
मत पोंछो मेरे आँसू, बहने दो निर्झर-जैसे !
नेह-सँजोई अपनी सारी साध मिटा बैठी हूँ !
अपने ही हाथों अपना ससार लुटा बैठी हूँ !

मैं अभिशापित हूँ, मुझसे वरदान नही माँगो तुम !
मसली हुई कली से नव मुसकान नही माँगो तुम !
मै अपने तन-मन में दीपक-राग जगा बैठी हूँ !
नही बुझा करती जो, ऐसी आग लगा बैठी हूँ !

जन्म - स्थान— मुहल्ला निहालपुर, इलाहाबाद। **जन्म-तिथि**—सन् १९०४। **निधन-तिथि**—१५ फरवरी १९४८। **विशेष**—'झाँसी वाली रानी' नामक प्रख्यात रचना की कवयित्री। छात्र-जीवन से ही कविता लिखना आरम्भ कर दिया था। धीरे-धीरे इनकी कविताएँ हिन्दी के सभी प्रतिष्ठित पत्रों में प्रकाशित होने लगी



स्व० सुभद्राकुमारी चौहान

थी। १६ वर्ष की आयु में ठा० लक्ष्मणसिंह चौहान से विवाह होने के उपरान्त राष्ट्रीय क्षेत्र में कूद पड़ीं। **कविता-संग्रह**—'त्रिधारा', 'मुकुल', 'बिखरे मोती' (कहानी संग्रह)। आपका कार्य-क्षेत्र मुख्यतः जबलपुर ही रहा था। वहाँ पर एक 'स्मारक' बनाने के साथ-साथ आपकी स्मृति में 'सुभद्रानगर' नामक नगर भी बसाया गया है।

हठीली आँखें अड़ ही गईं !

प्रथम जब उनके दर्शन हुए, हठीली आँखें अड़ ही गईं !
बिना परिचय के एकाएक, हृदय में उलझन पड़ ही गई !
हठीली आँखें अड़ ही गईं !

मूँदने पर भी दोनों नेत्र, खड़े दिखते सम्मुख साकार,
पुतलियों में उनकी छवि श्याम मोहिनी जीवित जड़ ही गई!
हठीली आँखें अड़ ही गईं !

भूल जाने को उनकी याद, किये कितने ही तो उपचार,
किन्तु उनकी वह मंजुल मूर्ति, छाप-सी दिल पर पड़ ही गई!
हठीली आँखें अड़ ही गईं !

जन्म-स्थान— बरेली । **जन्म-तिथि**—संवत् १९८५ । **शिक्षा**— बी० ए० (प्रयाग-विश्वविद्यालय से), एम० ए० (हिन्दी) आगरा-विश्वविद्यालय से । बी० ए० तक संगीत की भी शिक्षा प्राप्त की । **विशेष**— आपके पिता श्री सुवेंद शास्त्री बरेली नगर



सुमंगलाकुमारी मिश्र 'प्रभा'

के प्रमुख वैद्य है । आपका लालन-पालन सुप्रसिद्ध कथा-वाचक गोस्वामी बिन्दु जी महाराज (आपके ताऊ) के निरीक्षण में हुआ । आजकल आप बदायूँ की पार्वती आर्य कन्या पाठशाला में संगीत-शिक्षिका है । **प्रकाशित रचनाएँ**—'प्रतिध्वनि' । **स्थायी पता**—बारी टोला, बरेली ।

मधुर गीत मेरे मुखर हो गए !

जब तिमिर की यवनिका गिरी सिन्धु में,
तब मधुर गीत मेरे मुखर हो गए !

रत्न चमके निशा के अलक-जाल में
और चमका रजत रूप शैवाल में,
रश्मि-रथ पर स्वय जब समारूढ़ हो
मुसकराने लगे तुम सुधा-जाल में;
जब तुम्हारा हृदय प्रश्न के चिह्न-सा
ओस का कण बना सामने आ गया
राह में बिछ गए हीरकों के मुकुर,
तब मधुर गीत मेरे मुखर हो गए !

सप्त स्वर सागरों पर विहरने लगे
लहरियों पर सुधा-ध्वज फहरने लगे,
चित्र शत-शत तुम्हारे सलिल-राशि में
मौन मनुहार बनकर छहरने लगे ;
दीप पर मन्त्रणा-रत हुए जब शलभ,
तब मधुर गीत मेरे मुखर हो गए !
जब तिमिर की यवनिका गिरी सिन्धु में,
तब मधुर गीत मेरे मुखर हो गए !

जन्म-स्थान— लखनऊ। **जन्म - तिथि**— विजय दशमी सन् १९१४। **विशेष**—हिन्दी की प्रतिष्ठित कवयित्रियों में अग्रणी। लखनऊ-निवासी प्रसिद्ध विज्ञानाचार्य डॉ० महेशचरण सिनहा की सुपुत्री। आपके पहले कविता-संग्रह 'विहाग पर हिन्दी - साहित्य-सम्मेलन ने सेकसरिया-पुरस्कार प्रदान



सुमित्राकुमारी सिनहा

किया। **प्रकाशित रचनाएँ**— 'अचल सुहाग', 'वर्ष गाँठ', 'मुलगते कोयले', 'कथा-कुज' (कहानी-पंग्रह); 'विहाग' 'आशा पर्व', 'पंथिनी', 'आँगन के फूल', 'बोलों के देवता' (कविता संग्रह); 'प्रसारिणी', 'दादी का मटका', 'पर्व पंचमी' (संगीत-रूपक)। **वर्तमान पता**— आकाश वाणी, लखनऊ।

भगवान् एक पर मेरा है !

मै हर मन्दिर के पट पर अर्घ्य चढ़ाती हूँ,
भगवान् एक पर मेरा है !

मन्दिर-मन्दिर में भेद न कुछ मैं पाती
है सिद्धि जहाँ, साधना वही पर आती
मन की गरिमा जिसके आगे झुक जाती
वाणी वर का अभिषेक वहीं पर पाती
मैं हर पूजन-अर्चन पर शीश झुकाती हूँ,
अभिमान एक पर मेरा है !

कलियों, फूलों पर किरनें प्यार लुटातीं
नभ से आतीं माटी-कन में छा जातीं
पर क्या कलियों, फूलों में ही बस जातीं
सूरज की किरनें सूरज के सँग जातीं
मैं किरन-किरन को श्री पर प्यार लुटाती हूँ,
दिनमान एक पर मेरा है !

मन ही तो शाश्वत स्नेह प्रेम का बन्धन,
आगे तन की गति क्रिया व्यर्थ का क्रन्दन,
यह पूजा भक्ति प्रार्थना-नत अभिनन्दन !
मन की महिमा–गरिमा का करते वन्दन !

मैं हर अशीष मन को स्वीकार कराती हूँ,
वरदान एक पर मेरा है !
मैं हर मन्दिर के पट पर अर्घ्य चढ़ाती हूँ,
भगवान् एक पर मेरा है !

जन्म - स्थान— खण्डवा (मध्य प्रदेश)। जन्म-तिथि— ६ अक्तूबर १९२७। शिक्षा— एम० ए०, बी० टी०। विशेष- आपके पिता डॉ० बद्रीनारायण



सुलोचना पँवार

खण्डवा के प्रख्यात समाज-सेवी नेता हैं। पति श्री जगमोहन पँवार भी अच्छे डॉक्टर हैं। **स्थायी पता**—४८ हजरत गंज, लखनऊ।

प्रिय ! कैसी यह मेरी उलझन ?

जब मेरे मधु-सिंचित पथ पर, तुम बन आते मेरे पाहुन
तब क्यों इन भोले नयनों को, छा लेते उमड़े सावन-घन
धुँधली मिटती-सी छाया छू, जग उठता निद्रित-सा स्पन्दन
फिर मुसकाने को आकुल क्यों, बल खाता रह जाता क्रन्दन !
प्रिय कैसी यह मेरी उलझन ?

जाने किस पीड़ा को सिहरन, भरती तन-मन में मृदु कम्पन
बिन बाँधे बेसुध बँध जाती, कितना मायावी यह बन्धन
अनजाने पलकों से ढुलकर, ओठों पर लहराता रोदन
किस छलना में आ लुट जाता, जीवन का संचित कंचन मन !
प्रिय कैसी यह मेरी उलझन !

मिलन-उदधि के पार न जाने, कौन खड़ा देता आमन्त्रण
औ' सरिता के युग कूलों का, विस्मय कैसा यह आलिंगन
तुमको आँखों में भरने के पहले ही नत होती चितवन
सुलझाने ज्यों ही जाती हूँ, बढ़ जाती क्यों उतनी उलझन ?
प्रिय कैसी यह मेरी उलझन ?

जन्म-स्थान— बलरामपुर (गोंडा), उत्तर प्रदेश । **जन्म-तिथि**—१७ नवम्बर १९२७ । **विशेष**—बचपन से ही हिन्दी-साहित्य में रुचि । उपन्यास ही अधिक लिखे,कविताएँ कम ।



सुशीला 'कंचन'

पहला उपन्यास 'जलते दीप' है । आकाश वाणी के लखनऊ केन्द्र से आपकी कहानियाँ प्रसारित होती रहती हैं । **वर्तमान पता**—द्वारा श्री हरकरननाथ सक्सेना, मालीखाँ सराय, लखनऊ ।

थकी जा रही तुम्हें बुलाते !

विरह-वेदना विस्मृत कर अब,
कौन देश प्रियतम तुम धाए ;
जब निज संचित अभिलाषा के
मैंने तुम पर पुष्प चढ़ाए ;
तुमसे होकर विलग आज प्रिय, नयन-युगल हैं भर-भर आते !

तुमने मेरा हृदय चुराया
फिर भी चोर नहीं कहलाए ;
तुम अपराधी, तुम हो छलिया
फिर भी मेरे मन को भाए ;
नोड़ छोड़ कित लिया बसेरा, इतना आकर बतला जाते ?

प्रेम-मन्त्र पढ़कर ओ निष्ठुर
दूर निवास किया है जाकर ;
अबला होकर बिलख रही हूँ
दर्द लिया है तुमको पाकर ;
फिर भी तुमको दया न आती, थकी जा रही तुम्हें बुलाते !

रातें कटतीं गिन - गिन तारे
दिन ढलता प्रतिबिम्ब सहारे ;
निशि - दिन बाट तुम्हारी देखूँ
बुझे न मन की प्यास हमारे ;
प्रीत-दीप लेकर हाथों में, भूल गए तुम जाते-जाते !

मूर्ति तुम्हारी मुझे रुलाती
बीते दिन की याद दिलाती
विह्वल हो मैं तुम्हें टेरती
उत्तर में मेरी ध्वनि आती ;
मन का दीप बुझा, लुट जाऊँगी मैं प्राण ! तुम्हारे आते !

सुशीला सरीन



जन्म-स्थान—कासगंज (एटा), उत्तर प्रदेश। **जन्म-तिथि**—१३ अक्तूबर, १९२९। **शिक्षा**—वनस्थली विद्यापीठ जयपुर से मैट्रिक। बाद में जयपुर से इण्टर और वहीं से बी० ए० की तैयारी। अचानक अस्वस्थ हो जाने के कारण पढ़ाई रुक गई। **विशेष**—नन्हे मुन्नों के लिए स्वस्थ, सरल, सरस साहित्य-सृजन करने में रुचि। आजकल सपनों के सागर में लहराने का काम ही शेष है। कहानी तथा कविताएँ लिखने-पढ़ने का चाव है। कुछ रचनाएँ 'सरिता', 'विश्व ज्योति', 'भारती', 'बानर' तथा 'नवभारत टाइम्स' आदि में प्रकाशित, प्रचारित और पुरस्कृत भी हुई हैं। **वर्तमान पता**—द्वारा श्री प्रेम-सुन्दर सरीन ओवरसियर, सिंचाई विभाग, टोंक (राजस्थान)।

सावन गीला है !

गहरा दे यह प्राण, कि सावन गीला है !

आज मिलन को अंचल बहका,
बेसुधा है सब मन का प्यार ;
सपनों से यह बोझिल तनवा,
अंगडाई में नया खुमार;
गहरा दे यह प्राण, कि दामन ढीला है !
सावन गीला है !

चुम्बन को दो अधर तरसते,
चितवन में सौ-सौ मनुहार;
आज मरकता इस चोली में,
सँभल न पाता यौवन-भार;
गहरा दे यह प्राण, कि रूप रसीला है !
सावन गीला है !

आज गोरी की अलकें भींगी,
चूनर में है नई भटक;
और नवेली इन बाँहों में,
बड़ी मिलन की प्राण ! ललक;
गहरा दे यह प्राण, कि परस नशीला है !
गहरा दे यह प्राण, कि सावन गीला है !

जन्म-स्थान—मेरठ। **जन्म-तिथि**—सन् १९१८। **निधन-तिथि**—१७ नवम्बर, सन् १९५२। **शिक्षा**—महिला विद्यापीठ प्रयाग की 'विद्याविनोदिनी'। इसके अतिरिक्त घर पर ही हिन्दी तथा संस्कृत का अध्ययन किया। **विशेष**—सन् १९३० में श्री लक्ष्मण त्रिपाठी एम० ए० से विवाह, जो उन दिनों मेरठ



स्व० सुशीला त्रिपाठी

कालिज के छात्र थे, और बाद में प्रख्यात क्रान्तिकारी, पत्रकार तथा लेखक के रूप में प्रख्यात हुए। **साहित्यिक कार्य**—इनकी पहली कविताएँ और कहानियाँ 'हिन्दी प्रचारक' मद्रास मे प्रकाशित हुई। बाद में 'प्रदीप' (मुरादाबाद), 'अरावली' (अलवर), 'अरुण' (मुरादाबाद, तथा 'नव ज्योति' अजमेर में प्रकाशित होती रही थीं।

क्या याद हमारी आती ?

हे कारावासी योगी ! क्या याद हमारी आती ?

मैंने तुझको, अपने हाथों भेजा है—
आरती उतारी — जयमाला पहनाई !
इसलिए विधाता से न शिकायत ही है.
क्यों मुझको तुमसे, असमय मिली जुदाई !
फिर भी हे कारावासी ! लिखती हूँ पुलकित पाती !
हे कारावासी योगी ! क्या याद हमारी आती ?

तू माँ की सेवा-हित, प्राणों की बाजी—
है लगा रहा, कारा के तहखानों में !
मेरे स्नेहाश्रु बुझाएँगे, कुछ तेरी—
निर्मम पीड़ा की तपन, व्यथित प्राणों में !
यदि विहगी मैं होती प्रिय ! तो निश्चय ही उड़ आती !
हे कारावासी योगी ! क्या याद हमारी आती !

हे कारावासी योगी ! धीरज धरना !
माँ के बन्धन कट जाएँगे — फिर तेरे—
पथ में पलकों के बिछा पाँवड़े, तेरी—
यह चेरी, तेरे स्वागत में बलि होगी—
फिर मधुर मिलन से शीतल करने छाती !
हे कारावासी योगी ! नित तेरी याद सताती !
क्या याद हमारी आती ?

सूर्यदेवी दीक्षित 'उषा'



जन्म-स्थान—ग्राम गजपुर (गोरखपुर), उत्तर प्रदेश। **जन्म-तिथि**—१ अक्तूबर सन् १९०१। **विशेष**—हिन्दी के सुप्रसिद्ध प्राचीन कवि मनन्न द्विवेदी 'गजपुरी' और ख्याति-प्राप्त आलोचक डॉक्टर रामअवध द्विवेदी (भूतपूर्व रीडर काशी विश्वविद्यालय) की छोटी बहन। सन् १९१५ में श्री उमाशंकर दीक्षित के साथ विवाह। दीक्षित जी आजकल कानपुर नगर महापालिका के शिक्षा-विभाग में सुपरिंटेण्डेण्ट हैं। आपकी कृति 'निर्झरिणी' पर अ० भा० हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के शिमला-अधिवेशन में सेकसरिया-पुरस्कार दिया गया था। **स्थायी पता**—कानपुर।

और कस दो प्रेम का बन्धन !

और कस दो प्रेम का बन्धन, तनिक मेरे हृदय-धन !

प्रेम-गगा में हमारे धुल पुरातन पाप जाएँ
प्रेम के वरदान से अब मिट सकल अभिशाप जाएँ
प्रेम-सरिता में अरे बह सकल उर-सन्ताप जाए
देव पाऊँ मुक्ति-भिक्षा, बन्दिनी मैं प्रेम की बन !
और कस दो प्रेम का बन्धन, तनिक मेरे हृदय-धन !

स्नेह का नव इन्दु नित विहँसे हमारे उर-गगन में
प्राण-पंथी नित करे क्रीड़ा मुदित मानस-भवन में
कोकिला-सी मुदित मै डोलूँ सुहृद इस प्रेम-वन में
स्नेह की मदिरा मधुर पीता रहे चंचल चपल मन !
और कस दो प्रेम का बन्धन, तनिक मेरे हृदय-धन !

प्रेम की दीक्षा मिली थी प्रिय मिलन को शुभ घड़ी में
भार जब लादा गया कर्तव्य-जीवन को तरी में
बह चली जीवन-तरी जब प्रेम की उस सुरसरी में
हो गया पावन उसी दिन देव मेरा पतित जीवन !
और कस दो प्रेम का बन्धन, तनिक मेरे हृदय-धन !

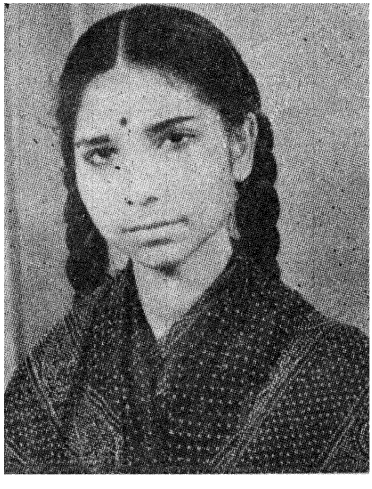
छवि तुम्हारी नयन-सम्पुट में बसी, बन मंजु मोती
कामना के कुञ्ज में कल्याण की शुभ साध सोती
प्रेम के साम्राज्य में प्रिय, मैं जगत्-जंजाल खोती

प्राण ! मेरे तृषित चातक के सजल स्वाती सघन घन !
और कस दो प्रेम का बन्धन, तनिक मेरे हृदय-धन !

उर-कमल-विकसित-करन दुख-तम-हरन ओ अशुमाली !
लहरते जीवन सरस मधुमास के ओ मंजु माली !
छलकती तव स्नेह-रस से सतत मेरी प्राण-प्याली
भाव के भण्डार जीवित कल्पना के कलित कानन !
और कस दो प्रेम का बन्धन, तनिक मेरे हृदय-धन !

देव पग-पग पर उलझती जब कठिन जीवन-पहेली
तब तुम्हारी याद शुभ बनती हमारी चिर सहेली
देख यह शशि-मुख तुम्हारा कौन-सी विपता न झेली
प्राण के ओ प्राण ! मेरे मन-हरन! ओ दुख-विमोचन !
और कस दो प्रेम का बन्धन, तनिक मेरे हृदय-धन !

साध है श्री चरण में मिल जाय यह अस्तित्व मेरा
उर-सदन में हो तुम्हारी, मूर्ति मंजुल का बसेरा
धर्म की शुभ भावनाएँ दें सदा उर-बीच फेरा
चरण-कमलों में हमारी कल्पना के कण समर्पण !
और कस दो प्रेम का बन्धन, तनिक मेरे हृदय-धन !



सूर्यबाला श्रीवास्तव

जन्म-स्थान— मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश) । **जन्म-तिथि**—२२ अक्तूबर १९४३ । **शिक्षा**—हिन्दू विश्वविद्यालय में एम० ए० की छात्रा । **विशेष**—प्रारम्भ से अब तक का समय प्रायः वाराणसी में ही व्यतीत हुआ। ८ वर्ष की अवस्था में सर्व प्रथम 'बाँसुरी' शीर्षक कविता लिखी। छात्र-जीवन में अभिनय में रुचि होने के कारण एकांकी भी लिखकर अभिनीत कराए। रचनाएँ प्रायः दैनिक 'आज' में प्रकाशित होती रहती है। **स्थायी पता**—सी ७। २१८ सेनपुरा, चेतगंज, वाराणसी।

अर्चना का एक यह अधिकार ?

दीप जल-जल बुझ रहे है,
झर रहे हैं पुष्प क्षण-क्षण ;
क्षीण होती जा रही लौ-
विकल अन्तिम नील कम्पन,
शिखा का प्रत्येक कम्पन ले लिया उपहार में, अब-
शेष केवल धूम का ससार भी रहने न दोगे ?
अर्चना का एक यह अधिकार भी रहने न दोगे ?

ढह गया सपना नयन का,
रश्मि सँग पलके खुलीं जब ;
किन्तु सुधि ढलने न पाई,
छिपी, पलकों में उलझकर ;
और छलकी नयन में, ज्यों ओस छलकी अवनी-तल पर-
अश्रु, सुधि का सजल-सा अभिसार भी रहने न दोगे ?
अर्चना का एक यह अधिकार भी रहने न दोगे ?

विकल मन के तार सब,
ध्वनि की लहर में खो चुके हैं ;
करुण अपनी गूंज देकर-
गीत के स्वर सो चुके हैं ;
मिट चुके सब स्वर, तुम्हारी वन्दना से ही सजे थे-
साँस की अब बेसुरी झकार भी रहने न दोगे ?
अर्चना का एक यह अधिकार भी रहने न दोगे ?

चित्र था वह, या प्रणय की-
रँग-भरी अभिव्यञ्जना थी ;
तूलिका ही चित्रमय होकर-
निजत्व मिटा चुकी थी ;
नेह-भर देखा न तुमने, पुँछ गया शृङ्गार सारा
धुल रहे सब रग, क्या आकार भी रहने न दोगे ?
अर्चना का एक यह अधिकार भी रहने न दोगे ?

जन्म - स्थान — हाथरस (अलीगढ़), उत्तर प्रदेश। **जन्म-तिथि**—७ जून, सन् १९३८। **शिक्षा**—एम० ए० (हिन्दी), साहित्य-रत्न, सरस्वती। **विशेष** — लोक-जीवन-विषयक अनेक निबन्ध लिखे हैं। 'नवसत में मेंहदी' तथा 'भारतीय सौभाग्य-चिन्ह बिन्दी' आपके अनुसन्धानपरक निबन्ध



हर्षनन्दिनी भाटिया

हैं। आप संगीत में भी विशेष रुचि रखती है। मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ में हिन्दी तथा संस्कृत-विभाग के प्राध्यापक डॉ० कैलाशचन्द्र भाटिया की सहधर्मिणी। **वर्तमान पता** — प्रधानाचार्या भारती महिला विद्यालय, गांधी पार्क, अलीगढ़।

आ भी जा ओ मीत !

निपट अजानी पीड़ा भर दी, निष्ठुर ! प्राणों में !

तरी कूल उतरी, कि प्रबल झंझा से टकरा दी,
कली तनिक विहँसी, कि चुभन शूलों की बिखरा दी ;
अमिट निराशा-सी छाई, उठते अरमानों में !
निपट अजानी पीड़ा भर दी, निष्ठुर ! प्राणों में !

व्यर्थ शलभ की शपथ रही, व्यवहार भ्रमर का है,
बात हुई थी आँगन की, स्वर किन्तु समर का है ;
कहाँ मिल गया गरल, सुधा-सी उन पहचानों में !
निपट अजानी पीड़ा भर दी, निष्ठुर ! प्राणों में ;

आ भी जा ओ मीत, कि दृढ़तर हुआ प्रणय-बन्धन,
खुले द्वार पर टिके नयन, दुहराते आमन्त्रण ;
स्वयं उभर आई बे-परदी मृदु मुसकानों में !
निपट अजानी पीड़ा भर दी, निष्ठुर ! प्राणों में !

जन्म - स्थान— खण्डवा (मध्य प्रदेश)। **जन्म-तिथि**— २ मई सन् १९१५। **शिक्षा**— जबलपुर के महिला नार्मल स्कूल में शिक्षा ग्रहण ही कर रही थीं कि आपका विवाह हो गया। **विशेष**–हिन्दी के प्रख्यात



हीरादेवी चतुर्वेदी

पत्रकार, लेखक और 'सरस्वती' के भूतपूर्व सम्पादक श्री देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त' की धर्मपत्नी। **प्रकाशित रचनाए**— 'मंजरी', 'नीलम', 'मधुवन'। **स्थायी पता**–द्वारा श्री देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त', सूचना विभाग, मध्य प्रदेश, ग्वालियर।

जाने कैसा उनका प्यार ?

नहीं समझ जो पाती हूँ मैं, कौतुक अपरम्पार !
जाने कैसा उनका प्यार ?

कहते रहते यही सदा वे, 'प्रेयसि ! प्राणाधार,
संसृति के कण-कण में तेरा, लेता रूप निहार !'
जाने कैसा उनका प्यार ?

तिमिर-पूर्ण-सी घोर निशा में, कहते यही पुकार–
'रूपसि ! तेरी जगमग, जगमग, दिखती छटा अपार !'
जाने कैसा उनका प्यार ?

उच्छल सरिता में भी जाकर, लखकर निज मनुहार ;
कहते मुझसे 'तुम्हें देखता, लहरों में साकार !'
जाने कैसा उनका प्यार ?

कहूँ इसे मैं उनका केवल, पागल-सा व्यापार,
या अपना ही कहूँ इसे मैं, चिर अज्ञान अपार !
जाने कैसा उनका प्यार ?

जन्म - स्थान—मेरठ के प्रसिद्ध पत्थर वाले खानदान में। **जन्म-तिथि**—मार्ग शीर्ष कृष्णा ५ संवत् १९५९ वि०। **निधन - तिथि — ३ फरवरी, १९५१। विशेष**—हिन्दी की प्रख्यात कवयित्री और कहानी-लेखिका। **प्रकाशित रचनाएँ**—कविता-संग्रह: 'उद्गार' (१९३६), 'अर्घ' (१९३९), 'प्रतिछाया'



स्व० होमवती देवी

(१९३९ में श्री कृष्णचन्द्र शर्मा 'चन्द्र' और श्री विश्व-प्रकाश दीक्षित 'बटुक' के साथ सम्मिलित रूप में)। 'निःस्पन्द' और अन्य कविताएँ अप्रकाशित। कहानी संग्रह निसर्ग (१९३९), 'धरोहर' (१९४६), 'स्वप्न-भंग' (१९४८), 'अपना घर' (१९५०)। कुछ गद्य-काव्य भी लिखे थे, जो कुछ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए थे।

कैसे गीली पलकें खोलूँ ?

मुसकाती ऊषा के सम्मुख, कैसे गीली पलकें खोलूँ ?
किस आशा के उजियाले में, मन के मनके बैठ पिरो लूँ !

सब कहते हैं हुआ सवेरा
छोड़ चले पक्षी-गण डेरा
मैं पंखों में क्या बल लेकर, उड़ जाऊँ, किस तरु पर बोलूँ ?
मुसकाती ऊषा के सम्मुख, कैसे गीली पलकें खोलूँ ?

गाने दो यदि खग गाते हैं,
गीत मुझे अब कब भाते है ?
रहने दो चुपचाप मुझे, मैं भार हृदय-पीड़ा का ढो लूँ।
मुसकाती ऊषा के सम्मुख, कैसे गीली पलकें खोलूँ

सुख-सपनों में बिहरूँ पल-पल
खोकर व्यथा पुरानी अविकल
कब सम्भव है मधुमय आसव, टूटी उर-प्याली में घोलूँ।
मुसकाती ऊषा के सम्मुख, कैसे गीली पलकें खोलूँ ?

किसको मानूँ अपना जग में
साथी जो था भूला मग में
किसके हित अब मृत प्राणों में, मैं जीवन-भर जागृत हो लूँ !
मुसकाती ऊषा के सम्मुख, कैसे गीली पलकें खो लूँ ?

जन्म-स्थान—मुरादाबाद। **जन्म-तिथि**—दिसम्बर, १९३०। **शिक्षा**—प्राइमरी तक बरेली में, ९ वीं क्लास महिला विद्यालय लखनऊ से; मैट्रिक १९४५ में नागपुर से; इण्टर भी वहीं से; १९४९ में आगरा से बी० ए०; उस्मानिया-विश्वविद्यालय से १९५२ में एम० ए०। **विशेष**—कई वर्ष पहले तक इनके लेख



ज्ञान अस्थाना

और कविताएँ 'कमल', 'गृहिणी', 'धर्मयुग', 'सरिता', 'नारी', 'अभियान', 'अजन्ता' तथा 'समाज' आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई। आजकल पिछले सात वर्षों से उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद में प्राध्यापिका है। **स्थायी पता**—हिन्दी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद।

तुम दृगों में छा रहे हो !

आज आखिर दूर निज से, तुम्हें कैसे मान लूँ मै !

चाँद छिप जाता गगन में
शान्त रजनी को सताने
मौन नैनों की तृषा को–
स्वप्न आ जाते बुझाने
स्वप्न के संसार को पर, सत्य कैसे मान लूं मैं !
आज आखिर दूर निज से, तुम्हें कैसे मान लूँ मैं !

प्यार में बन याद के घन
तुम दृगों में छा रहे हो
प्राण चातक-से निरखने–
दूर ही मँडरा रहे हो
इस सघन घन को भला, जल-धार कैसे मान लूँ मैं !
आज आखिर दूर निज से, तुम्हें कैसे मान लूँ मैं !

इस निशा के पन्थ को यह
चाँद देखो तक रहा है
काल के सघर्ष में–
विश्वास मेरा थक रहा है
तुम सदा मेरे रहोगे, सहज कैसे जान लूँ मै !
आज आखिर दूर निज से, तुम्हें कैसे मान लूँ मैं !

जन्म-स्थान— बिजनौर।
जन्म-तिथि— सन् १९३१।
शिक्षा—विदुषी। **विशेष**—
आपकी रचनाएँ मुरादाबाद,
काशीपुर तथा गढ़वाल आदि की



ज्ञानवती सकसेना

स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं में
प्रकाशित होती रहती हैं। पति
के द्वारा इस दिशा में विशेष
प्रोत्साहन मिला है। **वर्तमान
पता**—५५ गली भाटान, बरेली
(उत्तर प्रदेश)।

खाली गागर भर जाती है !

ऊधो ! पनघट तक जाने में, मेरी राह बिसर जाती है !
पता नहीं, कब इन नयनों से खाली गागर भर जाती है ?

कौन बताए राह यहाँ की, खोई है हर एक गुजरिया,
इतना याद मुझे आता है, शायद है यह प्रेम-नगरिया ;
जो इस नगरी का वासी है, वह घर में भी खो जाता है,
यमुना के तट पर भी जाकर, प्यासी है हर एक डगरिया ;
जितना ही मन को समझाऊँ, उतनी पीर उभर आती है !
ऊधो ! पनघट तक जाने में, मेरी राह बिसर जाती है !

जब-जब 'पी' की टेर लगाई, कोयल भी दे गई दुहाई,
चाँद छिपाकर मुखड़ा रोया, रजनीगन्धा भी शरमाई ;
मुझको भास हुआ तब ऐसा, मथुरा में वंशी रोई है,
चुभने लगीं पलक में मुधियाँ, रात-रात-भर नींद न आई ;
गीली पलकों के आँचल में, सारी रात गुज़र जाती है !
पता नहीं, कब इन नयनों से खाली गागर भर जाती है ?

ऊधो ! सुनते है मधुवन से, इतनी मथुरा दूर नहीं है,
पथ पर ही थक जाए राधा, ऐसी तो मजबूर नहीं है ;
लेकिन मुझको तो वंशी के स्वर पर ही चलना आता है,
जो बढ जाए लक्ष्य बिना ही, ऐसा कोई शूर नहीं है ;
अब तो पायल भी देहरी पर आकर रोज बिखर जाती है !
ऊधो ! पनघट तक जाने में, मेरी राह बिसर जाती है !

चाहे मैं रो-रो मर जाऊँ, उनके द्वार नहीं डोलूंगी
और रुक्मिणी-सम्मुख अपने प्रिय का प्यार नहीं खोलूँगी
उनके छुटते हुए प्यार पर, मेरे कारण उठें उँगलियाँ
राजा हैं, लांछन लग जाए, ऐसे वचन नहीं बोलूँगी
मेरा मन अस्थिर है फिर भी, उनकी बात सँवर जाती है
पता नहीं कब इन नयनों से, खाली गागर भर जाती है
ऊधो ! पनघट तक जाने में, मेरी राह बिसर जाती है



ज्ञानवती सकसेना 'किरण'

जन्म - स्थान— उदयपुर (राजस्थान)। **जन्म-तिथि**— १५ अगस्त, १९१८। **शिक्षा**— विशारद, साहित्य-रत्न, साहित्यालंकार, एम० ए०। **विशेष**—६ वर्ष की आयु में ही पिता का देहावसान। विवाह के उपरान्त ही अपने अध्यवसाय से शिक्षा प्राप्त की। सन् १९६१ में ४३ वर्ष की आयु में विक्रम-विश्वविद्यालय से एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। पति श्री ब्रजभूषणलाल सकसेना आजकल रीवाँ (मध्य प्रदेश) में सिविल जज हैं। इनकी रचनाएँ प्रायः सभी प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। **वर्तमान पता**—द्वारा श्री ब्रजभूषणलाल सकसेना एडीशनल डिस्ट्रिक्ट जज, रीवाँ, (मध्य प्रदेश)।

मुझसे मेरे गान न छीनो !

जीने की है साध न मुझको,
मरने के अरमान न छीनो !
मुझसे मेरे गान न छीनो !

मैंने अपनी जीवन नौका,
बीच भँवर में ला डाली है,
मैंने अपनी निर्बल आशा,
दुख की झंझा में पाली है;
नयनों के निर्झर से सिंचित,
अधरों की मुसकान न छीनो !
मुझसे मेरे गान न छीनो !

संघर्षण का निर्मम दीपक,
मरो मंजिल का तम हरता,
सहज सरल विश्वास तुम्हारा,
मेरी पीड़ा को कम करता;
दर्शन मत दो, पर मन्दिर की-
देहरी की पहचान न छीनो :
मुझसे मेरे गान न छीनो !

वे मधुरिम दो बोल तुम्हारे,
मेरे मानस में आ छाते;

रीते-रीते नयनों में तब,
रिमझिम सावन-घन भर आते ;
जीर्ण कुटी को झंकृत करती—
उर-वीणा की तान न छीनो !
मुझसे मेरे गान न छीनो !